‘रत्न कलश’

गागर में सागर

‘दुर्लभ’

साकार मुरली

प्वाइन्टस्

भगवानुवाच:– महारथियों की बुद्धि में प्वाइंटस् (Points) होंगी। लिखते रहें तो अच्छी-अच्छी प्वाइंटस् अलग करते रहें। *प्वाइंटस् का वजन करें*, परन्तु ऐसी मेहनत कोई करता ही नहीं। मुश्किल कोई नोट्स रखते होंगे और अच्छी प्वाइंटस् निकाल अलग रखते होंगे। (27-05-2014)

गुह्यता:– बाबा के अखुट महावाक्यों की वैल्यु वही समझ सकते हैं जिन्होंने इन्हें धारण किया हो। तभी तो बाबा कहते 7 दिन के बच्चे भी 50 साल वालों से आगे जा सकते हैं। खेल सारा धारणा का है।

- सत्य प्रताड़ित हो सकता है पराजित नहीं। मगर सत्य को प्रताड़ित करने वाले सदाकाल के लिये पराजित हो जाते हैं।

- बाबा से कनैक्शन जोड़ने के रास्ते खोजो। रूट डायवर्ट हो रहा हो तो रास्ता बदल लो और बाबा की राह पकड़ लो।

दो शब्द,

इस विश्व में हमसे अधिक भाग्यवान और कोई नहीं क्योंकि हमारा उठना-बैठना, खाना-पीना, मिलना-जुलना, घूमना-फिरना, और दिल की बातों की लेन-देन करना किसके साथ है! स्वयं सर्वशक्तिवान के साथ। जो संसार का मालिक है, वह इस समय हमारा हमसफर है, हमउमर है, हमजिन्स है। वह इस समय हमें सर्व प्रकार के दुर्गुणों, दोषों वा कलह-कलेशों से मुक्त कर, सम्पूर्ण निर्दोष अर्थात् बेदाग हीरा बनाने के लिऐ इस धरा पर आया हुआ है। बिलखाती हुई मानवता को ढाढ़स बंधाकर उसके हृदय को सच्चा सहारा देना ही उसका मुख्य कर्त्तव्य है।

ज्ञान सागर में डुबकी लगाना अर्थात् ज्ञान स्नान का आनन्द लेना हम सभी ब्राह्मणों का निज स्वभाव बन गया है। यदि एक दिन भी हम इन मुरली रूपी लहरों से 'अछूते' रह जायें तो सारा दिन असहजता, खालीपन और कहीं इक हल्की-सी बेचैनी हमें घेरे रखती है परन्तु हममें से अनेक भाई-बहनें इन उन्मुक्त लहरों की उठापटक देखने वा गर्जनाद सुनने व उसकी विवेचना करने में इतने व्यस्त हो जाते हैं जो उनके ध्यान में ही नहीं रह पाता कि *इन्हीं लहरों के मध्य यदा-कदा कुछ ऐसे मोती, कुछ ऐसे अमूल्य व अप्राप्य रत्न भी आते हैं, जिन्हें एक बार पकड़ने में अगर चूक हो जाये तो पुनः उनकी झलक और भनक पाने के लिऐ वर्षों तक का इन्तजार करना पड़ जाता है*। बाबा के इन अखुट महावाक्यों की वैल्यु को वही समझ सकते हैं जिन्होंने उनको धारण किया हो। ऐसे ही आप मस्तमौला, अखुट प्रेममग्न, व प्रेमातुर मीराओं वा सनत कुमारों को ध्यान में रखते हुऐ बाबा की प्रेरणानुसार मुझ आत्मा ने सागर तट (ज्ञान सागर) पर अपनी एक कुटिया बनाई और उन बेशकीमती मोतियों व रत्नों को पकड़ने, सहेजने और पिरोने की धुन लगाई, फिर कहीं जाकर रत्नों की इक माला बन पाई। आज मैं उसी हार को इस बेहद विश्व नाटक की सर्वात्माओं के कल्याणार्थ उपहार स्वरूप आप सबके समक्ष रख रहा हूँ अर्थात् इस दिव्य, अद्वितीय मोतियों से बनी माला को सुखों और शक्तियों के सागर पिता शिव के स्मरण व अपने निश्छल, निर्मल व निर्दोष मन के साथ मानवता को सेवार्थ समर्पित कर रहा हूँ।

यह अमूल्य व अप्राप्य दुर्लभ रत्न आपके जीवन में कदम-कदम पर आने वाले विघ्नों, बाधाओं, विपत्तियों अथवा कलह-क्लेशों को नष्ट करने में रामबाण साबित होंगे। मन को हल्का, चित्त को शीतल वा हृदय को असीम शान्ति से भरने के लिऐ उपरोक्त रत्नों की कुछ पंक्तियों पर

नजर भर घुमा लेना ही काफी होगा। इन रत्नों के निरन्तर श्रवण और पाठन से भय, चिंता, तनाव और घबराहट जैसी असाध्य बीमारियों पर भी सहज ही विजय कर प्राप्त सकेंगे और जीवन की हर डगर सहज, सुगम और सुखदायी होती जायेगी। ऐसा प्रतीत होगा जैसे आज के ज्ञान मोती द्वारा बाबा मुझे जो गहरी शिक्षा देना चाहते हैं वह आज मुझे प्राप्त हो गई है।

उपरोक्त 'रत्न कलश – गागर में सागर' पुस्तिका आपके हाथों में देखकर मैं जिस अवर्णनीय सुख के सरोवर में गोते लगा रहा हूँ, मुझे यकीन है कि इसके श्रवण अथवा पठन–पाठन के पश्चात् आप भी इस अवर्णनीय सुख से अछूते न रह पायेंगे, ऐसा मेरा मुझमें और इस दिव्य प्रति में सम्पूर्ण विश्वास है.....

.....ईश्वरीय सेवार्थ

प्रतिदिन साकार मुरली दुर्लभ प्वाइन्टस् (वर्ष-2014)

01-01-2014
ऐसा कोई खाली दिन नहीं जो विकर्म न होते हों। एक मुख्य विकर्म यह करते हो जो बाप के फरमान को ही भूल जाते हो। बाप फरमान करते हैं मनमनाभव, अपने को आत्मा समझो। यह फरमान मानते नहीं हैं तो जरूर विकर्म ही होगा। बहुत पाप हो जाते हैं। बाप का फरमान बहुत सहज भी है तो बहुत कड़ा है। कितना भी माथा मारें फिर भी भूल जायेंगे क्योंकि आधाकल्प का देह-अभिमान है ना। 5 मिनट भी यथार्थ रीति याद में बैठ नहीं सकते। अगर सारा दिन याद में रहें फिर तो कर्मातीत अवस्था हो जाये।
गुह्यता - बाप के फरमान की अवज्ञा से बड़ा पापकर्म तो कोई होता ही नही। बाबा ने आज्ञा की है बच्चे मनमनाभव अर्थात् मन को एक बाप की याद में स्थित करके बैठ जाओ। फरमान भूलने का कारण है स्वयं को देही अर्थात् आत्मा नहीं समझते।

02-01-2014
तुम ब्राह्मण बच्चे बहुत-बहुत valuable हो, जो शिवबाबा की बैंक में सेफ्टी में बैठे हो। तुम बाबा की सेफ में रहकर अमर बनते हो। तुम काल पर विजय पहन रहे हो। शिवबाबा के बने तो सेफ हो गये, बाकी ऊँच पद पाने के लिऐ पुरूषार्थ करना है।
गुह्यता - दुनिया में आज सबसे बड़े से बड़ा डर है सेफ्टी का। बाबा ने अपना बनाकर निर्भय, निश्चिंत कर दिया। आवश्यकता है तो बस इस ओरे में स्वयं को सदा बनाये रखना। पैर बाहर निकाला तो गये माया के चंगुल में (हो गई सीता चोरी या हो गई श्रीमत की अवज्ञा, काली का पैर शंकर के सीने पर)।

03-01-2014
अच्छी तरह से समझाना है। इस समय तो तुमको इतना समय बात करने नहीं देते क्योंकि अभी उनके सुनने का समय नहीं आया है। सुनने का भी सौभाग्य चाहिए। तुम पदमापद्म भाग्यशाली बच्चे ही बाप से **सुनने का हकदार** बनते हो।बाप बिगर और कोई सुना न सके। बाप तुम बच्चों को ही सुनाते हैं।
गुह्यता - तुम हकदार हो। इससे बड़ा नशा और कोई हो सकता है क्या!!

04-01-2014
बाप कहते हैं तुम तो नाफरमानबरदार हो। श्रीमत देता हूँ, बाप को याद करो तो भूल जाते हो। यह तो कमजोरी कहेंगे। माया एकदम नाक से पकड़कर,

डसकर सिर पर बैठ जाती है। यह युद्ध का मैदान है ना।
गुह्यता - खुद की कमजोरी को पहचान कर, बाप की याद को आत्मा के लिये आक्सीजन (श्वांसों-श्वॉस चाहिये ही) बना दो, अन्यथा माया का प्रहार तो होगा ही।

05-01-2014 - अव्यक्त मुरली

06-01-2014
मुरली सुनना कोई याद नहीं है, यह तो धन कमाते हो। याद में तो सुनना बन्द हो जाता है। कई बच्चे लिख देते हैं याद में मुरली सुनी, परन्तु यह याद थोड़ेही है।
गुह्यता - यथार्थ याद है ही बिन्दी बाप और बिन्दी मैं आत्मा, बस।।

07-01-2014
बाबा कहते हैं हुण्डी भरती जायेगी। कल्प पहले मिसल ही तुम खर्चा करेंगे। कम-ज्यादा ड्रामा करने नहीं देगा। ड्रामा पर बाबा का अटल निश्चय है। जो पास्ट हुआ ड्रामा। ऐसे नहीं कहना चाहिए ऐसा होता था, यह नहीं करते थे। अभी वह अवस्था आई नहीं है। कुछ न कुछ मुख से निकल जाता है, फिर फील होता है।
गुह्यता - जितनी पॉवरफुल अवस्था, उतना ही शब्दों वा संकल्पों पर कण्ट्रोल स्वतः आता जाता है। जब तक वह अवस्था बने तब तक कुछ ना कुछ अयथार्थ निकल ही जाता है।

08-01-2014
बाप समझाते हैं मीठे-मीठे बच्चों, अब कुमार कुमारी की स्टेज से भी ऊपर आओ। जैसे पहले शरीर में आये फिर निकलकर जाना है। मेहनत करनी है। अगर ऊँच पद पाने चाहते हो तो और कोई की स्मृति न आये।
गुह्यता - बाबा समझाते हैं देवताई जीवन में देह धारण करके भी देह का लेशमात्र भी भान नहीं था। ना ही कोई सम्बन्ध-सम्पर्क का भान था। एकदम डिटैच होकर आये थे अब फिर वैसे ही डिटैच बनकर वापिस जाना है।

09-01-2014
मीठे लाडले बच्चे, अब तुम्हारे ऊपर बृहस्पति की दशा है। तुम्हें किसी को भी अपनी जन्मपत्री आदि दिखाने की जरूरत नहीं। बाबा सब कुछ बता देते हैं।

गुह्यता - बाबा का बनना अर्थात् नया जन्म, नई जन्मपत्री... माना ऊँचे ते ऊँचा भाग्य, बृहस्पति की दशा। पुराने जन्म की पत्री आदि सब स्वाहा।

10-01-2014
इनका रथ बीमार पड़ जाता है तो मैं इनमें बैठ मुरली लिखता हूँ। मुख से तो बोल नहीं सकते तो मैं लिख देता हूँ, ताकि बच्चों के लिऐ मुरली मिस न हो तो मैं भी सर्विस पर हूँ ना।
गुह्यता - जितना बाबा हमारे प्रति सजग रहकर सेवा करते हैं क्या हम पढ़ाई के प्रति उतने ही जागरूक हैं??? (Check yourself)

11-01-2014
तमोप्रधान से सतोप्रधान इस जन्म में ही बनना है।
गुह्यता - भविष्य की चिंता छोड़ आज पर फोकस रहना चाहिये। वर्तमान में ही देवता बनना है मुझे।

11-01-2014
जो बहुत समय के बिछुड़े हुये हैं उन्हों से ही बाप बात करते हैं, पढ़ाते हैं।..... बाप की दृष्टि हमेशा आत्माओं पर ही रहती है।
गुह्यता - क्या मैं भी बाप समान सिर्फ आत्मा को ही देखता हूँ या कहने मात्र तक है??

12-01-2014 - अव्यक्त मुरली

13-01-2014
मैं तो हूँ सतगुरू, परन्तु गुप्त वेष में। वह हैं भक्ति के गुरू, मैं हूँ ज्ञान मार्ग का।..... बुद्धि हद से निकल बेहद में चली गयी है।
गुह्यता - हमारा सब कुछ बेहद है, हद में देखना माना बाबा को छोड़ रावण की शरण लेना।

14-01-2014
धन-दौलत, मकान, बच्चों आदि में बुद्धि गई तो कर्मातीत अवस्था को पा नहीं सकेंगे।
गुह्यता-रावण की प्रापर्टी में बुद्धि फँसाना माना बाप के वर्से में घाटा डालना। फिर अन्त समय उसी में बुद्धि जायेगी और डिटैच नहीं हो सकेंगे।

15-01-2014
टावर ऑफ पीस, सुख का टावर, सबका टावर होता है, शान्ति का टावर है मूलवतन, जहाँ हम आत्मायें रहती हैं। उसको कहेंगे टावर ऑफ साइलेन्स। फिर सतयुग में है टावर ऑफ सुख, टावर ऑफ पीस, प्रासपर्टी।..... सब बातें बाप ही समझाते हैं, टीचर हो तो ऐसा हो। वह है टावर ऑफ नॉलेज... यह फिर है टावर ऑफ दुःखधाम।

गुह्यता - Realise strength of each and every Tower by Yoga.

16-01-2014
ज्ञान और योग पूरा है तो कोई भी बेइज्जती नहीं कर सकते।

गुह्यता - सेकण्ड में टचिंग होगी और सेफ हो जायेंगे।

17-01-2014
तुमको भाषण के लिऐ दो मिनट मिलें तो भी बहुत हैं। एक मिनट, एक सेकण्ड मिले तो भी बहुत है। जिनको कल्प पहले तीर लगा होगा उनको ही लगेगा, कोई बड़ी बात नही। सिर्फ पैगाम देना है।

गुह्यता - दृष्टि से पैगाम देने की सेवा करनी पड़ेगी। आपकी अवस्था ऐसी सेवा करेगी।

18-01-2014
सोलकान्सेस हो रहना ही सच्चा-सच्चा अन्तर्मुखी बनना है।..... अन्दर जो आत्मा है उनको सब कुछ बाप से ही सुनना है।..... याद में रहना ही मदद करना है क्योंकि याद की यात्रा माना शान्ति की यात्रा।

गुह्यता - याद में रहना माना वायुमण्डल बनाने में मददगार बनना।

19-01-2014 - अव्यक्त मुरली

20-01-2014
जितने देवी-देवता सतयुग के वा त्रेता के हैं, वह सब गुप्त यहाँ ही बैठे हैं फिर प्रत्यक्ष हो जायेंगे।

गुह्यता - जब इसी जन्म में देवताई चलन हो जायेगी तो प्रत्यक्षता हो जायेगी।

21-01-2014
माया के बन जाते हैं, उनको कहा जाता है ट्रेटर, जो एक राजधानी से निकल दूसरे के जाकर बनते हैं।

गुह्यता - कर्ण का मिसाल। दुर्योधन द्वारा भीख में मिली अंग देश की राजाई अर्थात् देहभान, पाण्डव से कौरव बनना। ज्येष्ठ पुत्र होते भी ना पाण्डव रहा ना कौरव दल में ही शामिल हो पाया।

21-01-2014
यह कोई सत्संग नहीं है। महन्त, ब्राह्मण वा कोई सन्यासी सामने नहीं बैठा है। डर की कोई बात नहीं कि स्वामी नाराज ना हो जायें।
गुह्यता - बाप बैठा है कोई अहंकारी गुरू, महात्मा नहीं जो नाराज होवे और श्राप आदि देवे।

22-01-2014
बाप को यहाँ की कोई बात याद ही नहीं। बाबा याद करते हैं वहाँ की बातें। बाबा और राजाई जैसेकि दर पर खड़े हैं।
गुह्यता - जब मर गये तो याद रहा ही कहाँ। याद है अर्थात् पुरानी दुनिया से अब तक नहीं मरे हो।

23-01-2014
ऐसे नहीं कि शिवबाबा का बच्चा बना तो देवाला नहीं मारेंगे। पास्ट का कर्म हैं तो देवाला मारते हैं। ज्ञान में आने से भी देवाला मार देते हैं, इसमें ज्ञान का कोई तैल्लुक नहीं।
गुह्यता - पुराना जो कर्जा है, हिसाब है वह तो चुकाना ही है। ज्ञान में आने से तो और ही तेजी से चुक्तू होगा। बस बाबा को याद में साथ रखो।

23-01-2014
बाबा को शुरू में बहुत मजा आया था। वहाँ से जब निकला तो गीत बनाया-अल्फ को अल्लाह मिला, बे को मिली बादशाही..... श्रीकृष्ण का, चतुर्भुज विष्णु का साक्षात्कार हुआ समझा द्वारिका का बादशाह बनूँगा।
गुह्यता - नशा - Intoxication.

24-01-2014
बाप समझाते हैं कि ज्ञान बहुत ऊँचा है। राजाई स्थापन होती है। रंक से लेकर राव बनते हैं। राव थोड़े बनते हैं। बाकी रंक नम्बरवार होते हैं। लास्ट नम्बर वाले की बुद्धि में कभी कोई बात बैठ न सके।
गुह्यता - राव बनना होता हैं। रंक तो बने बनाये हैं ही। सो राव बनना है तो पुरूषार्थ के सिवाय कुछ याद न रहे। आठ शक्तियों को धारण करने वाले राव बनते हैं।

25-01-2014
माला का दाना बनने वालों को कितनी अच्छी फीलिंग चाहिये।
गुह्यता - बाप के साथ के स्पष्ट अनुभव चाहियें। (Visions नहीं)

25-01-2014
हैं तो पुरूष भी बहुत परन्तु माता जन्म देती है तो उनको पुरूष से इजाफा ज्यादा मिलता है। स्वर्ग में तो नम्बरवार सब जायेंगे। कोई दो जन्म मेल के भी बन सकते हैं, हिसाब-किताब, जो ड्रामा में नूँध है, वही होता है।
गुह्यता - ड्रामा पर अटल निश्चय और अडोल अवस्था चाहिये। लास्ट में सब एकदम एक्यूरेट हो जायेगा।

26-01-2014 - अव्यक्त मुरली

27-01-2014
वेश्यायें, गणिकायें भी ऐसी-ऐसी आयेंगी जो तुम से भी तीखी हो जायेंगी। बड़े फर्स्टक्लास गीत गायेंगी, जो सुनते ही खुशी का पारा चढ़ जायेगा। जब ऐसे गिरे हुऐ को तुम समझाकर श्रेष्ठ बनाओ तब तुम्हारा नाम भी बहुत ऊँचा होगा।
गुह्यता - योग का उच्चतम लेवल चाहिऐ ऐसी सेवा अर्थ, सिवाय आत्मा के कुछ दिखाई ही न दे। पवित्रता की धारणा की पराकाष्ठा हो, चमड़ी का भान तक न हो तब टिक सकेंगे। आपकी योगी तू ज्ञानी अवस्था ही सेवा करायेगी, आपकी पवित्र दृष्टि उनकी वृत्ति। परिवर्तन करेगी।

28-01-2014
भगवान के बच्चे पढ़ते थे फिर भाग गये फिर कुछ समझ में आ जाता है तो फिर पढ़ने लग जाते हैं। फिर योग में अच्छी रीति रहें तो ऊँच पद पा सकते हैं। समझेंगे बरोबर हमने टाइम बहुत वेस्ट किया जो ऐसा स्कूल छोड़ दिया।
गुह्यता - अगर बाहर का कोई हिसाब रह गया है तो पूरा करने जाना पड़ता है। बुद्धि बाबा से ऐसे जुड़ जाये कि कोई हिसाब खींच ना सके। एक बार जाकर वापिस गैलप करना माना टाइम, एनर्जी, अवस्था सब पीछे छोड़ फिर से उसके लिये मेहनत करना। तो ऐसा काम करें ही क्यों जो पश्चाताप करना पड़े।

29-01-2014
तुम्हारी याद की यात्रा भी अभी पूरी नहीं हुई है। बहुत कुछ याद रहता है फिर

पक्का होता जायेगा तो कुछ भी याद नहीं आयेगा। एकदम आत्मा अशरीरी आई, अशरीरी जाना है।
गुह्यता- अशरीरी बन जाना माना ही सब भूल जाना।

30-01-2014
सबसे बड़ा पुण्य है - बाप को याद करना।.....
गुह्यता - बाप की याद में रहने से पाप कर्म करने बन्द हो जाते हैं इसीलिऐ इससे बड़ा पुण्य कर्म कोई हो ही नहीं सकता।

30-01-2014
हम कहते हैं बाबा आप बांधेले हो ड्रामा में, आपको आना ही पड़े, पतित दुनिया और पतित शरीर में।
गुह्यता - निर्बन्धन आत्मा बच्चों के प्यार में कैसे-कैसे रोल निभा लेती है और हम बच्चे... क्या हम वास्तव में बाबा की इच्छा पूरी कर रहे हैं???

31-01-2014
जो इन ऑंखों से देख रहे हो उन सबका विनाश होना है। बाकी जो दिव्य दृष्टि से देखते हो उनकी स्थापना हो रही है।
गुह्यता - जो दिख रहा है वह समाप्त हो, जो नहीं दिख रहा उसकी स्थापना हो जायेगी।

01-02-2014
सतयुग में कर्म अकर्म होते हैं, वहॉं कर्मों का खाता होता नहीं।
गुह्यता - जितना यहॉं संगम पर पुरूषार्थ करके जमा किया वह सब धीरे-धीरे सतयुग-त्रेता में मिलेगा और खर्च हो जायेगा। पाप कर्म वहॉं होते नहीं जो कोई खाता बने क्योंकि दुनिया ही निर्विकारी है। फिर द्वापर से कमाने और खाने का फार्मूला चल पड़ेगा, लेकिन वहॉं बाप की श्रीमत तो होती नहीं इसलिये किये जाने वाले सभी कर्म विकर्मों का खाता बनाते जाते हैं और मनुष्यात्मायें गिरते-गिरते कौड़ी मिसल शूद्र बन जाती हैं।

02-02-2014 - अव्यक्त मुरली

03-02-2014
अगर गवर्मेन्ट न माने तो भक्तों, साधुओं, गुरूओं आदि की स्टैम्प भी न बनाये। जैसी है गवर्मेन्ट, ऐसी है रैयत (प्रजा)।

गुह्यता - राम राजा, राम प्रजा, राम साहूकार है.... भक्त राजा, भक्त प्रजा, भक्त ही साहूकार हैं..... अर्थात् जैसा राजा वैसी रिवायत। जैसे संस्कारों वाली आत्मायें पॉवर में रहती हैं, वे अपनी रिवायत अर्थात् अपने कायदे कानून चलाती हैं। और फिर प्रजा भी उसी रूप में ढल जाती है।

04-02-2014
क्राइस्ट को पूजने वाले क्रिश्चियन ठहरे, बुद्ध को पूजने वाले बौद्धी ठहरे, देवताओं को पूजने वाले देवता ठहरे। फिर अपने को हिन्दू क्यों कहलाते हो?
गुह्यता - अपने सच्चे धर्म को भूलने वाले धर्मभ्रष्ट होने के कारण स्वयं को हिन्दू कहलाने लगे।

05-02-2014
सतोप्रधान आत्मा अपवित्र आत्माओं को खींचती है क्योंकि आत्मा पवित्र है। भल पुनर्जन्म में आते हैं तो भी पवित्र होने के कारण खींचते हैं। **जितनी पवित्रता की जास्ती ताकत, उतने ज्यादा फालोअर्स**। यह बाप तो है ही एवर प्योर और है भी गुप्त। डबल है ना, ताकत सारी उनकी है। इनकी (ब्रह्मा की) नहीं। शुरू में भी तुमको उसने कशिश की। इस ब्रह्मा ने नही क्योंकि वह तो एवरप्योर है। तुम कोई इनके पिछाड़ी नहीं भागे।..... मैंने तुमको खींचा।
गुह्यता - पवित्रता मूल है, आधार है। ब्रह्मचर्य की पवित्रता तो बाद की बात है पहले सच्ची दिल से बाप के बनो। अगर अन्दर में पवित्रता नहीं, बाप से सच्चा सम्बन्ध नहीं जुटा तो ब्रह्मचर्य भी ठहर नहीं सकता। ईमानदारी से एक बाप के बन जाओ तो ब्रह्मचर्य की धारणा तो चुटकी बजाने भर हो जायेगी। ऐसी सतोप्रधानता अपवित्र आत्माओं को कशिश करती है। बाबा कहते मैं तुम बच्चों के लिये ही अवतरित होता हूँ। इससे बड़ा सच दुनिया में कोई होता नहीं इसलिये हम तमोप्रधान अपवित्र आत्मायें बाबा के पास खिंची चली आती हैं। जब हम सतोप्रधान बनने लगते हैं तो हम आत्माओं से भी अन्य आत्माओं को कशिश होने लगती है नम्बरवार।।

06-02-2014
कट (जंक) उतारने के लिये बाप को याद करो। न याद करने की ऐसी कौन-सी मुसीबत आती है, कारण बताओ क्या बाप को याद करना डिफिकल्ट है?
गुह्यता - है कोई जवाब???

07-02-2014
बड़ा भारी रिवोल्यूशन हो जायेगा। जिन्हों के बड़े-बड़े अड्डे बने हुऐ हैं, सब हिलने लगेंगे। भक्ति का तख्त हिलने लगेगा।
गुह्यता - सब यूज टू (Use to) हो गये हैं। एक से नहीं मिला भागे अन्य के पिछाड़ी, लास्ट में सब अड्डे हिलेंगे फिर बाबा के पिछाड़ी भागेंगे।

08-02-2014
किसको स्वप्न में भी नहीं होगा, सो भी जो एकदम तमोप्रधान पाप आत्मा, अजामिल जैसे विकारी बने हैं वही फिर सतोप्रधान पावन बनते हैं।
गुह्यता - अजामिल जैसे पापी ही पुण्यात्मा बनते हैं। वे तो न ज्यादा पापी ही बनते, ना ही उच्च दर्जे के पुण्यात्मा बनते।

09-02-2014 - अव्यक्त मुरली

10-02-2014
स्वदर्शन चक्र धारण कर अपने पापों को भस्म करना है। ज्ञान को धारण कर बाप को याद करो।.... ऐसे नहीं बाबा दृष्टि बैठ देंगे कि इनके पाप कट जायें। बाप बैठ यह धन्धा नहीं करते।
गुह्यता - हमारी सिर्फ एक ही जिम्मेवारी है, बाबा को याद कर स्वयं द्वारा किये गये पाप कर्मों को भस्म करने की। इसमें बाबा मदद तो देते हैं मगर **याद करेंगे तो ही मदद मिलेगी**। याद का पहला कदम नहीं तो मदद भी नहीं। सो भी तब जब याद ज्वाला स्वरूप हो। स्वदर्शन चक्रधारी बनना माना अपना अनादि सो आदि स्वरूप स्मृति में रहेगा तो पाप कर्मों से स्वतः ही घृणा जागेगी और पुण्यकर्मों की उत्कण्ठा होगी।।

11-02-2014
कोई बहुत मार्क्स से पास होते हैं कोई कम। सौ मार्क्स तो किसी की होती नहीं। 100 हैं ही एक बाप की। वह तो कोई बन न सके।
गुह्यता - कम्पलीट तो एक बाबा ही हैं। बाकी सब तो नम्बरवार उन्नति को प्राप्त करते हैं।

12-02-2014
आदि सनातन देवी-देवता के बदले आदि सनातन हिन्दू कह दिया है। आदि सनातन अक्षर भी रखा है। सिर्फ देवता बदली कर हिन्दू रख दिया है। उस समय इस्लामी आये तो उन बाहर वालों ने आकर हिन्दू धर्म नाम रख दिया।
गुह्यता - हिन्दुत्व का स्पष्टीकरण।

13-02-2014
औरों के सुख का टाइम तो अभी आया है, जबकि मौत सामने खड़ा है।
गुह्यता - इत्तू सा सुख। दूसरे की भरी थाली देखकर अपनी झोली भरने का गोल्डन पीरियड (Golden Period) वेस्ट मत करो। उनका गँवाना, हमारा कमाना... उधर पश्चाताप, इधर जय-जयकार।

14-02-2014
बाप है ज्ञान का सागर, उनकी भेंट में फिर हैं अज्ञान का सागर। आधा कल्प है ज्ञान, आधा कल्प है अज्ञान। ज्ञान का किसको पता ही नहीं है। ज्ञान कहा जाता है रचता द्वारा रचना को जानना।
गुह्यता - सही ज्ञान अर्थात् समझ तो एक बाबा ही देते हैं। बाकी सब तो अन्दाजा लगाते हैं। सही ज्ञान है रचना की यथार्थ पहचान माना बिन्दी का ज्ञान। बिन्दी का ज्ञान मिलने से सब सही समझ में आने लगता है। मनुष्य बिन्दी को भूलने कारण ही ब्रह्म महतत्व तक पहुँचकर भी उसको जान नहीं पाते और रहने के स्थान को ही परमात्मा समझ दिशाहीन बनते जाते हैं। आदि की पहचान गलत तो बाकी सारा ज्ञान ही गलत हो जाता है। फिर बाबा आकर बिन्दी की यथार्थ पहचान देकर सब सही कर देते हैं। सो उसे ज्ञान का सागर कहकर उसकी महिमा करते हैं।

15-02-2014
सेकण्ड में बाप का वर्सा तो ले सकते हो, बाकी लायक बनने में टाइम लगता है।
गुह्यता - काबिल तो सब हैं, पुरूषार्थ से लायक बनकर सिद्ध करो तो पद सुनिश्चित हो।

16-02-2014 - अव्यक्त मुरली

17-02-2014
ज्ञान सारी बीमारी को बाहर निकालता है। भक्ति सारी बीमारी को नहीं निकालती।
गुह्यता - जब सत्य ज्ञान मिलता है तो हम गलतियों को दिल की सच्चाई-सफाई से स्वीकार कर उनको सुधारने का पुरूषार्थ करने लग पड़ते हैं और भक्ति में हम कमी-कमजोरियों को दबाकर, छिपाकर आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं। हम यह जानते ही नहीं कि हम जो भी करते हैं वो पाप कर्म हैं वा पाप का खाता बढ़ाते जाते हैं।।

18-02-2014
जितना वहाँ ठहरना होगा उतना वहाँ ठहरेंगे। जितना पीछे पार्ट होगा तो पीछे शरीर धारण कर पार्ट बजायेंगे। कोई तो 100 वर्ष कम 5000 वर्ष भी शान्तिधाम में रहेंगे। पिछाड़ी को आयेंगे।
गुह्यता - ऐसा जीवन किस काम का! मच्छर सदृश्य आज जन्मा कल मरा।

19-02-2014
अब तुमको शिवबाबा के मुरीद बनना है। कोई भी देहधारियों का मुरीद नहीं बनना है।
गुह्यता - मुरीद अर्थात् हनुमान बनना, जिसे हर कदम में एक राम ही दिखाई देते थे। परम आत्मा द्वारा ही दी हुई चीज को स्वीकार करना चाहे सच्चे मोतियों की माला ही क्यों न हो। जिस वस्तु से बाबा की भासना न आये उसे सहज मिलते भी अंगीकार न करना।

20-02-2014
तुम्हारे ज्ञान के बाण बहुत अच्छे हैं परन्तु उसमें जौहर चाहिऐ।
गुह्यता - याद का जौहर। आप बाबा की याद में ऐसे डूबे हों जो शब्द भले आपके मुख से उच्चारे जा रहे हो पर अनुभूति ऐसी हो कि बाबा सुना रहे हैं।

21-02-2014
सच्ची आकाशवाणी तो यह है जो बाप ऊपर से आकर इस गऊमुख द्वारा सुनाते हैं। इस मुख द्वारा वाणी निकलती है।
गुह्यता - मुरलियों में उच्चारे गये महावाक्य ही वास्तव में सच्ची-सच्ची आकाशवाणी है, जो शिवबाबा ब्रह्मा मुख द्वारा हमें सुनाते हैं। इस मुख द्वारा आकाश से उतरकर शिवबाबा वाणी सुनाते हैं जिसे भक्तिमार्ग में आकाशवाणी कहते हैं।

22-02-2014
सब क्रिश्चियन लोग हैं, वही यूरोपवासी यादव ठहरे। तो एक है उन्हों की सभा। उनका विनाश हुआ, आपस में लड़ मरे। उसमें सारा यूरोप आ गया। उसमें इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन सब आ जाते हैं। यहाँ फिर है कौरव और पाण्डव। कौरव भी विनाश को प्राप्त हुऐ और विजय पाण्डवों की हुई।
गुह्यता - सारी दुनिया अर्थात् परमात्मा से विपरीत बुद्धि साइन्स घमण्डी साइन्स और तकनीक पर आधारित यूरोपवासी। कौरवों और पाण्डवों द्वारा भारत में सिविलवार द्वारा तीव्र गति से मारकाट मचेगी और गुह्य रूप से

आत्माओं के कर्मों का खाता चुक्तू होगा। अन्त में परमात्मा से प्रीत बुद्धि पाण्डवों की विजय होकर परिवर्तन की प्रक्रिया पूरी हो जायेगी।

23-02-2014 - अव्यक्त मुरली

24-02-2014
यह अनादि अविनाशी बना बनाया ड्रामा है। इसमें नई एडीशन हो नहीं सकती।... जो कुछ होता है ड्रामा में नूँध है। साक्षी होकर देखना पड़ता है।
गुह्यता - साक्षी माना ईमानदार, निःस्वार्थ, बिना किसी पक्षपात/भेदभाव के किसी निर्णय पर पहुँचना। साक्षी होकर फिर दृष्टा (दर्शक) बनकर ड्रामा की सीन को देखना। पहले अपने कर्मों को दर्शक बनकर देखने का अभ्यास डालो फिर अन्य आत्माओं द्वारा किये गये कर्म विचलित नहीं करेंगे और ड्रामा की हर सीन मनोरंजक हो जायेगी।।

25-02-2014
गफलत से ही हारते हैं।
गुह्यता - सूक्ष्म कारण - दूसरों को देखने के चक्कर में अपनी सही चैकिंग न कर गफलत में चलते रहते और धीरे-धीरे हार अनुभव होने लगती फिर एक दिन वो हार सत्य में बदल जाती।

26-02-2014
मैं कोई साधु-सन्त आदि नहीं हूँ। कोई आते हैं, कहते हैं गुरूजी का दर्शन करें। बोलो गुरूजी तो हैं नहीं और दर्शन से भी कोई फायदा नहीं।
गुह्यता - उन्हें समझाओ कि ज्ञान सुनो और वारिस बनो।

27-02-2014
तुमको ज्ञान की बुद्धि से सब कुछ भुलाना होता है।
गुह्यता - Replace everything with positive thoughts अर्थात् मोह का स्नेह से, अहंकार को स्वमान में, and so on...!!

28-02-2014
त्रेता में बहुत हैं जो स्वर्ग में नहीं आते।
गुह्यता - जिन्होंने यहाँ पुरूषार्थ में हार स्वीकार कर ली है सिर्फ वे ही स्वर्ग में नहीं आते, सेमी स्वर्ग में पार्ट बजाते।

01-03-2014
काम और क्रोध बहुत गन्दा है। मनुष्य की सारी शोभा ही गँवा देते हैं। यहाँ शोभा दिखायेंगे तब वहाँ भी शोभा पायेंगे।
गुह्यता - यहाँ ही दैवी चाल-चलन के संस्कार बनाने हैं और फिर उन्हीं संस्कारों द्वारा कार्य व्यवहार करते-करते देह त्याग कर चले जाना है। कामी और क्रोधी बनना माना आसुरी चाल-चलन का शो करना। ऐसा शो करने वाले कैसे शोभा पा सकेंगे।

02-03-2014 - अव्यक्त मुरली

03-03-2014
बाप कहते हैं मैं भल इस शरीर में हूँ परन्तु मेरी यह असुल की प्रैक्टिस है। मैं बच्चों को आत्मा ही समझता हूँ।
गुह्यता - जैसे बाबा की प्रैक्टिस नैचुरल है, वैसे अपनी भी प्रैक्टिस नैचुरल बनानी है।

04-03-2014
तुम्हारा सवेरे एक क्लास होता है एवरहेल्दी बनने का और फिर यह है एवरवेल्दी बनने का।
गुह्यता - अमृतवेला और मुरली क्लास।

05-03-2014
मैं तुम्हारी कितनी निष्काम सेवा करता हूँ। मुझे कुछ भी लोभ नहीं है कि पहला नम्बर बनूँ। नहीं। औरों को बनाने का रहा है। इसको कहा जाता है निष्काम सेवा।
गुह्यता - नम्बरों की दौड़ में आत्मायें शामिल रहती हैं। परमात्मा इस सबसे सदा अछूता है। न्यारा है इसीलिये ही सबका प्यारा है। उनसे जास्ती महिमा किसकी होती नहीं। ऐसी निष्काम सेवा वह एक ही कर सकता है। संगम के थोड़े से समय पर हम भी उनको कॉपी करके निष्काम भाव से सेवा करते हैं तो उसका फल पूरे कल्प प्राप्त करते हैं। कभी देवता बन और कभी पूज्य बन महिमा के पात्र बन जाते हैं।

06-03-2014
बच्चे, यह तो अनादि है। नहीं तो मैं तिथि-तारीख सब कुछ बताऊँ-कब और कैसे रचा परन्तु यह तो अनादि रचना है।

गुह्यता - यथार्थ सब बातें बाबा बता देते हैं। जो भी पूरे कल्प में घटित होता है, जिसका उल्लेख किया जा सकता है वह सब राज बाबा स्पष्ट कर देते हैं बाकी जो नेचुरल है, कुदरत है जिसका पार्ट आनादि है उसकी समझ भी बाबा देते हैं। इसलिये तिथि-तारीख में जास्ती समय एनर्जी वेस्ट न कर अपना जीवन उच्च बनाने का पुरूषार्थ करना ही सही कर्म है, यथार्थ है।

07-03-2014
बाप द्वारा हमको पता पड़ा है, हम देवतायें आपस में बहुत प्रेम से चलते थे।... अब देह-अभिमान होने कारण एक दो में वह प्यार नहीं है। एक दो की खामियाँ निकालते रहते हैं। फलाना ऐसा है..... जब देही-अभिमानी थे तो ऐसे किसकी खामियाँ नहीं निकालते थे। आपस में बहुत प्यार था। अब फिर वही अवस्था धारण करनी है।
गुह्यता - जब प्यार निःस्वार्थ हो तो ऐसी अवस्था सहज रहती है। किसी भी प्रकार की इच्छा/चाहना/कामना अवस्था गिरा देती है। मुख्य धारणा- सब अच्छे हैं, सही हैं। अगर खामी देखनी है तो स्वयं की खामियों को, स्व के कर्मों को, स्वयं की वृत्ति। को बार-बार चैक करते रहना अर्थात् अपनी कमियों को दूर कर देना। तो वही देवताई प्रेम फिर से जागृत हो जायेगा। इसी स्व परिवर्तन से धरा स्वर्ग बन जायेगी और घर-घर में खुशहाली होगी।

08-03-2014
जब परमपिता परमात्मा ने प्रवेश किया तो तुमको कशिश हुई और तुम भागे। कोई भी तुमने परवाह नहीं की।
गुह्यता - जो आदि में हुआ सो अन्त में भी रिपीट होना है।

09-03-2014 - अव्यक्त मुरली

10-03-2014
अशरीरी और शरीरधारी का मिलन होता है। उनको तुम कहते हो बाबा।
गुह्यता - शिवबाबा अशरीरी और ब्रह्मा बाबा शरीरधारी।

11-03-2014
तुम्हारी अलग-अलग क्लास तो नहीं कर सकते। वास्तव में तुमको क्लास में इस तरह बैठना चाहिए जो अंग, अंग से न लगे।
गुह्यता - वास्तव में पवित्रता की धारणा और अवस्था हरेक की नम्बरवार है, और अंग से अंग छूने से निगेटिव एनर्जी जल्दी flow करती है। इसलिऐ बाबा

समझाते हैं...।

12-03-2014
गुरूओं के भी अच्छे-अच्छे अनन्य शिष्य जब आयेंगे तब उन सबकी बुद्धि खुलेगी। देखेंगे यह तो हमारे ही पत्ते निकलते जाते हैं।
गुह्यता - भक्ति का सिंहासन हिलने का समय।

13-03-2014
जब समय आता है तो हमको बेआरामी हो जाती है- बस जाऊँ, बच्चे बहुत दुखी हैं, पुकारते हैं। तरस पड़ता है- बस जाऊँ। ड्रामा में जब समय होता है तब ख्याल होता है- बस जाऊँ।
गुह्यता - ख्याल भी तभी होता है जब पार्ट शुरू होना होता है, उसके पहले संकल्प ही नहीं उठता इसलिऐ यह सोचना फिजूल है कि पहले ऐसा क्यूँ नहीं हुआ/किया।

14-03-2014
अगर अभी तक झूठ, पाप, गुस्सा है तो अपना ही सत्यानाश करते हो। बाबा चार्ट देखकर समझ जाते हैं कि यह सत्य लिखा है या अर्थ भी नहीं समझाहै।
गुह्यता - रावण के संस्कार अभी तक भी नहीं त्यागे हैं तो अपने साथ-साथ औरों की अवस्था बिगाड़ने के भी निमित्त बन जाते.... ऐसी चलन वाले क्या पद पा सकेंगे!! भल कितना भी छिपा लो। उस सतगुरू से तो कुछ भी छिपा रह ना सके।

15-03-2014
तुम्हारा याद करना ऐसा ही है जैसे लाइट हाउस फिरता है। स्वदर्शन को ही लाइट हाउस कहते हैं।
गुह्यता - लाइट हाउस माना अपने आदि-मध्य-अन्त का स्पष्ट दर्शन.... आत्मा के अनादि सो आदि सो अन्त के पार्ट का स्पष्ट अनुभव।

16-03-2014 - अव्यक्त मुरली

17-03-2014
समझा जाता है यह आत्मा अच्छी है, यह बाह्यमुखी है, यह इस दुनिया का सैर आदि करना चाहती है। यह उस दुनिया को भूली हुई है।

गुह्यता - जो आत्मायें सतयुगी नजारों का स्पष्ट अनुभव नहीं कर पातीं हैं वे ही कलयुगी पत्थरों में जाकर अपना माथा फोड़ती हैं। वास्तव में यह दुनिया एकदम भूल जानी चाहिये।

18-03-2014
इतने सब आये हैं, पता नहीं इन सबको फिर देखूँगा वा नहीं? यह सब ठहर सकेंगे वा नहीं? आये तो ढेर के ढेर, फिर आश्चर्यवत् भागन्ती हो गये।
गुह्यता - बाबा का बनकर फिर छोड़ जाने का कमजोर संकल्प कभी नहीं करना। बाबा को भी ऐसे कमजोर संकल्प पहुँचते तो हैं ना। बाबा भी ऐसे बच्चों की बदनसीबी को देखते ख्याल करते, ना मालूम ये बच्चे अपना भाग्य बना सकेंगे वा कल्प-कल्प के बदनसीब बनकर ही रह जायेंगे।

19-03-2014
जो निर्विकारी बनते हैं, उनकी ही फैमिली आकर राज्य करती है।
गुह्यता - जो सजा खाते वो राज्य-भाग्य पा न सकें।

20-03-2014
हम पवित्र बने फिर वहाँ शरीर भी योगबल से बनते हैं इसलिए माया खींचती नही है।
गुह्यता - माया अर्थात् पाँच विकारों की खींच वहाँ होती नहीं।

21-03-2014
यह बड़ी सहज प्योर होने लिऐ भट्ठी है, इसको योग भट्ठी भी कह सकते हैं। यह है सोने को शुद्ध बनाने की भट्ठी, बाप को याद करने की भट्ठी। प्योर तो जरूर बनना है।
गुह्यता - इसी को कहा जाता है भारत का सच्चा प्राचीन योग।

22-03-2014
बाप और बच्चों की एक्टिविटी में फर्क है। ख्याल करो, इसमें बाबा का पार्ट क्या है और रथ का पार्ट क्या है?
गुह्यता - शिवबाबा डायरेक्शन देते और ब्रह्मा बाबा उनका प्रैक्टिकल अनुभव कर अपने अनुभव बच्चों को सुनाते और हमारा पुरूषार्थ आगे बढ़ाने में हमारा सहयोग करते।

23-03-2014 - अव्यक्त मुरली

24-03-2014
जानने को ही साक्षात्कार कहा जाता है।
गुह्यता - आत्मा, परमात्मा, ड्रामा आदि को देखने की बात नहीं, इन्हें तो अनुभव से ही समझा जाता है, यही साक्षात्कार है।

25-03-2014
जब सतोप्रधान तक पहुँचेंगे तब ही पाप कटेंगे।
गुह्यता - अपने को आत्मा समझना, आत्मा के स्वमानों की प्रैक्टिस करना, यह तो साधारण पुरूषार्थी के समान है। ऊँची स्टेज का पुरूषार्थ माना घड़ी-घड़ी अशरीरी/बीजरूप अवस्था में टिकना। इसी अवस्था में पाप भस्म होते हैं।

26-03-2014
भक्ति अलग है, ज्ञान अलग है। ऐसे नहीं, भक्ति न करने से कोई भूत-प्रेत खा जायेंगे। नहीं। तुम तो बाप के बने हो। तुम्हारे में जो भूत हैं वह सब निकल जाने हैं।
गुह्यता - वास्तव में भक्ति का मुख्य आधार डर ही है। इसी डर के पीछे-पीछे रावण के भूत आ जाते हैं। ज्ञान अर्थात् समझ आ जाने से डर निकल जाता है। ड्रामा के पट्टे पर अचल-अटल हो जाते हैं। डर निकलना और भूतों का भाग जाना।

26-03-2014
सात रोज में तुमको लायक ब्राह्मण-ब्राह्मणी बन जाना है। सिर्फ नाम का ब्राह्मण-ब्राह्मणी नहीं चाहिये। ब्राह्मण-ब्राह्मणी वह जिनके मुख में बाबा का गीता ज्ञान कण्ठ हो।
गुह्यता - बाबा के बने हो तो पूरे बनो। सिर्फ नामधारी ब्राह्मण किस काम के।

27-03-2014
ऐसे भी धर्म हैं जो काले ही काले हैं। उन्हों के फीचर्स भी देखो। जापानियों के फीचर्स, यूरोपियन्स के फीचर्स, चीनियों के फीचर्स देखो। इण्डिया वालों के फीचर्स बदली होते जाते हैं। उन्हों के लिए ही श्याम-सुन्दर का गायन है, और कोई धर्म के लिए नहीं।
गुह्यता - जो आते ही काली दुनिया में हैं उनके फीचर्स भला क्या होंगे। फीचर्स हैं ही देवी-देवताओं के।

28-03-2014
दूसरे को करेन्ट देना है तो फिर रात्रि को भी जागो।... बाबा का यही धन्धा है - बच्चों को सर्चलाइट देने का।... आत्मा को याद कर सर्चलाइट देनी होती है।
गुह्यता - सेवार्थ हड्डियाँ भी खपा देनी हैं। स्व के पुरूषार्थ में भी सेवा समाई हो, तब है कमाल।

29-03-2014
रामराज्य का गायन है-शेर गऊ इकट्ठा जल पीते हैं। त्रेता में ऐसा गायन है, तो सतयुग में क्या नहीं होगा!
गुह्यता - महीनता- असुल में स्वर्ग में तो ना शेर होता और ना ही बकरी। भाव है कि अव्वल दर्जे की आत्मा और साधारण दर्जे की आत्मा दोनों समान भाव से रहते हैं।

30-03-2014 - अव्यक्त मुरली

31-03-2014
ज्ञान का स्थाई पुस्तक कोई बनता नहीं। ज्ञान तो कानों से ही सुनना होता है। यह किताब आदि जो तुम रखते हो यह सब टैम्प्रेरी हैं, यह भी सब खत्म हो जायेंगे।... तुम्हारी बुद्धि में सिर्फ याद ही चल पड़ेगी। आत्मा बिल्कुल बाप जैसी भरपूर हो जाती है।
गुह्यता - इस ज्ञान की मदद से आत्मा जैसे संस्कार पक्के कर लेगी वही साथ चलेंगे और ऊँच पद की प्राप्ति करायेंगे।

01-04-2014
यह (दादा) भी कहते हैं हमने भी सब कुछ किया। भिन्न-भिन्न हठयोग आदि कान, नाक मोड़ना आदि सब कुछ किया। आखरीन सब कुछ छोड़ देना पड़े। वह धन्धा करें या यह धन्धा करें? पिनकी (सुस्ती) आती रहती थी, तंग हो जाता था। प्राणायाम आदि सीखने में बड़ी तकलीफ होती है। आधाकल्प भक्तिमार्ग में थे, अभी मालूम पड़ता है।
गुह्यता - नासमझी के कर्म करते-करते बिल्कुल ही नासमझ बन पड़े थे। ज्ञान मिला तो फर्क समझ आता है कि यह क्या करते थे।

02-04-2014
कोई भी एम.पी. बैठ तुम्हारी महिमा करे कि भारत का राजयोग इन ब्रह्माकुमार-कुमारियों के सिवाय कोई सिखला नहीं सकते,ऐसा अभी तक कोई

निकला नही है। बच्चों को बहुत होशियार, चमत्कारी बनना है।
गुह्यता - बच्चों मे बाबा सी कशिश आ जाये, ऐसी चुम्बक बनना है। कोई भी आत्मा सामने आये तो उसे आप में बाप दिखाई दे।

03-04-2014
बाप कहते हैं-बच्चे, गफलत नहीं करना। दुश्मन अभी भी तुम्हारे पीछे है, जिसने ही तुमको गिराया है। वह अभी तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेंगे। भल तुम संगमयुग पर हो परन्तु आधाकल्प तुम उनके रहे हो तो वह जल्दी नहीं छोड़ेंगे। खबरदार नहीं रहेंगे, याद नहीं करेंगे तो फिर और ही विकर्म करा देंगे। फिर कुछ न कुछ चमाट लगती रहेगी।
गुह्यता - थोड़ा ज्ञान सुन लिया... सेवाओं में आगे नम्बर मिलने लगा... तो बस! बन गये ज्ञानी योगी। ये है सबसे सूक्ष्म चमाट। अनुभवी तो सभी हैं ही।

04-04-2014
(बच्चे के रोने का आवाज हुआ) अभी यह डायरेक्शन सभी सेन्टर्स वालों को दिये जाते हैं कि बच्चों को कोई भी लेकर न आये। उन्हों का कोई प्रबन्ध करना है। बाप से जिन्हों को वर्सा लेना होगा वह आपे ही प्रबन्ध करेंगे। यह रूहानी बाप की यूनिवर्सिटी है, इसमें छोटे बच्चों की दरकार नहीं।... बाल बच्चे लायेंगे तो इसमें बच्चों का ही नुकसान है।
गुह्यता - यह बाप का घर है तो बेहद की यूनिवर्सिटी भी है। और यूनिवर्सिटी के फिर कायदे भी हैं। एक बच्चे से कितनी आत्माओं को डिस्टर्ब होता होगा।

05-04-2014
भल नाम है ब्रह्म महतत्व परन्तु है पोलार। जैसे यह स्टॉर ठहरे हुऐ हैं आकाश में, वैसे तुम बहुत छोटी-छोटी आत्मायें ठहरी हुई हो।
गुह्यता - सारा ब्रह्म महतत्व आत्माओं के रहने का स्थान है। हरेक आत्मा अपने सेक्शन में अपने स्थान पर स्वतः ही जाकर टिक जाती है। फिर समय पर आपेही नीचे आना शुरू होता है।

06-04-2014 - अव्यक्त मुरली

07-04-2014
नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार बाप भी तुम्हारा स्वागत करते हैं। तुम बच्चे जो स्वागत करते हो, उनसे जास्ती बाप तुम्हारा स्वागत करते हैं। स्वागत माना सद्गति।
गुह्यता - इससे अच्छा और शुभ स्वागत तो कोई हो ही नहीं सकता।

08-04-2014
बाप कहते हैं मैं आता ही एक बार हूँ। मैं कोई इब्राहम-बुद्ध के तन में नहीं आता हूँ। मैं पुरूषोत्तम संगमयुग पर ही आता हूँ।
गुह्यता - ड्रामा में हर बात निश्चित है, नूँध है। ऐसे ही बाबा की पधरामणी का तन भी मुकर्रर है। बाबा के अवतरण का समय भी निश्चित है। इसी तरह इब्राहम-बुद्ध आदि के तन भी मुकर्रर हैं, वे कल्प-कल्प उसी तन का आधार लेते हैं।

09-04-2014
कोई तो पूरे 5000 वर्ष घर में नहीं रहते। कोई तो पूरे 5000 वर्ष रहते हैं। अन्त में आयेंगे तो कहेंगे 4999 वर्ष शान्तिधाम में रहे हैं। हम कहेंगे 4999 वर्ष इस सृष्टि पर रहे हैं।
गुह्यता - जो पूरे कल्प (4750 to 4999 years) घर में रहते हैं उनके लिऐ तो जैसेकि मोक्ष ही हो गया। आये, खाया, कमाया, गंवाया और गये वापिस। उनकी क्या वैल्यू रही। ना नई दुनिया की कोई समझ, ना ही पुरानी दुनिया का कुछ अनुभव। किस काम का ऐसा पार्ट। पार्ट तो हमारा है जोकि पूरे 5000 वर्ष तक चलता है। सबसे खूबसूरत पार्ट तो बाबा के साथ मिलन का है, जो हमारे सिवाय और किसी का नहीं।

10-04-2014
जरूर 84 जन्म, 84 नाम, 84 बाप बने होंगे। अन्त में फिर तमोप्रधान सम्बन्ध हो जाता है। इस समय जितने सम्बन्ध होते हैं, उतने कभी नहीं होते हैं। कलयुगी सम्बन्धों को बन्धन ही समझना चाहिये।..... जितने जास्ती सम्बन्ध उतने जास्ती बन्धन।..... इस समय तुम्हारा सम्बन्ध सबसे छोटा है। सिर्फ एक बाप से सर्व सम्बन्ध हैं। दूसरा कोई से भी तुम्हारा बुद्धि योग नहीं है, सिवाय एक के। सतयुग में फिर इससे जास्ती है।
गुह्यता - रिश्तों का जाल/ताना-बाना, विचार करो क्या वास्तव में मुझे इतने सम्बन्धों की आवश्यकता है।

11-04-2014
तुम काल पर जीत पा लेते हो इसलिये बाप को महाकाल कहते हैं। महाकाल कोई मारने वाला नहीं है।
गुह्यता - परमात्मा की इमेज भक्ति में दुखदायी बना दी है जो वास्तव में बड़ी भारी भूल कर दी है। बाप तो प्राणदाता, जीयदान देने वाला, घड़ी-घड़ी शरीर छोड़ने से बचाने वाला है, महाकाल अर्थात् मारने वाला नहीं। अटल

सत्य तो यही है कि जो कर्म हम करते हैं उस अनुसार ही हमें कर्म फल भी भोगना ही पड़ता है।

12-04-2014
जितना जितना तुम बेहद की कमाई में जोर भरते जायेंगे तो हद के कमाई की बातें भूलती जायेंगीं।
गुह्यता - संग्रह वृत्ति। समाप्त होकर इच्छायें सिमटती जायेंगी और आवश्यकता पूर्ति स्वतः होती रहेगी। जो आत्मायें बाबा के यज्ञ सेवा की जिम्मेवारी उठाने का शुभ संकल्प करती हैं, बाबा भी उनकी सब जिम्मेवारियाँ उठा लेते हैं।

13-04-2014 - अव्यक्त मुरली

14-04-2014
राहू की दशा ही इन्साल्वेन्ट बनाती है, बृहस्पति की दशा से साल्वेन्ट बनते हैं।
गुह्यता - वृक्षपति बाप का साथ अर्थात् सच्ची-सच्ची बृहस्पति की दशा, जिससे ही साल्वेन्ट बनते हैं।

15-04-2014
और कोई स्वर्ग में आता ही नहीं सिवाय तुम्हारे, तो तुम ही सिमरण करेंगे।
गुह्यता - स्वर्ग के असीम सुख सिर्फ हमारे लिये ही होते हैं। और किसी भी धर्म की आत्माओं को इसका टेस्ट कभी मिलता ही नहीं।

16-04-2014
सम्पूर्ण ब्रह्मा भी है परन्तु वह है सम्पूर्ण, अव्यक्त। अभी व्यक्त ब्रह्मा जो है उनको अव्यक्त बनना है। व्यक्त ही अव्यक्त होता है जिसको फरिश्ता भी कहते हैं। उनका सूक्ष्तवतन में चित्र रख दिया है।
गुह्यता - आत्मा का सम्पूर्ण स्वरूप कभी भी impurity को touch नहीं करता। सम्पूर्ण ब्रह्मा की भी अव्यक्त काया ऊपर में रहती है जिसे ही धारण कर सुप्रीम आत्मा नीचे पतित तन में प्रवेश करते हैं। पतित तन में रह रही आत्मा को अपने सम्पूर्ण स्वरूप को धारण करने के लिये पुरुषार्थ करना होता है।

17-04-2014
तुम एक ही बार आस्तिक बनते हो।
गुह्यता - आस्तिक अर्थात् परमात्मा के यथार्थ, सत्य परिचय को जानने वाला।

18-04-2014
बाप के ऊपर तुम कर्ज चढ़ाते हो। ईश्वर अर्थ जो देते हो, दूसरे जन्म में इनका रिटर्न लेते हो ना। बाबा को तुमने सब कुछ दिया तो बाबा को भी सब कुछ देना पड़ेगा। मैंने बाबा को दिया, यह कभी ख्याल नहीं आना चाहिये।

गुह्यता - वास्तव में आत्मा परमात्मा को क्या देगी, कुछ भी नहीं। हम जो यज्ञ में सेवार्थ देते हैं वह यज्ञ की सर्व आत्माओं में सूक्ष्म रूप से सफल हो जाता है, और ड्रामानुसार जन्म बाई जन्म उन आत्माओं के सम्पर्क में आने पर हमें मिल जाता है। इसमें परमात्मा को कुछ देने का तो ख्याल भी नहीं आना चाहिऐ । हम जो भी कर रहे हैं अपने ही लिये कर रहे हैं। किसी पर कोई एहसान नहीं कर रहे।

19-04-2014
अन्तकाल कोई शरीर का भान अथवा धन दौलत याद न आये। नहीं तो पुनर्जन्म लेना पड़ेगा। भक्ति में काशी कलवट खाते हैं, तुमने भी काशी कलवट खाया है अथवा बाप के बने हो।

गुह्यता - काशी कलवट खाना अर्थात् जो कुछ तुम्हारा था सब कुछ पीछे छोड़ आते हो। कुछ भी अपना नहीं रहा फिर उसमें बुद्धि नहीं जानी चाहिये। कुछ बाकी रह गया तो हिसाब बराबर करने के लिये फिर जन्म लेकर हिसाब निपटाना पड़ेगा सो समझदार बनो और इसी जन्म में चुकता कर मुक्त हो जाओ, फिर नये सिर हिसाब शुरू होगा।

20-04-2014 - अव्यक्त मुरली

21-04-2014
तुमने तो चोटी भी दिखाई है ऊपर में। तुम ब्राह्मण बैठे हो। देवताओं के पीछे हैं क्षत्रिय, द्वापर में पेट के पुजारी, फिर शूद्र बनते हैं। यह बाजोली है।... यही तुम्हारे लिये 84 जन्मों की यात्रा है।

गुह्यता - यह देह का बड़ा ही रमणीक विश्लेषण है। सबसे ऊपर चोटी फिर है चेहरा जो पवित्रता, दिव्यता को दर्शाता है अर्थात् देवी-देवतायें। फिर सीना जो क्षत्रियपन अर्थात् योद्धा के संस्कारों को दर्शाता है, इसलिये ढाल/कवच पहने दिखाते हैं। फिर वैश्यवंशी अर्थात् पेट और जंघाओं का हिस्सा (विकार और हबच से भरपूर) फिर आखिर में पैर अर्थात् आत्मा अपने स्तर से बिल्कुल नीचे गिरकर सबके चरणों में पड़ने लगती है। फिर बाबा आकर ब्राह्मणों की निशानी चोटी से पकड़कर, हमको गटर से निकाल फिर सबसे ऊपर ले जाते

हैं। (बाजोली)

22-04-2014
और कोई खण्ड वाले ऐसे नहीं कहेंगे, हम नींच हैं अथवा हमारे में कोई गुण नहीं हैं। ऐसे कहते कभी सुना नहीं होगा। सिक्ख लोग भी ग्रंथ के आगे बैठते हैं परन्तु ऐसे कभी नहीं कहते कि नानक, तुम निर्विकारी, हम विकारी।... कंगन... निर्विकारीपने की निशानी... जनेऊ... पवित्रता की निशानी।
गुह्यता - आदि सनातन देवी देवता धर्म की आत्माओं के सिवाय कोई भी धर्म की आत्मायें सच्ची पवित्रता की परिभाषा अथवा दैवी गुणों को पूरे कल्प में कभी भी जान ही नहीं पाते। वे न ही इतना ऊँच चढ़ते और ना ही कभी इतना नीचे गिरते।

23-04-2014
सब बीमारियाँ द्वापर से निकलती हैं।
गुह्यता - बीमारी का जन्म होता है पाप से, और पाप शुरू होते हैं द्वापर से।

24-04-2014
अभी तुम संगमवासियों को परिचय मिला है। वह हैं नर्कवासी। तुम नर्कवासी नहीं हो। हाँ अगर कोई हार खाता है तो एकदम गिर पड़ते हैं।
गुह्यता - उस दुनिया के किनारे एकदम छूट जाने चाहियें। उस दर के दरवाजे अब हमारे लिये नहीं हैं।

25-04-2014
किसके भी नाम-रूप में नहीं फँसना है, उनको भी सेमी कुल कलंकित कहेंगे। सेमी से फिर फाइनल भी हो जाते है।... जैसे बाप समर्थ हैं, माया भी समर्थ है।
गुह्यता - नाम-रूप की बीमारी से गन्दी कोई बीमारी होती नहीं। माया के गुलाम हो क्या, जो छोड़ी नहीं जाती!!
26-04-2014
तुमने यह भी साक्षात्कार किया है - बच्चे कैसे जन्म लेते हैं, नर्स खड़ी रहती है, झट उठाया, सम्भाला। बचपन, युवा, वृद्ध अलग-अलग पार्ट बजता है, जो हुआ सो ड्रामा। उनमें कुछ भी संकल्प नहीं चलते।
गुह्यता - सब कुछ आटोमेटिकली होता रहता है, Everything Pre-planned।

27-04-2014 - अव्यक्त मुरली

28-04-2014
बाप कहते हैं मुझे बहुत भटकाया है। परमात्मा को ठिक्कर-भित्तार सबमें कह दिया है। जैसे भक्ति मार्ग में खुद भटके हैं वैसे मुझे भी भटकाया है। ड्रामा अनुसार उनके बात करने का ढंग कितना शीतल है।
गुह्यता - कितनी गहरी बात कैसी सहजता से कह देते हैं जो हमें जरा भी इंसल्टिंग फीलिंग तक नहीं आती। बस समझाने के लिये कह देते हैं वो भी हमें सही दिशा दिखाने अर्थ।

29-04-2014
बाबा लिखते हैं- सभी का आक्युपेशन लिखकर भेजो अथवा उनसे लिखवाकर भेजो। जो चुस्त समझदार ब्राह्मणियाँ होती हैं वह सब लिखवा भेजती हैं - क्या धन्धा करते हैं, कितनी आमदनी है? बाप अपना सब कुछ बतलाते हैं।
गुह्यता - वास्तव में जो ब्राह्मणियाँ अन्य आत्माओं प्रति वफादार होती हैं। सर्व भाई-बहनों प्रति बेहद की कल्याणकारी भावना रखती हैं, अपने नाम-मान से ज्यादा सर्व की तरक्की में खुशी अनुभव करती हैं, वे ही बाबा के ऐसे डायरेक्शन्स् सही प्रकार से फॉलो कर सकती हैं।

30-04-2014
न मन, न चित्ता पर था, हम ऐसे स्थान पर आकर बैठे हैं, जहाँ तुम्हारा यादगार भी खड़ा है। जहाँ 5000 वर्ष पहले भी सर्विस की थी। देलवाड़ा मन्दिर, अचलगढ़, गुरूशिखर हैं।.... यह यादगार सब तुम्हारे पिछाड़ी की अवस्था के हैं। जब तुम्हारी अवस्था सम्पूर्ण बन जाती है।
गुह्यता - ड्रामा की व्यवस्था। इससे एक्यूरेट कोई हो नहीं सकता। ड्रामा पर अचल-अडोल हो जाना ही सम्पूर्णता के अति नजदीक होने की निशानी है।

01-05-2014
बाप निर्विकारी बनाते हैं तो कई बच्चियाँ बिल्कुल मजबूत हो जाती हैं। बस हमको तो पूरा निर्विकारी बनना है। हम अकेले थे, अकेले ही जाना है। उनको कोई थोड़ा टच करेगा तो अच्छा नहीं लगेगा। कहेंगे यह हमको हाथ क्यों लगाते हैं, इनमें विकारी बांस है। विकारी हमको टच भी न करे। इस मंजिल पर पहुँचना है।
गुह्यता - हरेक की पवित्रता की धारणा अपनी-अपनी है। जितनी ऊँची पवित्रता की धारणा, उतना ही न्यारापन आत्मा में स्वतः आता जाता है।

02-05-2014
बाप है अविनाशी सर्जन, तो जरूर आयेंगे भी वहाँ ही जो भूमि सदा कायम रहती है। जिस धरनी पर भगवान का पाँव लगा, वह धरनी कभी विनाश को नहीं पा सकती।
गुह्यता - जिस धरनी पर परम पवित्र आत्मा और पवित्रता की हाइएस्ट धारणा वाली आत्माओं का अवतरण होता हो, भला उस धरा को प्रकृति नुकसान कैसे पहुँचा सकती।

03-05-2014
बोलो, तुम्हारा धर्म स्थापक तो स्वर्ग में आता ही नहीं। वह जब स्वर्ग में आये तब तुम भी आओ। हर एक धर्म का अपने-अपने समय पर पार्ट है।
गुह्यता - यह भी कुदरत का एक अद्भुत नियम है, पहले धर्म स्थापक पीछे फिर उस धर्म की अन्य आत्मायें नम्बरवार नीचे आती जाती हैं। वास्तव में हम भी इसी कुदरती नियम के अधीन हैं। पहले नारायण की आत्मा फिर उसके पीछे हम सब आत्मायें नम्बरवार। फर्क सिर्फ इतना है कि उनके धर्म स्थापक द्वापर से आना शुरू करते हैं और हमारे धर्म स्थापक कलयुग अन्त और सतयुग आदि के संगम पर।

04-05-2014 - अव्यक्त मुरली

05-05-2014
सचखण्ड स्थापन करने वाला सबका बाबा है। रावण को बाबा नहीं कहा जाता है। 5 विकार हरेक में हैं।
गुह्यता - सारे विश्व का बाबा एक ही हो सकता है जो परम हो। जो सबको ऊँच बनाये। नींच बनाने वाले को रावण कहते हैं।

06-05-2014
एक है योग की नॉलेज, दूसरा है 84 जन्म के चक्र की नॉलेज। दो नॉलेज हैं फिर उसमें दैवी गुण आटोमेटिकली मर्ज हैं।
गुह्यता - योग की नॉलेज अर्थात् परमात्मा का सत्य परिचय, 84 जन्म के चक्र की नॉलेज अर्थात् आत्मा की पहचान।

06-05-2014
किसका बहुत हिसाब-किताब होगा तो जन्म भी ले सकते हैं। किसके बहुत पाप होंगे तो घड़ी-घड़ी एक जन्म ले फिर दूसरा, तीसरा जन्म लेते छोड़ते

रहेंगे। गर्भ में गया, दुख भोगा, फिर शरीर छोड़ दूसरा लिया।... पाप सिर पर बहुत हैं, योगबल तो है नहीं।
गुह्यता - योगबल नहीं तो जन्म लेकर भोगना पड़ेगा।

07-05-2014
कृष्ण तो फर्स्ट प्रिन्स है। वह तो कितना बुद्धिवान होगा। सारे विश्व का मालिक क्या कम बुद्धिवान होगा! वहाँ उन्हों को वजीर आदि होते नहीं। राय लेने की दरकार नहीं। राय लेकर तो सम्पूर्ण बना है, फिर राय क्या लेंगे! तुमको आधाकल्प कोई की राय नहीं लेनी होती है।
गुह्यता - वजीर तब रखते हैं जब स्वयं की शक्तियाँ विशेष परखने और निर्णय करने की शक्ति क्षीण होने लगती हैं, और आत्मा की पालना करने की क्षमता कम होने लगती है। कृष्ण को क्या दरकार।

08-05-2014
बाप तो है बहुत छोटा राकेट। आने-जाने में देरी नहीं लगती है।
गुह्यता - जितना-जितना देहभान का त्याग कर अशरीरी बनते जायेंगे उतनी ताकत भरती जायेगी। सेकण्ड में आने-जाने में देरी नहीं लगेगी।

09-05-2014
ज्ञान बाप सुनाते हैं, भक्ति रावण सिखलाते हैं। देखने में न बाप आता, न रावण आता। दोनों को इन आँखों से देखा नहीं जाता। आत्मा को समझा जाता है।
गुह्यता - ज्ञान अर्थात् पुण्य कर्म, भक्ति अर्थात् पाप कर्म।

10-05-2014
आधाकल्प इन गुरूओं आदि ने तुमसे बहुत मेहनत कराई, मेहनत करते, भटकते-भटकते और ही अशान्त बन पड़े हो। अब जो शान्तिधाम का मालिक है, वह आकर सभी को वापिस ले जाते हैं।
गुह्यता - अब बाबा की गोद में विश्रामी हो जाओ।

10-05-2014
भगवान भी प्रॉमिस करते हैं बच्चों से- मैं तुम बच्चों को अपने घर जरूर ले जाऊँगा।.... कोई चलना चाहे वा न चाहे, ड्रामा अनुसार सबको जाना है जरूर, पसन्द करो, न करो... जबरदस्ती भी... छोड़ेंगे कोई को भी नहीं... नहीं चलेंगे तो भी सजा देकर मार-पीटकर भी ले चलूँगा।.....

गुह्यता - प्यार से स्वयं को लायक बना लें तो बाप, टीचर, सतगुरू और स्वयं का, सर्व का मान बना रहे।

11-05-2014 - अव्यक्त मुरली

12-05-2014
इस तख्त पर अकाल आत्मा रहती है। यह तख्त सभी आत्माओं के सड़ गये हैं। सबसे जास्ती तुम्हारा तख्त सड़ गया है। आत्मा इस तख्त पर विराजमान होती है। भृकुटी के बीच में क्या है? यह बुद्धि से समझने की बातें हैं। आत्मा बिल्कुल सूक्ष्म है, स्टार मिसल है।
गुह्यता - पार्ट बजाते-बजाते आत्मा एकदम कलाहीन बन पड़ी है। अजामिल जैसी पापात्मा बन पड़ी है। विकारों की बांस से सड़ी हुई बदबूदार हो गई है। यह सब कमियाँ गहराई से जान-समझकर फिर स्वयं ही स्वयं को एकदम शुद्ध, स्वच्छ पुण्यात्मा बनाना है।

13-05-2014
भारत की महिमा भी बहुत है तो निंदा भी बहुत है। भारत बिल्कुल धनवान था, अब बिल्कुल कंगाल बना है।
गुह्यता - सबसे जास्ती निन्दा के निमित्त भी हम भारतवासी ब्राह्मण बच्चे ही बनते हैं। बाप को सर्वव्यापी कहकर बिल्कुल ही निन्दा कर दी। बाप की निन्दा सो बाप के बर्थप्लेस भारत की भी ग्लानि। भारत सर्वश्रेष्ठ था सो फिर भारत ही धर्म-भ्राष्ट, कर्म-भ्राष्ट बन पड़ा है, बिल्कुल ही वर्थ नॉट ए पैनी बन गये हैं।

14-05-2014
यह है योग अग्नि। पानी होता है आग को बुझाने वाला। आग होती है जलाने वाली। तो पानी कोई आग तो नहीं है, जिससे विकर्म विनाश हो।
गुह्यता - विकर्म विनाश करने के लिऐ योग अग्नि जलानी पड़े, जिस अग्नि में पाप जलकर भस्म हो जायें। फिर भला पानी से स्नान करने से पाप भस्म कैसे हो सकेंगे!!

15-05-2014
बाप को, जो बाप भी समझते हैं और बच्चा भी समझते हैं वह हाथ उठायें।
गुह्यता - क्या बाप को वारिस बनाया है, याद रहता है??

16-05-2014
तुमने पार्ट बजाया, तुम जानते नहीं हो और जिसने पार्ट ही नहीं बजाया है वह सब सुनाते हैं- वण्डर है ना।
गुह्यता - बाबा भूल-भुलैया के पार्ट में ही नहीं आते। फिर पार्ट बजाने को तन भी ऐसा चुना जोकि सबसे जास्ती पार्ट बजाने के अनुभवी हैं। वण्डर है ड्रामा की नूँध जो कल्प-कल्प एक ही तन मुकर्रर रहता है। उसी तन का आधार ले तीनों लोकों, आदि-मध्य-अन्त का सारा राज हमें स्पष्ट कर देते हैं।

17-05-2014
अनासक्त हो रहना चाहिये। सच्चा प्यार एक से, बाकी सबसे अनासक्त प्यार। भले बच्चे आदि हैं परन्तु..... एक में ही प्यार रहे, बाकी नाम मात्र, अनासक्त।
गुह्यता - सम्बन्ध एक बाप से, बाकी सम्पर्क हरेक आत्मा से वो भी आत्मिक भान में स्थित रहकर। एक बाप के सिवाय किसी भी सम्बन्ध, वस्तु, पदार्थ में आसक्ति रखना माना ऊँच भाग्य बनाने का सुअवसर खो देना।

18-05-2014 - अव्यक्त मुरली
19-05-2014
सारी दुनिया का मालिक मैं ही हूँ। भल मैं नई दुनिया में राज्य नहीं करता हूँ परन्तु है तो मेरी ना। मेरे बच्चे मेरे इस बड़े घर में भी बहुत सुखी रहते हैं और फिर दुख भी पाते हैं। यह खेल है। यह सारी बेहद की दुनिया हमारा घर है। यह बड़ा माण्डवा है ना।
गुह्यता - माण्डवा- सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी। सारी दुनिया का मालिक स्वयं को न्यारा कहते और हम जिनका वास्तव में कुछ भी नहीं, वह स्वयं को मालिक मान बैठे हैं। दुखी होते रहते मगर मेरा-मेरा नहीं छूटता।

20-05-2014
यहाँ तुम उल्टे होकर नहीं बैठो। अपने को आत्मा समझो। अब तुमको अल्लाह बाप मिला है जो सुल्टा बनाते हैं। रावण उल्टा बनाते हैं।
गुह्यता - उल्टा अर्थात् देहभान, सुल्टा माना ही देही।

21-05-2014
रथ मिल गया तो बाप भी आ गये। रथ तो जरूर एक फिक्स होगा ना।
गुह्यता - ड्रामानुसार एक रथ कल्प में एक ही बार मिलता है। दादा लेखराज का रथ फिर कल्प के 5000 वर्ष बाद ही प्राप्त हो सकेगा। जब रथ होगा तभी तो रथवान भी हाजिर होवे।

22-05-2014
विचार सागर मंथन किया हुआ कलष लक्ष्मी को दिया है। उसने फिर औरों को अमृत पिलाया तब स्वर्ग के गेट खुले। परन्तु परमपिता परमात्मा को तो विचार सागर मंथन करने की दरकार ही नहीं।
गुह्यता - शिवबाबा ने ब्रह्मा तन द्वारा ज्ञान सुनाया फिर ज्ञान कलश माताओं को दिया, जिनके द्वारा समस्त विश्व में ज्ञान गंगा बह रही है।

23-05-2014
बाप कहते हैं अभी शरीर से प्यार नहीं रखना है। यह तो पुराना शरीर है। अब तुमको नया खरीद करना है। कोई दुकान नही रखा है जहाँ से खरीद करना है। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो पावन बन जायेंगे फिर शरीर भी तुमको पावन मिलेगा।
गुह्यता - पावन सतोप्रधान दुनिया में जाने से शरीर भी पावन मिलेगा। सेमी प्योर दुनिया का शरीर भी सेमी प्योर ही होगा, प्योर नहीं।

24-05-2014
यह कोई साधु-महात्मा नहीं हैं जो कोई बद्दुआ करेंगे या गुस्सा करेंगे।..... अपना ही जन्म-जन्मान्तर के लिये नुकसान करेंगे। बाप तो समझानी देते हैं, आगे के लिये सुधर जायें।
गुह्यता - यह तो बाप है। बच्चों के भले के लिये ही समझाते हैं। इतना प्यार तो कोई कल्प में भी दे ना सके जो बाप इस छोटे से एक अनमोल जन्म में हमें देते हैं। अशुभ बोल अथवा क्रोध आत्मा देहभान के वशीभूत होकर करती है। परमात्मा को तो देह ही नहीं, देहभान कहाँ से आया।

25-05-2014 - अव्यक्त मुरली

26-05-2014
जैसे बाबा के पास खजांची रहते हैं, वैसे यहाँ भी शिवबाबा का खजांची है। यह तो ट्रस्टी है। बाबा का इनमें कोई मोह नहीं है। इसने अपने पैसे में ही मोह नहीं रखा, सब कुछ शिवबाबा को दे दिया तो फिर शिवबाबा के धन में मोह कैसे रखेंगे। यह ट्रस्टी है।
गुह्यता - मुंशी लोग अपने सेठ के प्रति वफादार हो रहते थे। पाई-पाई का हिसाब बड़ी ईमानदारी से रखते थे। बाबा (ब्रह्मा) भी तो शिवबाबा का मुंशी है। इन जैसा ईमानदार, वफादार, फरमानबरदार व्यक्तित्व तो कोई हो ना सके।

27-05-2014
महारथियों की बुद्धि में प्वाइंटस् (Points) होंगी। लिखते रहें तो अच्छी-अच्छी प्वाइंटस् अलग करते रहें। प्वाइंटस् का वजन करें। परन्तु ऐसी मेहनत कोई करता ही नहीं। मुश्किल कोई नोट्स रखते होंगे और अच्छी प्वाइंटस् निकाल अलग रखते होंगे।
गुह्यता - बाबा के अखुट महावाक्यों की वैल्यु वही समझ सकते हैं जिन्होंने उनको धारण किया हो। तभी तो बाबा कहते 7 दिन के बच्चे भी 50 साल वालों से आगे जा सकते हैं। सारा खेल धारणा का है।

28-05-2014
भगवान कोई सैंकड़ों-हजारों नहीं होते हैं। मिट्टी-पत्थर में नहीं होते हैं।
गुह्यता-भगवान एक है जो सदा अपने ओरिजनल दिव्य स्वरूप में ही रहते हैं।

29-05-2014
शिवबाबा कोई से भाषा सीखा होगा? जबकि उनका कोई टीचर ही नहीं तो भाषा फिर क्या सीखा होगा? तो जरूर जिस रथ में आते हैं उनकी भाषा ही काम में लायेगा। उनकी अपनी भाषा तो कोई है नहीं।
गुह्यता - इस दुनिया की किसी भी चीज में शिवबाबा की आसक्ति ही नहीं। वह तो हमारे लिये हमारी दुनिया में आकर यहाँ के ही साधनों का प्रयोग करके भारतवर्ष की मुख्य भाषा में हमें शिक्षा देते हैं।

30-05-2014
इन आँखों से देखने वाली चीज कोई भी सामने न आये, ऐसी अवस्था जमानी है। हमारी बुद्धि में सिवाय एक बाप के और शान्तिधाम के, कोई भी वस्तु याद न आये।
गुह्यता - आत्मा के दिव्य नेत्र वा मन-बुद्धि के दिव्य दर्पण से नजारे देखने का अभ्यास पक्का करो फिर सोते-जागते, उठते-बैठते, कोई भी कर्म करते सतयुगी नजारे ही दिखाई पड़ेंगे।

31-05-2014
आज योग के समय बीच में बापदादा संदली से उठकर सभा के बीच में चक्र लगाये एक-एक बच्चे से नैन मुलाकात कर रहे थे। बाबा आज क्यों उठे? देखने लिऐ कि कौन-कौन सर्विसएबुल बच्चा है? क्योंकि कहाँ कोई-कहाँ कोई बैठे रहते हैं। तो बाबा ने उठकर एक-एक को देखा-इनमें क्या गुण हैं? इनका कितना लव है?

गुह्यता - ऐसे तो बाबा हरेक बच्चे की अवस्था को जानते-समझते हैं।... बाबा जब बच्चे के करीब जाकर नैन मुलाकात करते तो आत्मा के नैचुरल वायब्रेशन्स् बहुत ही स्पष्ट अनुभव में आते। जैसे सम्बन्ध-सम्पर्क में रहकर ही किसी को गहराई से जान सकते हैं, ठीक वैसे ही।

01-06-2014 - अव्यक्त मुरली

02-06-2014
मनुष्य मत पर हम चलते नहीं, ईश्वरीय मत पर चल हम देवता बनते हैं। मनुष्य मत बिल्कुल छोड़ दी है। फिर तुमसे कोई आरग्यू कर न सके।.... बेहद के बाप ईश्वर से हम समझे हुये हैं।
गुह्यता - परमात्मा द्वारा मिले हुऐ ज्ञान से आत्मा जागृत अवस्था को प्राप्त कर लेती है अर्थात् परखने की शक्ति तीव्र होने से फिर अनेक प्रकार की मतें समाप्त होकर एक मत पर चल श्रेष्ठ बन जाते हैं।

03-06-2014
कोई को भूत लगते हैं तो बहुत पीड़ित करते हैं। वह अशुद्ध सोल आती है। तुम्हारे को कितने भूत लगे हुऐ हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह..... यह भूत तुम्हारे को बहुत पीड़ित करते हैं।
गुह्यता - भूत अर्थात् निगेटिव एनर्जी अर्थात् विकार - यही मुख्य भूत हैं जो सबसे पहले आत्मा को अपने वश में करते हैं, फिर विकारों से पीड़ित आत्मा अन्य आत्माओं को भी पीड़ा देने के निमित्त बन पड़ती है।

04-06-2014
बेहद का बाप, बेहद का टीचर आये हैं तो बैठ थोड़े ही जायेंगे कि बच्चे M.A., B.A. पास कर लें। बाप बैठा थोड़े ही रहेगा। थोड़े टाइम में चला जायेगा। बाकी थोड़ा समय है तो भी जागते नहीं।..... 4-5 सौ रूपयों के लिये क्यों हम मुफ्त अपना टाइम बरबाद करें। फिर शिवालय में हम क्या पद पायेंगे।... भल कितना भी बड़ा पगार हो, तो भी यह तो जैसे मुट्ठी में चने हैं।... बाप चने मुट्ठी अब छुड़ाने आये हैं, परन्तु छोड़ते ही नहीं हैं। उसमें है चने मुट्ठी, विश्व की बादशाही।.... उनको छोड़ यह नालेज पढ़ते रहें तो दिमाग भी खुले।... यह चने भी नसीब में नहीं आयेंगे। किसकी मुट्ठी में 5 चने अर्थात् 5 लाख होंगे।.. सब खत्म हो जायेंगे, इससे तो क्यों न बाप से बादशाही ले लो।... भूगरों (चनों) से मुट्ठी खाली कर हीरे-जवाहरों से मुट्ठी भरकर जाना है।

गुह्यता - जिस्मानी लौकिक पढ़ाई तो इस जन्म के निर्वाह अर्थ की जाती है और वह भी पूरा समय साथ दे ना दे, कोई भरोसा नहीं। यह अलौकिक पढ़ाई तो भविष्य 21 जन्मों की प्रारब्ध बनाती है। तो विचार करो कि कौन-सी पढ़ाई में फायदा है। विश्व की बादशाही या चने (भूगरे)।

05-06-2014
इस पढ़ाई में जो जितना-जितना अच्छी तरह धारण करेंगे और करायेंगे, फायदा ही फायदा है। ब्राह्मण बन गया तो फायदा ही फायदा।
गुह्यता - ब्राह्मण बनना अर्थात् भाग्य के कपाट खुल जाना, वो भी भविष्य आधाकल्प 21 जन्मों के लिए, परन्तु फिर पुरूषार्थ भी ऐसा करना पड़े।

06-06-2014
अपना भविष्य ऐसा बनाना है जैसे तुम पवित्र जोड़ी थे। हर एक आत्मा भिन्न नाम-रूप लेकर पार्ट बजाती आयी है।
गुह्यता - पवित्रता से भरपूर अपना वो जीवन अनुभव में आता है।

07-06-2014
जब रजोप्रधान सन्यासी थे तो दुनिया गन्दी नहीं थी। जंगल में रहते थे।... निडर हो रहते थे। तुमको भी निडर बनना है।
गुह्यता - रजोप्रधान दुनिया (द्वापर) के समय सन्यासी अपनी सतोगुणी अवस्था होने के कारण निडर हो रहते थे... सर्व प्राप्तियाँ भी उन्हें वहीं हो जाती थीं। हमें भी ऐसी ही निडर अवस्था बनानी है।

07-06-2014
3 मिनट साइलेन्स। बोलो, सिर्फ साइलेन्स से क्या होगा। यह तो बाप को याद करना है।
गुह्यता - साइलेन्स माना शान्तिधाम में बाबा के पास शान्त हो बैठ जाओ।

08-06-2014 - अव्यक्त मुरली

09-06-2014
जैसे वहाँ परम आत्मा ज्ञान सहित रहते हैं, वैसे तुम आत्मायें फिर यह नालेज साथ में ले जायेंगे। मैं तुम बच्चों को इस ज्ञान सहित ले जाता हूँ। फिर तुम आत्माओं को पार्ट में आना है, तुम्हारा पार्ट है नई दुनिया में प्रालब्ध भोगना। ज्ञान भूल जाता है। यह सब अच्छी रीति धारण करना है।

गुह्यता - जैसे परमात्मा में सिर्फ ज्ञान का पार्ट भरा होने पर भी समय अनुसार ही वह पार्ट इमर्ज होता है। भक्तिमार्ग में साक्षात्कार कराने की नूंध है लेकिन ज्ञान सुनाने का नहीं। ऐसे ही आत्मा में ड्रामानुसार भिन्न-भिन्न पार्ट इमर्ज होता रहता है।अभी पुरूषार्थ करने का पार्ट, फिर प्रालब्ध भोगने का पार्ट।

10-06-2014
बाबा इस रथ द्वारा हमको ज्ञान सुनाते हैं। एक तो यह है जिस्मानी ब्रह्मा बाप का रथ। दूसरा फिर रूहानी बाप का यह रथ है।
गुह्यता - दादा लेखराज तो कलहयुग में था। बाबा समर्पित ऐसे हुये कि लेखराज नाम ही लुप्त हो गया।

11-06-2014
बाबा को थोड़े ही मालूम था कि बाप स्वयं आकर मेरे में प्रवेश करेंगे।... कभी ख्याल में भी नहीं था। पहले तो आश्चर्य खाते थे यह क्या होता है। मैं किसको देखता हूँ तो बैठे-बैठे उनको कशिश होती थी। यह क्या होता है? शिवबाबा कशिश करते थे। सामने बैठो तो ध्यान में चले जाते थे। आश्चर्य में पड़ गये, यह क्या है! इन बातों को समझने के लिऐ फिर एकान्त चाहिये। तब वैराग्य आने लगा-कहाँ जाऊँ? अच्छा बनारस जाता हूँ। यह उनकी कशिश थी। जो इसको भी कराते थे, इतनी बड़ी कारोबार सब छोड़कर गया। उन बिचारों को क्या पता कि बनारस में क्यों जाते हैं? फिर वहाँ बगीचे में जाकर ठहरा। वहाँ पेन्सिल हाथ में उठाकर दीवारों पर चक्र बैठ निकालता था। बाबा क्या कराते थे, कुछ पता नहीं पड़ता था। रात को नींद आ जाती थी। समझता था कहाँ उड़ गया हूँ। फिर जैसे नीचे आ जाता था। कुछ पता नहीं क्या हो रहा है।
गुह्यता - Journey from 1934 to 1937. शिवबाबा की प्रवेशता की गुह्य लीला/चरित्र।

12-06-2014
बाबा जानते हैं घरों में रहते हैं, बिल्कुल शान्त नहीं रहते। सेन्टर्स पर थोड़ा टाइम जाते हैं, अन्दर में शान्त हो बाप को याद करें, वह नहीं है। सारा दिन घर में हंगामा करते रहते हैं तो सेन्टर पर आने से भी शान्ति में नहीं रह सकते हैं।
गुह्यता - ऐसी चलन से बाप की निंदा होती है।

13-06-2014
तुम संगमयुग पर हो। कलियुग की तरफ भी देख सकते हो, सतयुग की

तरफ भी देख सकते हो। तुम संगमयुग पर साक्षी हो देखते हो।
गुह्यता - संगम माना चोटी। एक तरफ स्वर्गिक घाटी, दूसरे तरफ रौरव नर्क/ जहन्नुम/विकारों रूपी खाई। चोटी पर खड़े होकर दोनों तरफ देखो और फिर अपने विवेक से फैसला करो।

13-06-2014
तुमको कहेंगे यह चित्र आदि कैसे बनायें? किसने सिखाया? बोलो, बाबा ने हमें ध्यान में दिखाया, फिर हम यहाँ बनाते हैं। फिर उनको बाप ही इस रथ में आकर करेक्ट करते हैं कि ऐसे-ऐसे बनाओ। खुद ही करेक्ट करते हैं।
गुह्यता - कैसे भगवान अपने मीठे बच्चों को दुनियावी मनुष्यों से वार्ता करने की, सेवा करने की कला सिखा रहे हैं।

14-06-2014
(टिड्डियों का मिसाल) सारा झुण्ड जब इकट्ठा जाता है तो बहुत आवाज होती है। सूर्य की रोशनी को भी ढक देते हैं, इतना बड़ा झुण्ड होता है। तुम आत्माओं का तो कितना बड़ा अनगिनत झुण्ड है। कभी गिनती नहीं कर सकते।... आत्मायें कितनी हैं वह हिसाब कभी निकाल नहीं सकते। अन्दाज लगाया जाता है।
गुह्यता - लगभग 650 करोड़ आत्मायें बाबा ने 95-96 की मुरलियों के दौरान बताई हैं। अगर हम तकरीबन 660 करोड़ टोटल संख्या मानकर चलें तो 660 करोड़ मनुष्यात्माओं (कौरवों) में से केवल 5% (33 करोड़ देवी-देवतायें) अर्थात् 5 पाण्डव हम बाबा के मुट्ठी भर बच्चे हैं।

15-06-2014 - अव्यक्त मुरली

16-06-2014
आत्मा को ही शरीर के साथ बेगर वा साहूकार कहते हैं।... तुमको इस समय ही बेगर बनना है शरीर सहित।... सब कुछ छोड़ना है। फिर प्रिन्स बनना है।... बेगर बन हम घर जायेंगे।... बाबा हमको पहले बेगर बनाकर फिर प्रिन्स बनाते हैं। देह के सब सम्बन्ध छोड़े तो बेगर ठहरा ना। कुछ भी है नहीं।
गुह्यता - हमारे लिये तो बहुत सहज है। जैसे दादा लेखराज सब कुछ अर्पण कर देह सहित स्वाहा हो गये। इसमें देह, देह के सम्बन्धी, सम्पत्ति, लोक-लाज, कुल की मर्यादा की सब बातें आ गईं। बुद्धि से एकदम बेगर बन गये। हमें तो बस कदम पर कदम रखकर फॉलो फादर करना है। ऐसे भी नहीं कि सब छोड़कर बैठ जाना है। समय पर आपेही सब हो जायेगा।

17-06-2014
तुम्हारी बुद्धि कितनी विशाल होनी चाहिये, इसमें जामड़ी बुद्धि चल नहीं सकती। अपने को साहेबजादे समझो तो पाप खत्म हो जायें। अपने को साहेबजादे समझो तो कुछ भी मांगने की परवाह न रहे।
गुह्यता - भगवान के बच्चे हो, पाप कैसे करोगे बच्चे। दूरांदेशी होकर सोचो बच्चों, किसके बने हो! कौन आपके साथ है! वर्तमान के ठाकुर सो भविष्य साहेबजादे बच्चों- मनुष्य तो क्या भगवान से भी कुछ मत माँगो। आपकी सब आवश्यकतायें स्वतः ही पूरी होती रहेंगीं।

18-06-2014
कॉटों के जंगल का बीज है रावण और फूलों के बगीचे का बीज है शिवबाबा।
गुह्यता - बीज रावण से ऐसी दुनिया बनी जो हम पीछे छोड़ आये हैं। और बीजरूप बाबा अब हमारे लिये स्वर्ग बना रहे हैं जिसमें इस दुनिया का कुछ भी नहीं होगा। अंशमात्र भी नहीं।

19-06-2014
वास्तव में तो मदद अपने को ही करनी है। पवित्र बनना है, सतोप्रधान थे फिर से बनना है जरूर।
गुह्यता - पवित्र बन जाओ, यही मदद है। अपनी भी, विश्व की भी और इसी से ही बाबा के भी मददगार बन जाओगे। पवित्रता की मदद से ही भारत में आज भी संस्कृति जीवित है।

20-06-2014
बाप तो कहते हैं स्वदर्शन चक्रधारी होकर मरो, और कुछ भी याद न आये। बिगर कोई सम्बन्ध जैसे आत्मा आई है, वैसे जाना है।
गुह्यता - यही है सच्ची-सच्ची पवित्रता, सम्पूर्ण पवित्रता। आत्मा आते ही पहला कर्म detached भाव से शरीर धारण करती है तो अन्त में भी डिटैच होकर ही देह का त्याग करना है। अगर देह त्याग करने समय कोई भी स्मृति आई तो देह छोड़ने वक्त वह याद सतायेगी और दुख अथवा कठोर सजाओं की अनुभूति करायेगी। इसलिये बाबा कहते हैं इस विनाशी देह सहित सर्व सम्बन्धों से साक्षी अर्थात् न्यारे हो जाओ।

21-06-2014
बाबा ने समझ दी है। ट्रांस में न तो याद की यात्रा है, न ज्ञान है। ध्यान अथवा ट्रांस वाला कभी कुछ भी ज्ञान नहीं सुनेगा, न कोई पाप भस्म होंगे। ट्रांस का महत्व कुछ भी नहीं है।
गुह्यता - यथार्थ याद को समझना भी अति आवश्यक है। अक्सर हम बच्चे समझते हैं, बाबा की बातें कर रहे हैं... मुख से बाबा-बाबा करते रहते हैं... कहीं घूमने-फिरने जाते हैं तो बाबा याथ होता ही है। हर बात में बाबा याद आ जाता है तो यही याद की यथार्थ विधि है। किन्तु यह तो याद का अंशमात्र भी नहीं है। ट्रांस में तो यह सब भी नहीं रहता। बस विचरते रहते हैं, सीन-सीनरियॉ देखते...।

22-06-2014 - अव्यक्त मुरली

23-06-2014
इस जन्म में जो सुधारेंगे तो वह सुधार 21 जन्मों तक चलना है। सबसे जरूरी बात है वाइसलेस बनना।
गुह्यता - कैसी कमाल है एक जन्म में सुधार करने से 21 जन्मों तक की निश्चिन्तता। बदल लो स्वयं को। छोड़ दो विकारों को। किसी काम के नहीं ये विकार। वाइसलेस दुनिया का आनन्द वाइसलेस आत्मा ही ले सकेगी।

23-06-2014
पाखाने में जाना भी अपवित्र बनना है इसलिये फौरन स्नान करना चाहिये। अपवित्रता अनेक प्रकार की होती है। किसको दुख देना, लड़ना-झगड़ना भी अपवित्र कर्त्तव्य है।... सब आदतें अब मिटानी हैं।
गुह्यता - पवित्रता की गहरी समझ होना भी अति आवश्यक है। शारीरिक पवित्रता तो आवश्यक है ही है, मगर साथ में मानसिक संकल्पों की पवित्रता, स्थूल धारणा में बहुत मददगार साबित होती है। सो पवित्रता की गुह्यता को जान उसे धारण कर लेना माना निश्चित तौर पर सम्पूर्णता को प्राप्त करना।

24-06-2014
मम्मा डे। विशेष मातेश्वरी जी के महावाक्य।

25-06-2014
अविनाशी बाप अविनाशी भारत खण्ड में ही आते हैं। किस तन में आते हैं?.... कोई साधू महात्मा में भी आ न सकें। वह हैं हठयोगी, निवृत्ति। मार्ग वाले।

बाकी रहे भारतवासी भक्त। अब भक्तों में भी किस भक्त में आयें? भक्त पुराना चाहिये, जिसने बहुत भक्ति की हो।... कल भी कोई को वैराग्य आये, भक्त बन जाये। वह तो इस जन्म का भक्त हो गया ना। उसमें आयेंगे नहीं। मैं उसमें आता हूँ, जिसने पहले-पहले भक्ति शुरू की।
गुह्यता - कितना अटूट निश्चय है भगवान का अपने बच्चे पर। कोई और रथ का ख्याल भी नहीं करते बाबा।

26-06-2014
तुम्हारी लड़ाई है ही बाप को याद करने में। पढ़ाई तो अलग है बाकी लड़ाई है याद में क्योंकि सब हैं देह अभिमानी। तुम अब बनते हो देही-अभिमानी।
गुह्यता - माया घड़ी-घड़ी याद में ही विघ्न डालती है। देह का भान आया और याद छू-मन्तर हो जाती है। आत्मा डिटैच हुई और टिक गई बाप की याद में।

27-06-2014
एक बाप को ही देखना है। बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों,मंजिल बहुत ऊँची है।
गुह्यता - साइड सीन देखने में आकर्षित जरूर करते हैं मगर हैं माया का छलावा। बाप से बुद्धि हटाये वापस पापकर्मों में धकेल देते हैं।

28-06-2014
अगर युगल तुम्हारा साथ नहीं देता तो तुम अपना पुरूषार्थ करो। युगल साथी नहीं बनते तो जोड़ी नहीं बनेगी। जिसने जितना याद किया होगा, दैवीगुण धारण किया होगा, उनकी ही जोड़ी बनेगी। जैसे देखो ब्रह्मा-सरस्वती ने अच्छा पुरूषार्थ किया है तो जोड़ी बनती है।
गुह्यता - जोड़ियाँ तो बनी-बनाई हैं आप पुरूषार्थ तो करो ना। बेस्ट ही बनेगी।

29-06-2014 - अव्यक्त मुरली

30-06-2014
सारा आसमान, धरती तुमको मिल जाती है। कोई की ताकत नहीं जो तुमसे छीन सके, पौना कल्प। उन्हों की तो जब वृद्धि होकर करोड़ों की अन्दाज में हों तब लश्कर ले आकर तुमको जीतें।
गुह्यता - वास्तव में छीनने-झपटने के संस्कार द्वापर के भी अन्त के जन्मों में इमर्ज होते हैं फिर छीनकर हासिल करने की प्रवृत्ति। डिवेलप होती है। बाबा संस्कारों को इतना शान्त बना देते हैं जो आज दिन तक भी हममें छीनकर पाने को 'छीन मिले तो खून' समान समझते हैं।

01-07-2014
तुम आये भी ऐसे थे, कोई की याद नहीं थी। गर्भ से जब बाहर निकले तब पता पड़ा कि यह हमारे माँ-बाप हैं, यह फलाना है। तो फिर अब जाना भी ऐसे है।

गुह्यता - जन्म... जीवन... जन... जहान..., जन्म हुआ तब जीवन मिला... सम्बन्धी भी मिले और जहान बना। ना पहले से कोई था, ना ही वापिस जाने के पहले कोई बाकी रहे। अगर रहा तो उसमें फंसकर रह जायेंगे।

02-07-2014
मुझे सर्विसएबुल बच्चे चाहियें। घर-घर में गीता पाठशाला चाहिऐ। और चित्र आदि न रखो सिर्फ बाहर में लिख दो। चित्र तो यह बैज ही बस है। पिछाड़ी में यह बैज ही तुमको काम में आयेगा। ईशारे की बात है।

गुह्यता - जिस दिन गली-गली में बाबा के बच्चे हो जायेंगे तो घर-घर में गीता पाठशाला ही हो जायेगी। कोने-कोने में बाबा का सन्देश पहुँच जायेगा। बस बैज की निशानी भर ही काफी होगी बाबा का परिचय देने के लिये।

03-07-2014
यह है इनका (ब्रह्मा का) अन्तिम जन्म। पहले-पहले यह विष्णु था, फिर 84 जन्मों के बाद यह (ब्रह्मा) बना है। इनका नाम मैंने ब्रह्मा रखा है। सबका नाम बदल दिया क्योंकि सन्यास किया ना। शूद्र से ब्राह्मण बने तो नाम बदल लिया। बाप ने बहुत रमणीक नाम रखे हैं।

गुह्यता - बाबा ने ईश्वरीय गोद देकर दिव्य जन्म, दिव्य नाम, दिव्य पहचान दी। और फिर दिव्य अलौकिक ब्राह्मण जीवन भी दिया। जन्म के बाद छठी की रस्म इसी का यादगार है।

04-07-2014
तुम बच्चों ने बाप को इनवाइट किया है बहुत समय से। अब फिर बाप को रिसीव किया है। बाप कहते हैं मैं तुमको गुल-गुल बनाकर फिर शान्तिधाम में रिसीव करूँगा।

गुह्यता - जो बाप समान सम्पूर्ण वा सम्पन्न बनेंगे उन्हें ही बाबा शान्तिधाम में रिसीव करते हैं। अभी बाबा सबको अपने घर शान्तिधाम आने का (Invitation) निमन्त्रण दे रहे हैं।

04-07-2014
रिटेल और होलसेल होता है ना! इतना ज्ञान सुनाते हैं जो सागर को स्याही

बनाओ तो भी अन्त न आये - यह हुआ रिटेल। होलसेल में सिर्फ कहते हैं मनमनाभव।

गुह्यता - होलसेल माना सार, रिटेल माना विस्तार। ज्ञान को विस्तार से समझाना हुआ रिटेल और योग-भट्ठी का अभ्यास अर्थात् होलसेल। मनमनाभव, अशरीरी भव, शान्ति में बैठ जाना माना होलसेल। हमें भी बाबा की दुकानों को सम्भालना है। दोनों प्रकार की दुकानदारी रिटेल और होलसेल सीखनी हैं।

05-07-2014

इतने बच्चे आयेंगे क्योंकि बाप तो अब कहाँ जायेगा नहीं। आगे तो बिगर कोई के कहे भी बाबा आपेही चले जाते थे। अभी तो बच्चे यहाँ आते रहेंगे। ठण्डी में भी आना पड़े। प्रोग्राम बनाना पड़ेगा। फलाने-फलाने समय पर आओ, फिर भीड़ नहीं होगी।

गुह्यता - साकार समय में दिये बाबा के डायरेक्शन्स् आज चरितार्थ अर्थात् सत्य सिद्ध हो रहे हैं। शुरू में बाबा को अनन्य बच्चों की खींच होती होगी और बाबा बच्चों से मिलन मनाने बच्चों के पास चल पड़ते थे। आज बाबा मिलन की विधि ऐसी ही बनी हुई है। प्रोग्राम अनुसार ही मिलने जाते हैं। इसलिये कहते कि बाबा ने आपको ढूँढा या आपने बाबा को!!!

06-07-2014 - अव्यक्त मुरली

07-07-2014

जो भी धर्म स्थापक हैं, वह आकर फिर अपना धर्म अपने समय पर स्थापन करेंगे। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार नहीं कहेंगे। नम्बरवार समय अनुसार आकर अपना-अपना धर्म स्थापन करते हैं।..... अभी तुम हो ज्ञान सूर्यवंशी जो फिर विष्णुवंशी बनते हो। अक्षर बड़ी खबरदारी से लिखने होते हैं, जो कोई भूल न निकाले।

गुह्यता - शब्दों के हेरफेर ने ही तो इतनी भूलें करायीं हैं। गीता का भगवान बदल दिया। शिव और शंकर को मिला दिया। भगवान को सर्वव्यापी कहकर ग्लानि का पात्र बना दिया। निराकार को साकारी देहधारी बना दिया। भगवान को भी दुःख देने वाला बना दिया जबकि वह तो सिर्फ सुख ही देते हैं।

08-07-2014

ज्ञान अर्थात् सृष्टि चक्र की नॉलेज जो अभी तुम धारण करते हो। विज्ञान माना शान्तिधाम। ज्ञान से भी तुम परे जाते हो।.... भगवान में तो ज्ञान विज्ञान दोनों हैं। जो जैसा होता है, वैसा बनाते हैं। यह हैं बहुत सूक्ष्म बातें। ज्ञान से

विज्ञान बहुत सूक्ष्म है। ज्ञान से भी परे जाना है। ज्ञान स्थूल है, हम पढ़ाते हैं, आवाज होता है ना। विज्ञान सूक्ष्म है इसमें आवाज से परे शान्ति में जाना होता है। जिस शान्ति के लिये ही भटकते हैं।

गुह्यता - बाबा तो ज्ञान का भी सागर है, शान्ति का भी सागर है। हमें भी ज्ञान की धारणा कराकर मास्टर ज्ञान सागर बना देते हैं। विज्ञान अर्थात् शान्तिधाम की पहचान देकर शान्तिधाम की राह दिखा देते हैं। स्वयं का परिचय देकर स्वयं से योग लगाना सिखाते हैं। शान्त बना देते हैं।

08-07-2014

तुम तो भट्ठी में पड़े, कोई की शक्ल नहीं देखते थे। कोई से बात नहीं करते थे। बाहर भी नहीं निकलते थे। तपस्या के लिये सागर के कण्ठे पर जाकर बैठते थे याद में। उस समय यह चक्र नहीं समझा था। यह पढ़ाई नहीं समझते थे। पहले-पहले तो बाबा से योग चाहिये। बाप का परिचय चाहिये। फिर पीछे टीचर चाहिये। पहले तो बाप के साथ योग कैसे लगायें, यह भी सीखना पड़े क्योंकि यह बाप है अशरीरी।

गुह्यता - कहते हैं आग में तपकर ही कुन्दन बनते हैं। अनन्य बच्चों की जैसी शाही पालना रही वैसे ही कड़े ते कड़े नियमों-मर्यादाओं भरी शिक्षा भी। तभी तो आज विश्व में चमक बिखेर रहे हैं।

09-07-2014

अब विद्या होती है दो प्रकार की। एक है जिस्मानी विद्या, जो स्कूलों-कॉलेजों में दी जाती है। अब उसको विद्या भवन कहते हैं।.... यह तो रूहानी विद्या भवन होना चाहिये। विद्या ज्ञान को कहा जाता है।... विद्या है गीता का ज्ञान। वह ज्ञान तो है ही एक बाप में।

गुह्यता - बाबा आते हैं तो रूहानी विद्या भवन की स्थापना करते हैं। जिस भवन में रूहों को ज्ञान इन्जेक्शन लगाया जाता है।

10-07-2014

कभी मुरली थोड़ी चलती है, यूँ तो भल 2-4 रोज मुरली न भी आये, तुम्हारे पास प्वाइंटस् रहती हैं। तुमको भी अपनी डायरी देखनी चाहिए। बैज पर भी तुम अच्छा समझा सकते हो।

गुह्यता - बाबा की मुरलियाँ अथाह हैं। वास्तव में ज्ञान की पराकाष्ठा चाहिये। बाबा तो सूक्ष्म में touch करके भी शिक्षा/directions दे देते हैं। बुद्धि द्वारा बाबा से जुड़े रहने से सर्व प्राप्तियाँ स्वतः होती रहेंगी।

11-07-2014
फकीर भी तुम हो, साहेब भी तुमको प्यारा है। अभी सबको छोड़ अपने को आत्मा समझ लिया है, ऐसे फकीरों को बाप प्यारा लगता है।
गुह्यता - बाबा को सच्चे, बेहद के वैरागी बच्चे ही सबसे प्यारे हैं।

12-07-2014
फालतू खर्चा नहीं करना चाहिये क्योंकि अबलायें ही मदद करती हैं स्वर्ग की स्थापना में। उनके पैसे ऐसे बरबाद भी नहीं करने चाहिए। वह तुम्हारी परवरिश करती हैं तो तुम्हारा काम है उन्हों की परवरिश करना। नहीं तो सौ गुणा पाप सिर पर चढ़ता है।
गुह्यता - टीचर्स प्रति बाबा की गुह्य समझानी। बड़ी परिपक्व अवस्था चाहिये।

13-07-2014 - अव्यक्त मुरली

14-07-2014
राजधानी स्थापन होती है, उसमें सब चाहियें। ऐसा समझकर शान्त में रहना चाहिए। कोई से भी खिटपिट की बात नहीं।..... कलंगीधर बनने वालों पर कलंक लगते हैं, इसमें नाराज नहीं होना चाहिये।
गुह्यता - हरेक ब्राह्मण अपनी चलन, अपने व्यवहार से अपने लिये प्रालब्ध बना रहा है। कोई कलंक आपको कलंकित नहीं कर सकता। कोयले की खान में दबकर भी हीरे की चमक नहीं जाती।

15-07-2014
एक है मानव बुद्धि, दूसरी है ईश्वरीय बुद्धि, फिर होगी दैवी बुद्धि। मानव बुद्धि है आसुरी बुद्धि। क्रिमिनल आइज्ड... देवतायें हैं वाइसलेस, सिविल आइज्ड... कलयुगी मनुष्य हैं विशश क्रिमिनल आइज्ड... उनके ख्यालात ही विशश होंगे।
गुह्यता - मानव बुद्धि- दूषित, कुपित, भ्रष्ट, कपटी, हिंसक, श्रापित करने वाली। दैवी बुद्धि - निर्मल, निश्छल, कमल समान।
ईश्वरीय बुद्धि - स्वच्छ, शुद्ध, पवित्र, निस्वार्थ, निर्मान, निरहंकारी, वरदानी।

16-07-2014
भारत है वण्डर ऑफ वर्ल्ड। वह हैं माया के 7 वण्डर्स। ईश्वर का वण्डर एक ही है। बाप एक, उनका वण्डरफुल स्वर्ग भी एक है।
गुह्यता - बाबा का वण्डर स्वर्ग जिसकी आज दिन तक भी सब कल्पना करते हैं। उसे देखने की चाहना रखते हैं। रामराज्य की मिसालें देकर वह

रामराज्य फिर से स्थापन करना चाहते हैं। किन्तु बाबा का वण्डर तो बाबा के सिवाय कोई और स्थापन कर न सके।

17-07-2014
सब आकर यह मन्त्र ले जाते हैं। बाप को याद करना है, जो याद करेंगे वह अपने धर्म में ऊँच पद पायेंगे।
गुह्यता - सब अर्थात् हरेक धर्म से ऊँच पद वाली आत्मायें आकर डायरेक्ट बाप का परिचय लेंगी और अपनी-अपनी समझ अनुसार बाप को याद करने लग पड़ेंगी। फिर नम्बरवार ऊँच पद की अधिकारी बन पार्ट री-प्ले करेंगी।।

18-07-2014
एक-एक आत्मा इण्डिपेन्डेण्ट है। भाई-बहन का भी नाता छुड़ा दिया। भाई-भाई समझो फिर भी क्रिमिनल Eye छूटती नहीं है। वह अपना काम करती रहती है। इस समय **मनुष्यों के अंग सब क्रिमिनल हैं**। किसको लात मारी, घूँसा मारा तो क्रिमिनल अंग हुआ ना। **अंग-अंग क्रिमिनल हैं**। वहाँ कोई भी अंग क्रिमिनल नहीं होगा। यहाँ अंग-अंग से क्रिमिनल काम करते रहते हैं। सबसे जास्ती क्रिमिनल अंग कौन सा है? आँखें।..... तब सूरदास की भी कहानी है।
गुह्यता - यह दसों इन्द्रियाँ ही हमारी सबसे बड़ी दुश्मन हैं। मैत्रीभाव से इन्हें अपना बना लो तो यहीं दैवी चलन प्रत्यक्ष होने लगेगी।

19-07-2014
ब्रह्म तत्व तो बहुत बड़ा लम्बा-चौड़ा है। जैसे आकाश में स्टॉर्स देखने में आते हैं, वैसे वहाँ भी छोटे-छोटे स्टॉर मिसल आत्मायें हैं। वह है आसमान के पार, जहाँ सूर्य चाँद की रोशनी नहीं।
गुह्यता - सारे अन्तरिक्ष को ढकने वाला एक आकाश तत्व। और फिर उस आकाश तत्व के भी ऊपर ब्रह्म महतत्व। जैसे धरती से सितारे देखने मे आते, वैसे ही ब्रह्म तत्व में आत्मा अपने-अपने सैक्शन में अपने स्थान पर जाकर टिक जाती है स्टार मुआफिक।

20-07-2014 - अव्यक्त मुरली

21-07-2014
पढ़ाई में दिन-प्रतिदिन आगे बढ़ना है। पीछे थोड़े ही हटना है। दैवीगुणों के बदल आसुरी गुण धारण करना - यह तो पीछे हटना हुआ ना।
गुह्यता - आत्मा ने पुरुषार्थ कर जो स्वयं में स्थापना और विनाश किया है

अर्थात् जो आसुरी संस्कार विनाश कर दैवी संस्कारों की धारणा की है, वह सदा कायम रहे। इसके लिये विष्णु बन पालना करो। आसुरी संस्कारों का पुनः इमर्ज होना अर्थात् पुरूषार्थ में पिछड़ना। आगे बढ़ते-बढ़ते एक दिन नर से नारायण बन ही जायेंगे।

22-07-2014
इस समय सम्पूर्ण सिविलाइज्ड कोई है नहीं। वह तो बिल्कुल जो पास विद् ऑनर 8 रत्न हैं, उनकी ही इस समय सिविलाइज्ड हो सकती है। 108 भी नहीं। जरा भी चलायमानी न आये, बहुत मुश्किल है। कोई विरले ऐसे होते है।
गुह्यता - क्रिमिनल ख्यालात (मुख्यतः पवित्रता) जरा भी इमर्ज न हों। संकल्प में भी स्थान न मिले, ऐसी धारणा चाहिये तब माला का दाना बन सकेंगे।

23-07-2014
अमृतवेला सबसे शुभ मुहूर्त माना जाता है। वो लोग कृष्ण का जन्म 12 बजे मनाते हैं परन्तु वह प्रभात तो हुई नहीं। प्रभात सवेरे 2-3 बजे को कहा जाता है जबकि सिमरण भी कर सके। ऐसे थोड़ेही 12 बजे विकार से उठकर कोई भगवान का नाम भी लेते होंगे, बिल्कुल नहीं। अमृतवेला 12 बजे को नहीं कहा जाता। उस समय तो मनुष्य पतित गंदे होते हैं। वायुमण्डल ही सारा खराब होता है। अढ़ाई बजे थोड़े ही कोई उठता है। 3-4 बजे का समय अमृतवेला है।
गुह्यता - अमृतवेला को जानकर, समझकर तब कोई नियम बनाना चाहिये। एक-दूसरे को देखकर 2-3 बजे उठना,इसको कोई समझदारी नहीं कहा जाता।

24-07-2014
अन्दर में यह ख्याल आना चाहिऐ हम कौन थे, किसके बच्चे थे? बाप ने हमको सारे विश्व का राज्य दिया फिर कैसे हम रावण राज्य में जकड़ गये। कितने दुःख देखे, कितने गन्दे कर्म किये। सृष्टि दिन-प्रतिदिन गिरती ही गई है। मनुष्यों के संस्कार दिन-प्रतिदिन क्रिमिनल होते गये हैं।
गुह्यता - घड़ी-घड़ी 84 जन्मों का स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। अपने उच्च स्वरूप को स्मृति में लाओ तो क्रिमिनल संस्कार बदल दैवी बन जायेंगे।

24-07-2014
पुराने ते पुराने यह लक्ष्मी-नारायण होंगे या इन्हों की कोई वस्तु होगी। सबसे पुराने ते पुराना है श्रीकृष्ण। नये से नया भी श्रीकृष्ण था।
गुह्यता - 5000 वर्ष से पुरानी कोई भी चीज हो नहीं सकती। सबसे मुख्य बात

ड्रामा हूबहू रिपीट होता है अर्थात् जो संख्या पिछले कल्प में बोली होगी, वोही हर कल्प बोलेंगे।

25-07-2014
यहाँ डबल जेल हैं। सतयुग में न कोर्ट है, न पाप आत्मायें हैं, न तो रावण की जेल ही है। रावण की है बेहद की जेल। सभी 5 विकारों की रस्सियों में बंधे हुऐ हैं।
गुह्यता - एक देह की जेल दूसरी फिर रावण के सम्बन्ध-सम्पर्क रूपी जेल। जो उस जेल में भेजने में भी देरी नहीं करते।

25-07-2014
जल्दी में जो शरीर छोड़ गये वह फिर भी बड़े होकर आये कुछ ज्ञान उठा सकते हैं। जितना देरी होती जाती है तो फिर पुरूषार्थ तो कर न सकें। कोई मरे फिर आकर पुरूषार्थ करे सो तो जब आरगन्स बड़े हो, समझदार हों तब कुछ कर भी सकें। देरी से जाने वाले तो कुछ सीख नहीं सकेंगे। जितना सीखे, उतना सीखे।
गुह्यता - जीवन का भरोसा नहीं है इसलिये जो करना है, अटेन्शन रखकर इसी जन्म में करने का लक्ष्य रखो। करते चलो तो समय भी आपेही साथ देगा। पुरूषार्थ तीव्र हो जायेगा।

26-07-2014
5,000 वर्ष में कितने मिनट, घण्टे, सेकण्ड हैं, एक बच्चे ने सब धर्म वालों का हिसाब निकालकर भेजा था, इसमें भी बुद्धि व्यर्थ की होगी।
गुह्यता - मुख्य जो सार है वह समझना काफी हो जाता है बाकी डिटेल में बुद्धि ले जाना भी जैसेकि व्यर्थ हो जाता है।

27-07-2014 - अव्यक्त मुरली

28-07-2014
हमको बाप जैसा सम्पूर्ण ज्ञान सागर बनना है। फुल नॉलेज समझ जायेंगे तो जैसेकि बाप को नॉलेज से खाली कर देंगे फिर वह शान्त हो जायेंगे। ऐसे नहीं, उनके अन्दर ज्ञान टपकता होगा। सब कुछ दे दिया फिर उनका पार्ट रहा साइलेन्स का। जैसे तुम साइलेन्स में रहेंगे तो ज्ञान थोड़े ही टपकेगा।
गुह्यता - हम चिड़ियाओं ने सागर को पूरा हप किया था। पूरा हप करना माना उससे सब ज्ञान, गुण, शक्तियाँ ले लेना। बाप समान बन जाना।

29-07-2014
स्वर्ग में जो दास-दासियाँ होंगे वह भी, दिल पर चढ़े हुऐ होंगे। ऐसे नहीं कि सब आ जायेंगे।
गुह्यता - दास-दासियाँ भी 15-16 कलाओं से सम्पन्न तो होंगे ना। किसी कुकर्म के कारण अपना पद भले गंवा दें, फिर भी धारणायें तो सब अच्छी रीति समझी होंगी तभी तो स्वर्ग का मुँह देख सकेंगे। सेमी स्वर्ग किस काम का!!

30-07-2014
योग में रह बताओ तो सबको टाइम आदि ही भूल जाये। कोई कुछ कह न सके। 15-20 मिनट के बदले घण्टा भी सुनते रहें परन्तु वह ताकत चाहिये। देह-अभिमान नहीं होना चाहिये।
गुह्यता - देही अवस्था में बाबा निरन्तर सारथी बन रथ पर सवार रहते हैं। तो जो भी बोलो ऐसा अनुभव करेंगे जैसे बाबा ने ही सुनाया। मैंने सुनाया, यह भान छू भी न सके।

30-07-2014
कुछ भी आफतें आती हैं तो मनुष्य भक्ति में लग जाते हैं, भगवान को राजी करने के लिये। ऐसे कोई भगवान राजी होता नहीं है। यह तो ड्रामा में नूँध है। भक्ति से कभी भगवान राजी नहीं होता।
गुह्यता - ज्ञान मार्ग में भी कुछ हुआ तो लगे बाबा को पुकारने। यह भी तो भक्तपने के ही संस्कार हैं ना।

31-07-2014
तुम पैसे कहाँ तक देंगे! पैसे देना भी रिश्वत है। बेकायदे हो जाता।... तुम भी रिश्वत दो, वो लोग भी रिश्वत दें तो दोनों एक हो जायें। तुम्हारी बात है योगबल की। योगबल इतना चाहिये जो तुम कोई से भी काम करा सको।
गुह्यता - जो कार्य कोई ना करा सके वह कार्य बाबा की याद से सहज ही हो जाता है। बस योगबल की पराकाष्ठा हो। आत्मा को 'हाँ' का ही वायब्रेशन मिलेगा और काम हो जायेगा।

01-08-2014
मनुष्य मरते हैं तो खाली हाथ जाते हैं। साथ में कुछ भी ले नहीं जायेंगे। तुम्हारे हाथ भरतू जायेंगे। इसको कहा जाता है सच्ची कमाई।
गुह्यता - सच्ची कमाई है आत्मा में ज्ञान और योग की जमा। बाकी स्थूल पदार्थ तो प्रकृति के सदा मौजूद हैं ही।

02-08-2014
सोना, चाँदी, ताँबा गया, अब तो कागज ही कागज है। कागज पानी में बह जाये तो पैसे कहाँ से मिलें। सोना तो बहुत भारी होता है, वह वहाँ ही पड़ा रहता है। आग भी सोने को जला न सके।
गुह्यता - जब कागज भी जलकर खाक हो जायेगा तो फिर सोना ही बाकी रहेगा पुर्नस्थापना के लिये। फिर सब स्थूल चीजें महल, विमान आदि सोने का ही बनायेंगे।

03-08-2014 - अव्यक्त मुरली

04-08-2014
बाप अनायास ही आ जाते हैं। ढिंढोरा थोड़े ही पीटते हैं कि मैं आ रहा हूँ। अनायास ही आकर प्रवेश करते हैं। वह आवाज तो कर ही नहीं सकते जब तक उनको आरगन्स न मिलें। आत्मा भी आरगन्स बिगर आवाज नहीं कर सकती है।
गुह्यता - अन्य आत्माओं के आने के पहले चुरपुर तो होती है। परमात्मा के अवतरण की तो बड़ी गुह्य रमणीक विधि है। आने से ही पता चल सके कि आ चुके हैं, वो भी तब जब आपेही बतावें।

05-08-2014
कितने भी संकल्प, विकल्प, तूफान आयें, सारी रात संकल्पों में नींद फिट जाये तो भी घबराना नहीं है। बहादुर रहना है। बाबा कह देते हैं यह आयेंगे जरूर। स्वप्न भी आयेंगे, इन सब बातों में डरना नहीं है।
गुह्यता - जितना ही संकल्प-विकल्प, उतनी ही पावरफुल बाबा की याद हो तब टिक सकें। अचल, अडोल, स्थेरियम, निडर हो रह सकें।

06-08-2014
कह देते रघुपति राघव राजा राम। अब वह त्रेता का राजा है। सारी बात ही मुंझा दी है। सब ताली बजाते गाते रहते हैं। हम भी गाते थे, एक वर्ष खादी का कपड़ा आदि पहना। बाप बैठ समझाते हैं कि यह भी गाँधी का फालोअर बना था, इसने तो सब कुछ अनुभव किया है। फर्स्ट सो लास्ट बन गया है। अब फिर फर्स्ट बनेगा।
गुह्यता - ब्रह्मा बाबा ने लेखराज के जीवन में हर प्रकार का अनुभव किया था। तभी तो सत बाप कहते कि रथ भी मैंने अनुभवी लिया है, जो सब अनुभव कर चुका है। ड्रामानुसार एकदम परफेक्ट।

07-08-2014
देवताओं के ही काले शरीर बनाते हैं, क्राइस्ट, बुद्ध आदि को कभी काला देखा? देवी-देवताओं के चित्र काले बनाते हैं।
गुह्यता - बुद्ध आदि धर्म स्थापक ना कभी पावन (गोरे) बनते, ना हीं उनके काले चित्रों की दरकार होती। हम गोरे भी बनते तो काले भी होते, इसलिये ही हमारे यादगार भी ऐसे बनाते हैं।

08-08-2014
ब्रह्मा, विष्णु और शिव का कितना सम्बन्ध है। यह ब्रह्मा फिर विष्णु बनने वाला है और इसमें शिव की प्रवेशता है।
गुह्यता - वास्तव में डायरेक्ट कनेक्शन होता है ब्रह्मा, विष्णु और शिवबाबा का परन्तु शिवबाबा का पार्ट यथार्थ न जानने-समझने के कारण शंकर के साथ जोड़कर सारा मामला ही उलझा दिया है।

09-08-2014
बाबा नये-नये सेन्टर्स पर अच्छी-अच्छी ब्राह्मणियों को रखते हैं इसलिए कि जल्दी-जल्दी आप समान बनाकर फिर और सेन्टर्स पर भागना चाहिऐ सर्विस को उठाने लिये। देखेंगे कौन-कौन ठीक रीति मुरली पढ़कर सुना सकते हैं, समझा सकते हैं तो उनको कहेंगे अब तुम यहाँ बैठ क्लास चलाओ। ऐसी ट्रायल कराकर, उनको बिठाकर चला जाना चाहिये और जगह सेन्टर जमाने। ब्राह्मणियों का काम है एक सेन्टर जमाया फिर जाकर और सेन्टर जमावें। एक-एक टीचर को 10-20 सेन्टर्स स्थापन करने चाहिऐ।... परन्तु ऐसे आनेस्ट कोई बिरले रहते हैं। आनेस्ट उसको कहा जाता है जो सारे यूनिवर्स की सेवा करे।.. एक ही स्थान पर अटक नहीं जाना चाहिये।.. ऐसे बच्चे को कहेंगे फूल।
गुह्यता - फूल अर्थात् महक फैलाये। दूर-दूर तक सुगन्ध फैले। ऐसा चैतन्य फूल हमें बनना है।

10-08-2014 - अव्यक्त मुरली

11-08-2014
रावण का जन्म होता है त्रेता और द्वापर के संगम पर। जैसे यह पुरानी दुनिया और नई दुनिया का संगम है ना, ऐसे वह भी संगम हो जाता है।
गुह्यता - यह डिस्टर्ब करने वाला पीरियड होता है जो मेन्टली (दिमागी तौर पर) परेशानी पैदा करने वाला समय बन जाता है जिससे डर पैदा होता है और भक्ति के संस्कार भी इमर्ज होने लगते हैं फिर धीरे-धीरे दैवी संस्कार

बदलकर विकारी होने लगते हैं और रावण राज्य की स्थापना हो जाती है।

12-08-2014
जब तक निराकारी दुनिया से सब आत्मायें आ जायेंगी तब तक तुम इम्तहान में भी नम्बरवार पास होते जायेंगे।
गुह्यता - उधर पुरानी दुनिया का पार्ट पूरा होता, इधर नई दैवी दुनिया के स्थापना की तैयारियाँ पूरी होंगी। दोनों तरफ के खेल अन्त में मर्ज होंगे फिर स्थापना और विनाश की वण्डरफुल सीन देखेंगे।

13-08-2014
बुद्धू भी न बनो। कहते हैं अमरनाथ पर भी कबूतर होते हैं। पिज़न पैगाम पहुँचाते हैं। ऐसे नहीं, परमात्मा का पैगाम ऊपर से कबूतर लायेंगे।... उनको सहज रीति दाना मिलता है तो और कहाँ भटकने की दरकार नहीं। तुमको भी यहाँ दाना मिलता है।... तुम तो चैतन्य हो, तुमको अविनाशी ज्ञान रत्नों का दाना मिलता है।
गुह्यता - हम चैतन्य कबूतर ही ज्ञान की गुटर-गूँ करके सर्व को परमात्म सन्देश पहुँचाते हैं। और विश्व की बादशाही का दाना चुगते हैं।

14-08-2014
जब तक बेहद का बाप न आये तो पेट ही न भरे। पेट ही सारा खाली हो जाता है, बाप आकर पेट भरते हैं। हर बात में पेट ऐसा भर देते हैं जो तुम बच्चों को कोई चीज की दरकार ही नहीं। सब आशायें पूरी कर देते हैं। तृप्त आत्मा हो जाती है।... यह है बेहद की तृप्ति।
गुह्यता - हमारा पेट अर्थात् झोली खाली होती तो उसे भरने वाला आ जाता। आकर भरपेट खुराक देकर फिर लुप्त हो जाता। कैसी वण्डरफुल लीला है।

15-08-2014
बाप के कहने का तीर कड़ा लगता है। फर्क तो रहता है।
गुह्यता - बाबा की कही बात सीधी दिल को लगती है।

16-08-2014
सहज राजयोग के ज्ञान का नाम रख दिया जाता है गीता। यह तुम्हारी पाठशाला है। तुम कहेंगे हमारे मम्मा बाबा की पाठशाला है। दोनों ही पढ़ाते हैं। दोनों ने यह रूहानी कॉलेज वा यूनिवर्सिटी खोली है। दोनों इकट्ठे पढ़ाते हैं। ब्रह्मा ने एडाप्ट किया है ना। यह बहुत गुह्य ज्ञान की बातें हैं।

गुह्यता - शिवबाबा बहुत ही सहज भाषा में सब बातें हमें समझा देते हैं और राजयोगी सो भविष्य राजतिलकधारी बना देते हैं।

17-08-2014 - अव्यक्त मुरली

18-08-2014
यह ब्रह्मा की भृकुटी है सतगुरू की दरबार। यह इस आत्मा का भी दरबार है। फिर सतगुरू ने भी आकर इनमें प्रवेश किया है, इसको रथ भी कहते हैं, दरबार भी कहते हैं।
गुह्यता - भृकुटी सिंहासन पर विराजमान शिवबाबा अपने कर्मेन्द्रियों रूपी दरबारियों द्वारा विश्व की समस्त आत्माओं की ज्ञान और योग से पालना करते हैं।

19-08-2014
शिवबाबा ने यह परिवार स्थापन किया। सच्चा-सच्चा परिवार तो तुम ब्राह्मणों का है। शिवबाबा का परिवार तो सालिग्राम हैं। फिर हम भाई-बहन का परिवार बन जाते हैं।
गुह्यता - सारे विश्व के फूल चुनकर शिवबाबा हम बच्चों को पवित्र ईश्वरीय परिवार की अनुभूति कराते हैं। ऐसा प्यार हम बच्चों में भर देते हैं जोकि भविष्य आधाकल्प 21 जन्मों तक परिवार में प्यार, सौहार्द बना रहता है।

20-08-2014
बच्चा पैदा हुआ, बाप जान जाते हैं वारिस ने जन्म लिया। सारी मिल्कियत याद आ जायेगी। तुम भी अकेले अलग-अलग बच्चे हो, अलग-अलग वर्सा मिलता है ना। अलग-अलग याद करते हो ना। हम बेहद बाप के वारिस हैं।
गुह्यता - जिसका जैसा, जितना पुरूषार्थ उतना ही वर्से का हकदार/मालिक बनते हैं। बेस्ट कर्म द्वारा श्रेष्ठ वर्से का मालिक बनने का राज बाप ही समझाते हैं। और जो श्रेष्ठ कर्म बाबा का बनने के बाद हम करते हैं उतना भविष्य का वर्सा निश्चित हो जाता है इसीलिये इसे अविनाशी वर्सा कहते हैं।

21-08-2014
ड्रामा अनुसार जिस समय, जिसको जाना होता है वह चला जाता है। काल कोई पकड़ता नहीं है। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। काल कुछ भी नहीं है। यह तो कथायें बैठ बनाई हैं।

गुह्यता - ड्रामा पर आपेही शरीर छूट जाता है। यह गुह्य राज न जानने के कारण ही काल-महाकाल जैसी बनावटी/डरावनी बातों का जाल बुन रखा है।

22-08-2014
मूलवतन में भी जो संख्या है, वह एक्यूरेट होगी। कम जास्ती नहीं। नाटक में एक्टर्स का अन्दाज बिल्कुल पूरा है परन्तु समझ नहीं सकते। जितने भी हैं, उतने एक्यूरेट हैं फिर भी वह आकर पार्ट बजायेंगे।
गुह्यता - जो संख्या एक बार ड्रामा में आ गई वह संख्या कभी भी बदलती नहीं है। बदली-सदली की कोई मार्जिन नहीं रहती। बनी बनाई बन रही, अब कुछ बननी नाही... चिन्ता ताकी कीजिये, जो अनहोनी होय।। कल्प-कल्प सिर्फ रिपीट होती है और होती रहेगी। अगले कल्प में 5000 वर्ष जुड़ेंगे नहीं। संख्या उतनी ही रहेगी जो इस कल्प में है।

23-08-2014
पीछे आने वाले इतने पतित नहीं होते। भारतवासी ही बहुत सतोप्रधान थे, वही फिर बहुत जन्मों के अन्त में तमोप्रधान बने हैं, और धर्म स्थापकों के लिए ऐसे नहीं कहेंगे। वह न इतना सतोप्रधान बनते, न इतना तमोप्रधान बनना है। न बहुत सुख देखा है, न बहुत दुख देखेंगे। सबसे जास्ती तमोप्रधान बुद्धि किसकी बनी है? जो पहले-पहले देवता थे, वही सब धर्मों से जास्ती गिरे हैं।
गुह्यता - हम ही थे, हम ही होंगे। हमसे ही सतोप्रधानता थी, फिर हमने ही तमोप्रधानता लाई। अब हमें ही पुनः सतोप्रधानता लानी है, स्वयं सतोप्रधान बनकर..। गिरे हुऐ को उठाना पुण्य का कर्म कहलाता है सो स्वयं को उठाओ।

24-08-2014 - अव्यक्त मुरली

25-08-2014
जो जितना पुरूषार्थ करेंगे उतना जीत पायेंगे। मूल बात है काम पर जीत पाने से ही जगतजीत बनेंगे। यह तो बच्चों पर रहा। जवानों को बहुत मेहनत करनी पड़ती है, बूढ़ों को कम। वानप्रस्थ अवस्था वालों को और कम। बच्चों को बहुत कम।
गुह्यता - जितना ज्यादा तमोप्रधान दुनिया का अनुभव, उतनी ही अधिक मेहनत उसे भूलने की करनी पड़ती है। छोटे बच्चे तो इनोसेन्ट होते हैं। ना अनुभव किया, ना ही भूलने का पुरूषार्थ करना पड़े। वह सबसे पवित्र दुनिया है। उसके लायक बनने के लिये पवित्रता की धारणा ऐसी हो जो 2500 वर्ष तक अपवित्र संकल्प उठ ना सके।

26-08-2014
भल भाषण में तो बहुत होशियार हैं, प्रदर्शनी भी समझा लेते हैं परन्तु याद है नहीं, इसमें फेल हो पड़ते हैं। यह भी जैसे डिसरिगार्ड करते हैं। अपना ही करते हैं, शिवबाबा का तो डिसरिगार्ड होता नहीं।
गुह्यता - बाबा को याद ना करना माना अपना ही डिसरिगार्ड करना अर्थात् अपना भविष्य ऊँच पद खोना। बाबा का इसमें क्या Loss...!!!

27-08-2014
बाप समझाते हैं जब तक विनाश नहीं हुआ है तब तक तुम कर्मातीत अवस्था को पा नहीं सकेंगे। भल कितना भी माथा मारो। सारा समय शिवबाबा को बैठ याद करो और कोई बात ही नहीं करो। बस बाबा लड़ाई से पहले मैं कर्मातीत अवस्था को पाकर दिखाऊँगा, ऐसा कोई निकले-ऐसा ड्रामा में हो नहीं सकता। पहले नम्बर में तो एक ही जाना है।
गुह्यता - कर्मातीत हो जायें फिर तो इस दुनिया में रह ना सकें। जायेंगे कहाँ! शरीर तो फिर भी लेना पड़े। गुप्त पार्ट इस ड्रामा में एक ब्रह्मा का ही है सो बजा रहे हैं।

28-08-2014
बाबा ने समझाया था उद्घाटन तो बाप ने कर दिया है। बाकी तुम निमित्त कर रहे हो। फाउण्डेशन लगा दिया है, बाकी अब सर्विस स्टेशन का उद्घाटन होता है।
गुह्यता - यज्ञ का कहो अथवा यूनिवर्सिटी का कहो अथवा नई दुनिया का कहो। वह उद्घाटन तो पवित्र आत्मा ही कर सकती है जोकि बाप के सिवाय कोई है नहीं।

29-08-2014
भोग ले जाते हैं, गुम हो जाते हैं सूक्ष्मवतन में। इसमें क्या होता है? जितना समय वहाँ हैं विकर्म विनाश हो न सकें। शिवबाबा को याद कर न सकें। न बाबा की वाणी सुन सकेंगे। तो घाटा पड़ जाता है।... इसलिए बाबा कहते हैं जाओ, फौरन आओ, बैठो नहीं।
गुह्यता - बाबा सेकण्ड-सेकण्ड का हिसाब रखते हैं। बच्चे का सेकण्ड भी वेस्ट ना हो। इसलिऐ समझाते रहते हैं। कभी भी कहीं भी जिस सेवा के अर्थ जाओ वह करो और फौरन वापस आ जाओ। बैठकर फालतू टाइम वेस्ट मत करो।

30-08-2014
यह बच्चियाँ भी भोग लेकर जाती हैं तो वहाँ महफिल होती है। ब्राह्मणों और देवताओं का मेला लगता है। भोजन स्वीकार करने आते हैं।
गुह्यता - इसीलिए गायन है कि देवतायें भी ब्रह्मा भोजन के लिए तरसते हैं।

31-08-2014 - अव्यक्त मुरली

01-09-2014
ज्ञान के अस्त्र-शस्त्र हैं। ज्ञान, विज्ञान, याद और ज्ञान के कितने बड़े जबरदस्त अस्त्र-शस्त्र हैं। सारे विश्व पर तुम राज्य करते हो। देवताओं को कहा जाता है अहिंसक।
गुह्यता - ज्ञान की धारणा युक्त प्वाइंटस् ही अस्त्र हैं। स्वदर्शन चक्र, अपने अनादि सो आदि पवित्र स्वरूप की स्मृति, 5 स्वरूपों का अभ्यास, बिन्दु स्वरूप का अभ्यास, आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान आदि, यही तो हम ब्राह्मण आत्माओं के अस्त्र-शस्त्र हैं।

02-09-2014
बाजोली... पहले आता है माथा चोटी। ब्राह्मणों को हमेशा चोटी होती है। तुम हो ब्राह्मण। पहले शूद्र अर्थात् पैर थे। अभी बने हो ब्राह्मण चोटी फिर देवता बनेंगे। देवता कहते हैं मुख को, क्षत्रिय भुजाओं को, वैश्य पेट को, शूद्र पैर को। शूद्र अर्थात् क्षूद्र बुद्धि, तुच्छ बुद्धि। तुच्छ बुद्धि उनको कहते हैं जो बाप को नहीं जानते और ही बाप की ग्लानि करते रहते हैं।
गुह्यता - चेहरे पर पवित्रता और दिव्यता की चमक, रूहानी मुस्कान, मजबूत सीना क्षत्रिय वंश की निशानी। माया के कैसे भी वार को सहन करने की यादगार, योग रूपी कवच को धारण किये हुये। फिर नीचे गिरे तो विकारों की प्रवेशता और अन्ततः चरणों में गिरकर माथा झुकाने का संस्कार।

03-09-2014
जब रूद्र यज्ञ रचते हैं तो लाखों सालिग्राम बनाते हैं। देवियों के कब लाखों चित्र नहीं बनायेंगे।.... उनका कोई फिक्स दिन नहीं होता है। कोई मुहूर्त्त आदि नहीं होता है। जैसे देवियों की पूजा फिक्स टाइम पर होती है। सेठ लोगों को तो जब ख्याल में आयेगा कि रूद्र या सालिग्राम रचें तो ब्राह्मण बुलायेंगे।... उनकी तिथि तारीख कोई मुकर्रर नहीं होती। ऐसे भी नहीं कि शिव जयन्ती पर ही रूद्र पूजा करते हैं। नहीं, अक्सर करके शुभ दिन बृहस्पति को ही रखते हैं।

गुह्यता - सर्व देवी-देवताओं के जन्म की तिथि-तारीख सब स्पष्ट रहती हैं इसलिये पूजा का भी दिन-तारीख-समय सब मुकर्रर कर देते हैं। बाबा के तो अवतरण की तिथि-तारीख कोई मुकर्रर नहीं होती। इसलिये जब भी संकल्प उठता तो रूद्र पूजा रख लेते हैं। अक्सर करके शुभ दिन सतगुरूवार का मानते हैं।

04-09-2014

हर प्रकार की सम्भाल भी होती रहती है। कोई विकारी यहाँ अन्दर (मधुबन में) आ न सके। बीमारी आदि में भी विकारी मित्र-सम्बन्धी आयें, यह तो अच्छा नहीं। पसन्द भी हम न करें।... ऐसे नहीं, हम बीमार हैं इसलिऐ मित्र-सम्बन्धी आदि आयें देखने के लिये। नहीं, उन्हों को बुलाना, कायदा नहीं। कायदेसिर चलने से ही सदगति होती है। नही ंतो मुफ्त अपने को नुकसान पहुँचाते हैं। परन्तु तमोप्रधान बुद्धि यह समझते नहीं हैं। ईश्वर राय देते हैं तो भी सुधरते नहीं। बड़ा खबरदारी से चलना चाहिये। यह है होलीएस्ट ऑफ होली स्थान।

गुह्यता - जब बाबा के बन गये फिर पुराने जन्म के देह के पुराने सम्बन्धी इतने पवित्र स्थान पर बिगर किसी धारणा, शुद्धता के आवे, यह श्रीमत के प्रमाण कर्त्तव्य नहीं कहा जा सकता। और हमारा ही सूक्ष्म अकल्याण होता है। इसलिये बाबा हमारे ही घाटे-नफे को ख्याल करके समझानी देते हैं।

05-09-2014

सबको एक जैसी बुद्धि हम दें तो सब नारायण बन जायेंगे।... बनेंगे तो पुरूषार्थ अनुसार ना। अगर सब हाथ उठायें- हम नारायण बनेंगे तो बाप को अन्दर में हंसी आयेगी ना। सब एक जैसे बन कैसे सकते। नम्बरवार तो होते हैं ना।

गुह्यता - बाबा सत्य को जानते भी बच्चों की नासमझी पर बस मुस्कुरा भर देते हैं। पुरूषार्थ से भविष्य प्रालब्ध बनती है। अपना पुरूषार्थ अगर चैक करने का अभ्यास हो तो ऊँच ते ऊँच प्रालब्ध बना सकते हैं। मगर फिर पुरूषार्थ भी वैसा ही करना पड़े ना।

06-09-2014

यहाँ अलग-अलग होकर बैठना है। अंग से अंग नहीं मिलना चाहिये क्योंकि हर एक की अवस्था में, योग में रात-दिन का फर्क है।... तो जो बिल्कुल याद नहीं करते - वह हैं पाप आत्मा, तमोप्रधान और जो याद करते हैं वह हो गये पुण्य आत्मा, सतोप्रधान। बहुत फर्क हो गया ना। घर में भल इकट्ठे रहते हैं

परन्तु फर्क तो पड़ता है ना इसलिए ही तो भागवत में आसुरी नाम गाये हुए हैं। इस समय की ही बात है।

गुह्यता - अपवित्र की तो दृष्टि भी नहीं पड़नी चाहिये। अंग छूना तो जैसेकि क्रिमिनल एक्ट हो जाता है। अपनी व अन्य ब्राह्मण आत्माओं की पवित्रता का मान रखना/ख्याल रखना हरेक की पर्सनल जिम्मेवारी है।

07-09-2014 - अव्यक्त मुरली

08-09-2014

जैसे यह बेहद का ज्ञान सागर है, वह है पानी का बेहद का सागर। आकाश तत्व भी बेहद है। धरती भी बेहद है, चलते जाओ। सागर के नीचे फिर धरती है। पहाड़ी किस पर खड़ी है? धरती पर। फिर धरती को खोदते है तो पहाड़ निकल आता, उसके नीचे फिर पानी भी निकल आता है। सागर भी धरनी पर है। उसका कोई अन्त पा नहीं सकते हैं कि कहाँ तक पानी है, कहाँ तक धरती है? परमपिता परमात्मा जो बेहद का बाप है, उनके लिऐ बेअन्त नहीं कहेंगे।.... बाकी यह आकाश बेअन्त है।

गुह्यता - प्रकृति के तत्व बेअन्त हैं किन्तु प्रकृतिपति, प्रकृति का मालिक उसका अन्त पाना मुश्किल नही ंतो सहज भी नहीं। बाप को जानने के लिये समान बनना पड़े।

09-09-2014

पुराने-पुराने बच्चे कितने अच्छे थे, उनको माया ने हप कर लिया। शुरू में कितने आये। फट से आकर बाप की गोद ली। भट्ठी बनी। इसमें सबने अपना लक (भाग्य) आजमाया फिर लक आजमाते-आजमाते माया ने एकदम उड़ा दिया। ठहर न सके। फिर 5000 वर्ष के बाद भी ऐसे ही होगा। कितने चले गये, आधा झाड़ तो जरूर गया।... फिर मैदान में आयेंगे। बाबा आने देंगे, फिर भी भल आकर पुरुषार्थ करें। कुछ न कुछ अच्छा पद मिल जायेगा।

गुह्यता - बाप है ना! प्यार/रहम/तरस आ ही जाते हैं, भल बच्चे कितनी भी गलतियाँ कर लें। हमें भी बाप समान बन सबको माफ करने की कला सीखनी ही होगी।

10-09-2014

आजकल जिनसे तुम ओपनिंग आदि कराते हो, वह लिखते हैं ब्रह्माकुमारियाँ अच्छा काम करती हैं। बहुत अच्छी समझानी देती हैं। ईश्वर को प्राप्त करने का रास्ता बताती हैं, इससे लोगों के दिल पर सिर्फ अच्छा असर पड़ता है।

बाकी यह ओपीनियन कोई भी नहीं लिखकर देते कि दुनियाभर में जो मनुष्य कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है, यह बड़ी भूल है।... दूसरा फिर ओपीनियन चाहिये कि इस समझानी से हम समझते हैं गीता का भगवान कृष्ण नहीं है। भगवान कोई मनुष्य या देवता को नहीं कहा जाता है। भगवान एक है, वह बाप है। उस बाप से ही शान्ति और सुख का वर्सा मिलता है। ऐसी-ऐसी ओपीनियन लेना है। अभी जो तुम ओपीनियन लेते हो वह कोई काम की नहीं लिखते हैं। हाँ, इतना लिखते हैं कि यहाँ शिक्षा बहुत अच्छी देते हैं। बाकी मुख्य बात जिसमें ही तुम्हारी विजय होनी है, वह लिखाओ कि यह ब्रह्माकुमारियाँ सत्य कहती हैं कि ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है। वह तो बाप है, वही गीता का भगवान है।... यह भी ओपीनियन जरूरी है कि पतित-पावनी पानी की गंगा नहीं, परन्तु एक बाप है। ऐसी-ऐसी ओपीनियन जब लिखें तब ही तुम्हारी विजय हो।..... तो इन 3 बातों पर ओपीनियन लेना चाहिऐ।

गुह्यता - इतने बड़े यज्ञ की सेवाओं की रिजल्ट को इतना बारीकी से एनालाईज करना और उसके बैटरमेण्ट के लिये इतनी स्पष्ट तौर पर सहज और सुगम राय देना, यह कर्त्तव्य एक परमात्मा ही कर सकते हैं। अब हमारा कर्त्तव्य यही बाकी रह गया है कि अपनी कमियों को करैक्ट करते हुऐ बाबा की इस इच्छा को शत-प्रतिशत पूर्ण करना ही है।

11-09-2014

नई आत्मा का नामाचार जरूर होता है। अभी भी देखो कोई-कोई का कितना नामाचार होता है।... बाबा भी इसमें अनायास ही आते हैं तो वह प्रभाव पड़ता है। वह भी नई आत्मा आती है तो पुरानों पर प्रभाव होता है। टाल-टालियां निकलती जाती हैं तो उनकी महिमा होती है। किसको पता नहीं रहता है कि इनका नामाचार क्यों है? नई आत्मा होने से उनमें कशिश होती है।

गुह्यता - सुप्रीम पावर धरा पर उतर आई है तो भी मनुष्य ऐसे मूढ़मति हो जाते हैं जो पहचान नहीं पाते। साधारण वेश में, साधारण रीति से आ जाते हैं ना इसलिये। उन बेचारों का भी कोई दोष नहीं। हम बाबा के बच्चे भी पहचान कर पूरा फालो नहीं कर पाते तो अन्यों को कैसे दोष दे सकते।

12-09-2014

तुम तो सारे दिन का हिसाब निकालते हो। फलाने समय इतनी याद रही, सारे दिन में इतना समय याद रही, टोटल निकालते हो।

गुह्यता - घड़ी-घड़ी, सेकण्ड-सेकण्ड का याद का हिसाब जोड़कर भविष्य 21 जन्मों का बेड़ा पार लगाना है। कितनी बड़ी जिम्मेवारी हम पर है, ख्याल में आता है?!!?

13-09-2014
बाप टीचर बनकर आते हैं तो आधाकल्प तुम्हारी कमाई का प्रबन्ध हो जाता है।..... ज्ञान से है कमाई, भक्ति से है घाटा। टाइम पर जब घाटे का समय पूरा होता है तो फिर बाप कमाई कराने आते हैं। मुक्ति में जाना - वह भी कमाई है।

गुह्यता - भक्ति माना खर्चा, ज्ञान माना जमा। वास्तव में संगम के इस छोटे से जन्म के कुछ समय के अलावा सारे कल्प में कभी भी जमा का खाता नहीं बनता। द्वापर से भी जो कर्मों के अनुसार अल्पकाल की जमा दिखाई देती हैं, वह जमा ना होकर लेन-देन का हिसाब बनाती है। द्वापर से जो हासिल करते वो कलयुग अन्त तक चुकाना ही पड़ता है। लेकिन यहाँ बाबा जो कमाई कराते हैं, उसके आधार पर पूरा ही कल्प प्रालब्ध प्राप्त होती है। पहले देवताई सुखमय जीवन फिर भविष्य पूज्यनीय जीवन।

14-09-2014 - अव्यक्त मुरली

15-09-2014
तुम भी घर चल पड़े हो फिर अपने सुखधाम आयेंगे। बाकी थोड़ा समय है। स्वर्ग से विदाई लिये कितना समय हो गया है, अब फिर स्वर्ग नजदीक आ रहा है।

गुह्यता - बहुत लम्बी यात्रा करके आत्मायें थक गईं हैं। अब बाबा प्यार देकर रूहों की मसाज कर रहे हैं। भगवान का ऐसा रूप तो कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। अब बाबा हमारी सारी थक उतारकर फिर से नई दुनिया स्वर्ग में भेज देते हैं।

16-09-2014
ब्रह्मा तो नामीग्रामी है। इनका सरनेम ही बेहद का है। सब समझते हैं प्रजापिता ब्रह्मा आदि देव है, उसको अंग्रेजी में कहेंगे ग्रेट ग्रेट ग्रैण्ड फादर। यह है बेहद का सरनेम।

गुह्यता - बाबा का बनने के बाद हमारा सब कुछ बेहद का हो जाता है।

17-09-2014
जो जहाँ होगा चाहे समुद्र पर हो, पृथ्वी पर हो, आकाश में हो, पहाड़ों पर हो, उड़ रहा हो..... सब खत्म हो जायेंगे। यह पुरानी दुनिया है ना। जो भी 84 लाख योनियाँ हैं, यह सब खत्म हो जानी हैं। वहाँ नई दुनिया में यह कुछ भी होगा नहीं। न इतने मनुष्य होंगे, न मच्छर, न जीव जन्तु आदि होंगे।

गुह्यता - महाविनाश अर्थात् अंश-वंश सहित सब खत्म हो जाने हैं। नई दुनिया के लिये सब कुछ नया होगा। सो स्वयं को भी refine अर्थात् नया बना लो।

18-09-2014
यथार्थ नाम मेरा एक ही शिव है। तुम बच्चों को आत्मा ही कहते हैं, सालिग्राम कहें तो भी हर्जा नहीं। अनेकानेक सालिग्राम हैं, शिव एक ही है।
गुह्यता - परमात्मा को जितने भी नामों से पुकारा जाता है वे सब महिमा के आधार पर हैं। यथार्थ नाम एक 'शिव' ही है।

19-09-2014
तुमने चित्र में दिखाया है एक को याद करना है। जो भी धर्म स्थापक हैं वह भी ऐसे इशारा देते हैं क्योंकि तुमने शिक्षा दी है तो वह भी ऐसे इशारे देते हैं। साहेब को जपो, वह बाप है सतगुरू।
गुह्यता - बाबा कहते बच्चे आप लॉ-मेकर्स हैं। आप पूर्वज हो। आपके ही इशारे प्रमाण अन्य धर्म स्थापक भी परमात्मा की महिमा करते हैं।

20-09-2014
जो सुना उस पर मनन-चिन्तन नहीं करते हैं। तुम्हारे लिये तो यहाँ एकान्त की जगह बहुत है। बाहर में तो खटमल फिरते रहते हैं। एक दो का खून करते, पीते रहते हैं।
गुह्यता - मुरली आत्मा का भोजन है। भोजन से खून बनता है जो आत्मा की रगों अर्थात् मन-बुद्धि में दौड़ता है। बाह्यमुखता में रहने वाली आत्मायें खटमल की भाँति आत्मा का खून चूस लेती हैं और उसके आगे बढ़ने में विघ्न रूप बन पड़ती हैं।

21-09-2014 - अव्यक्त मुरली

22-09-2014
अगर शिवबाबा भभका दिखाये तो पहले इनका (ब्रह्मा का) भी भभका चाहिये। परन्तु नहीं। बाप कहते हैं मैं तो तुम बच्चों का सर्वेन्ट हूँ। बाप इनमें प्रवेश कर बच्चों को समझाते हैं कि बच्चे तुम पतित बने हो।... इनकी ही हिस्ट्री-जॉग्राफी फिर से रिपीट होगी। इन्होंने ही 84 जन्म भोगे हैं। फिर उन्हें ही सतोप्रधान बनने की युक्ति बताते हैं।
गुह्यता - बाबा ने जिस बच्चे को अपना बनाया उसका कितना सूक्ष्म रिगार्ड रखते हैं। उदा ही अपने से आगे रखते हैं। क्या हम बच्चे शिवबाबा को इतना

ही रिगार्ड देते हैं? बाबा कहते पहले बच्चों का शो सो बाप का शो हो ही जायेगा।

23-09-2014
तुम बच्चे योग और ज्ञान में मजबूत हो जायेंगे तो काम ऐसे ही करेंगे जैसे जिन्न। मनुष्य को देवता बनाने की हॉबी (आदत) लग जायेगी।
गुह्यता - योगी आत्माओं को देहभान सता नहीं सकता। अथक बन सदा सेवा में हाजिर।

24-09-2014
अब तुम बच्चों को आबू की बहुत ऊंची महिमा करके समझाना चाहिये। आबू है बड़े ते बड़ा तीर्थ।... परमपिता परमात्मा ने आबू में आकर स्वर्ग की स्थापना की है।..... बाप कहते हैं मैं भी यहाँ हूँ, आदि देव भी यहाँ है, बैकुण्ठ भी यहाँ है। आबू की बहुत भारी महिमा हो जायेगी। आबू पता नहीं क्या हो जायेगा।
गुह्यता - भक्ति मार्ग में कैलाश मानसरोवर, अमरनाथ, जगन्नाथपुरी रामेश्वरम्, आदि तीर्थ स्थानों की कितनी भारी महिमा है, जहाँ परमात्मा के सिर्फ अंश-वंश होने की भावनायें समाई हैं। आबू में तो साक्षात् परमात्मा चैतन्य में अवतरित होकर हम बच्चों को साकार पालना देते हैं। भला इससे सच्चा और अच्छा स्थान कोई हो सकता है!! धन्य है आबू की धरती जो परमात्मा यहाँ पधारे। यह कोई साधारण भूमि नहीं है। इसकी महिमा को जानो।

25-09-2014
तुम सितारे फिर देवता बनते हो। तुमको ही कहेंगे नक्षत्र देवताए नमः।
गुह्यता - हम चैतन्य आत्मा सितारों की कितनी ऊँची महिमा है, जो हमारे नाम पर इन जड़ नक्षत्रों को भी देवता मान पूजनीय बना देते हैं।

26-09-2014
बाप ने स्थापना कर दी है, बाकी नई दुनिया का उद्घाटन तो हो ही जाना है, उसमें किसके उद्घाटन करने की दरकार नहीं रहती। उद्घाटन तो स्वतः ही हो जायेगा।
गुह्यता - सेन्टरों का उद्घाटन, म्यूजियम आदि का उद्घाटन आदि ये सब तो वास्तव में खेलपाल मात्र हैं। पवित्र स्थानों का उद्घाटन तो पवित्र आत्मा द्वारा ही किया जा सकता है। बाकी आत्माओं के नाम-शान के लिये ये सब कर्त्तव्य होते रहते हैं।

27-09-2014
वेश्यालय का अन्त, शिवालय का आदि - इसको कहा जाता है पुरूषोत्तम संगमयुग।
गुह्यता - गन्दी दुनिया का नामोंनिशान समाप्त हो जाना और पवित्र दुनिया का आरम्भ होना, यही है उत्तम पुरूष बनाने की वेला अथवा युग।

27-09-2014
भल कई कुमार भी पवित्र रहते हैं, कुमारियाँ भी पवित्र रहती हैं, सन्यासी भी पवित्र रहते हैं परन्तु आजकल वह पवित्रता नहीं है।..... बैचलर्स (कुमार) तो सब धर्मों में बहुत रहते हैं परन्तु सेफ्टी से रहना जरा मुश्किल होता है, फिर भी रावण राज्य में रहते हैं ना।
गुह्यता - अगर संकल्पों तक भी अपवित्रता touch करती है तो वह सच्ची पवित्रता नहीं है। फिर कुमार/कुमारी भी कहला न सकें।

28-09-2014 - अव्यक्त मुरली

29-09-2014
कोई-कोई कहते हैं बाबा आपका परिचय देना बड़ा मुश्किल होता है। अरे, बाप का परिचय देना-इसमें तो मुश्किलात की कोई बात ही नहीं।..... अरे, तुम बाप के बने हो, फिर बाप का परिचय क्यों नहीं दे सकते हो! हम सब आत्मायें हैं, वह हमारा बाबा है। सर्व की सद्गति करते हैं।
गुह्यता - बाबा का परिचय देना मुश्किल इसलिए लगता है क्योंकि हमने बाबा को दिल से अपनाया नहीं है। सच्चे सम्बन्ध का अनुभव नहीं किया है।

30-09-2014
वहाँ वजीर आदि होते नहीं। यहाँ तो वजीर देखो कितने हैं क्योंकि बेअक्ल हैं तो वजीर भी ऐसे ही तमोप्रधान पतित हैं। पतित को पतित मिले, कर-कर लम्बे हाथ..... । कंगाल बनते जाते हैं, कर्जा उठाते जाते हैं।
गुह्यता - स्वार्थ समझ पर हावी हो चुका है। स्वार्थ में परमार्थ कहीं लुप्त हो गया है। परमार्थ करते भी तो स्वार्थ सिद्धि के आधार पर इसलिये दिन-प्रतिदिन डूबते जाते हैं।

01-10-2014
बाबा से हमको विश्व में शान्ति स्थापन करने की ताकत मिलती है।... राजाओं के हाथ में देखो कितनी ताकत आ जाती है।... कितनी प्रजा, लश्कर

आदि होता है परन्तु वह है अल्पकाल की ताकत। यह फिर है 21 जन्मों की ताकत।... हमको सर्वशक्तिमान् बाप से ताकत मिलती है।
गुह्यता - विकारी राजाओं के पास भी बाहुबल की असीम ताकत जमा हो जाती है जो फिर वे भी अल्पकाल पीढ़ी-दो पीढ़ी के लिये राजाई पा लेते हैं। हमें तो डायरेक्ट भगवान बाप योगबल, बुद्धिबल व पवित्रता का निश्छल बल प्रदान करते हैं जो भविष्य 21 जन्म तक राजाई कायम रहती है।

02-10-2014
तुम्हारी आत्मा संस्कार ले जाती है। बाप में तो पहले से ही संस्कार हैं।... फिर दूसरी उसमें खूबी है, जो उसमें ओरिजनल नॉलेज हैं। बीजरूप है।
गुह्यता - बाबा के संस्कार कभी बदलते नहीं। आत्माओं के संस्कार घड़ी-घड़ी परिवर्तन होते रहते हैं।

02-10-2014
तुमको तो एक बाप की ही याद में रहना है, यह बड़ी मीठी फाँसी है। आत्मा की बुद्धि का योग है बाप की तरफ।... यह याद की फाँसी है।
गुह्यता - अब तो लटक जाओ।

03-10-2014
यह लक्ष्मी नारायण कितने पवित्र हैं। वास्तव में उन्हों को हाथ लगाने का भी हुक्म नहीं है। पतित जाकर इतने ऊँच पवित्र देवताओं को हाथ लगा न सकें। हाथ लगाने लायक ही नहीं। शिव को तो हाथ लगा नहीं सकते। वह है ही निराकार, उनको हाथ लग ही नहीं सकता। वह तो मोस्ट पवित्र है।
गुह्यता - Have you ever tried to kiss Shivbaba? क्या इतनी पवित्रता है मुझमें जो बाबा को छूने की कल्पना भी कर सकूं???

03-10-2014
भोजन के टाइम कोई आ जाते हैं तो पहले उनको अटैन्ड कर फिर भोजन खाना चाहिऐ। ऐसी सर्विस वाला हो। कोई-कोई को बड़ा देह अभिमान आ जाता है, आराम-पसन्द, नवाब बन जाते हैं। बाप को समझानी तो देनी पड़े ना। यह नवाबी छोड़ो। फिर बाप साक्षात्कार भी करायेंगे-अपना पद देखो। देह अभिमान का कुल्हाड़ा आपेही अपने पाँव पर लगाया है।
गुह्यता - सेवा! सेवा! और सिर्फ सेवा! सेवा से बढ़कर और सेवा के पहले कुछ नहीं। ब्राह्मण माना आराम हराम है।

04-10-2014
बाबा का काम है हमको घर तक पहुँचाना। बाबा रास्ता बता देते हैं।... बाबा लायक बनाकर ही छोड़ते हैं। सुखधाम में बाप नहीं ले जायेंगे। इनकी लिमिट हो जाती है घर तक पहुँचाना। यह सारा ज्ञान बुद्धि में रहना चाहिये।
गुह्यता - परम पवित्र परमात्मा परम शान्ति के स्थान पर ले जाते और न्यारे हो जाते। फिर ड्रामानुसार automatic नया चक्र शुरू हो जायेगा। यह सब समझने की बातें हैं।

05-10-2014 - अव्यक्त मुरली

06-10-2014
तुम बच्चों में जो अच्छे समझदार हैं उनको सर्विस का बहुत शौक रहता है। समझते हैं ईश्वरीय सर्विस से बहुत लॉटरी मिलनी है। कई तो लॉटरी आदि को समझते ही नहीं। वहाँ भी जाकर दास-दासियाँ बनेंगे। दिल में समझते हैं अच्छा दासी ही सही, चण्डाल ही सही।
गुह्यता - Forth class ब्राह्मण। बद से बद्तर। नामधारी।

07-10-2014
सात रोज की भट्ठी का कोर्स बहुत कड़ा है। कोई की याद न आये। किसको भी पत्र नहीं लिख सकते। यह भट्ठी तुम्हारी शुरू की थी। यहाँ तो सबको रख नहीं सकते इसलिए कहा जाता है घर में रहकर प्रैक्टिस करो।
गुह्यता - वननैस (One-ness) का गहन अनुभव कराने वाली भट्ठी। भट्ठी के नियमानुसार बाप के सिवा कोई की भी याद नहीं, किसी से भी कोई लेनदेन नहीं। बस बाबा, बाबा की मुरली, बाबा का समझानी भरा कोर्स, योगाभ्यास बस। अगर कोई की याद आई तो फिर से सात दिन की भट्ठी का आरम्भ।

08-10-2014
बाप समझाते हैं खाना बनाओ, मिठाई बनाओ, शिवबाबा को याद करते रहो। शिवबाबा को याद कर बनायेंगे तो मिठाई खाने वाले का भी कल्याण होगा। कहाँ साक्षात्कार भी हो सकता है। ब्रह्मा का भी साक्षात्कार हो सकता है। शुद्ध अन्न पड़ता है तो ब्रह्मा का, कृष्ण का, शिव का साक्षात्कार कर सकते हैं।
गुह्यता - बाबा की याद में बना भोजन भी किया आत्मा की तकदीर बना सकता है। उस भोजन में भरे बाबा की याद के वायब्रेशन आत्माओं को बाबा का अनुभव सहज ही करा सकते हैं। इतनी वैल्यु जान फिर भोजन बनाना है।

09-10-2014
झूठ बोलना, किसको दुःख देना, तंग करना-यह हैं रावण के कायदे और वह है राम के कायदे।... ऐसे नहीं, कोई को विष चाहिए, वह नहीं देते तो यह कोई दुःख देना है। ऐसे तो बाप कहते नहीं हैं। कई ऐसे भी बुद्धू निकलते हैं जो कहते हैं बाबा कहते हैं ना- किसको दुःख नहीं देना है। अब यह विष मांगते हैं तो उनको देना चाहिये, नहीं तो यह भी किसको दुःख देना हुआ ना। ऐसे समझने वाले मूढ़मति भी हैं। बाप तो कहते हैं ''पवित्र जरूर बनना है।''

गुह्यता - ज्ञान जो मिला है उसको यथार्थ रीति यूज करना भी सीखना है। किसी के पापकर्मों में साथ नहीं देना है बल्कि उसे भी बचाने का प्रयास करना चाहिऐ। पवित्र बनना अर्थात् कैसा भी पापकर्म नहीं करना है। चाहे उसके लिये कितना भी क्यूं न सहन करना पड़े।

09-10-2014
यह याद की ही दौड़ी है। रेस होती है ना। कोई अकेले-अकेले दौड़ते हैं। कोई जोड़ी को इकट्ठा बाँध फिर दौड़ते हैं। यहाँ जो जोड़ी है वह इकट्ठे दौड़ी लगाने की प्रैक्टिस करते हैं। सोचते हैं सतयुग में भी ऐसे इकट्ठे जोड़ी बन जायें।

गुह्यता - यह भी वास्तव में मोह ही है। जोड़ियाँ बनी पड़ी हैं ड्रामानसार। हमें कैसा भी फालतू चिन्तन छोड़ अपने ऊँच पुरूषार्थ करना है बस!

10-10-2014
अमरलोक, जहाँ अकाले मृत्यु नहीं होती क्योंकि पवित्र हैं। अपवित्रता से व्यभिचारी बनते हैं और आयु भी कम होती है। बल भी कम हो जाता है। सतयुग में पवित्र होने कारण अव्यभिचारी हैं। बल भी जास्ती रहता है।

गुह्यता - अमरलोक का अर्थ यह नहीं कि मरेंगे ही नहीं। समय पर चोला बदल लेना मृत्यु की अनुभूति नहीं कराता। जैसे-जैसे पवित्रता की धारणा कमजोर पड़ती जाती, आत्मा को मृत्यु का भय सताने लगता है।

10-10-2014
बाप तो है ही विदेही, विचित्र। तो बच्चे भी विचित्र हैं।... हम आत्मा विचित्र हैं फिर यहाँ चित्र (शरीर) में आते हैं। अभी बाप फिर कहते हैं विचित्र बनो। अपने स्वधर्म में टिको। चित्र के धर्म में नहीं टिको। विचित्रता के धर्म में टिको।... इसमें याद की बहुत जरूरत है।

गुह्यता - विचित्र आत्मा विचित्र बाप की श्रीमत से विचित्र अनुभव करके विचित्र पार्ट प्ले करने वाली विशेष आत्मा बन जाती है। इसमें करना कुछ भी

नहीं होता बस बाप की यथार्थ याद के अभ्यासी बनो।

11-10-2014
तुम जब सतयुग में हो तो सच्चा सोना ही हो। फिर चाँदी पड़ती है तो चन्द्रवंशी कहा जाता है। फिर ताँबे की, लोहे की खाद पड़ती है द्वापर-कलियुग में। फिर योग से तुम्हारे में जो चाँदी, ताँबा, लोहा की खाद पड़ी है, वह निकल जाती है। पहले तो तुम सब आत्मायें शान्तिधाम में हो।
गुह्यता - महंगी चीज में सस्ती खोट मिलाकर उसकी गुणवत्ता को कम किया जाता है। हम आत्माओं की स्टेज भी Pure Diamond से गिरते-गिरते Lowest category में आ गई। अब फिर Pure Diamond बनना है तो गन्द निकालनी पड़े ना।

11-10-2014
सतयुग में तुमको बड़ा फर्स्टक्लास तख्त मिलता है, उनको कहेंगे गोल्डन एज्ड तख्त। फिर उस आत्मा को सिल्वर, कॉपर, आयरन एज्ड तख्त मिलता है। फिर गोल्डन एज्ड तख्त चाहिये तो जरूर पवित्र बनना पड़े।... अभी ब्राह्मण कुल का तख्त है। पुरूषोत्तम संगमयुग का तख्त है फिर मुझ आत्मा को यह देवताई तख्त मिलेगा।
गुह्यता - 84 जन्मों में आत्मा ने भिन्न-भिन्न तख्त धारण किये। अब तख्त को त्याग निराकार रूप को धारण करना है। इस त्याग में ही सारे कल्प का भाग्य समाया है।

12-10-2014 - अव्यक्त मुरली

13-10-2014
तुम कहेंगे हम यह लक्ष्मी-नारायण जरूर बनेंगे। तुमको हाथ उठाते देख बुढ़ियाँ आदि भी सब हाथ उठा देंगी। समझती कुछ नहीं हैं। फिर भी बाप के पास आई हैं तो स्वर्ग में तो जायेंगी परन्तु सब ऐसे थोड़ेही बनेंगी। प्रजा भी बनेंगी।
गुह्यता - ज्ञान को यथार्थ समझकर तब एक्ट करना होता है। स्वर्ग में ऊँच पद पायेंगे ही वे, जो यहाँ समझदारी से बाबा की श्रीमत को फॉलो करेंगे।

14-10-2014
कृष्ण थोड़ेही गऊयें चराता था। उन्हों के पास तो दूध हेलीकाप्टर में आता होगा। यह किचड़पट्टी दूर रहती होगी। सामने घर में थोड़ेही किचड़ा रहेगा।

गुह्यता - स्वर्ग माना आऽऽहा! आऽऽहा! आऽऽहा! गन्द का नामोंनिशान तक नहीं होगा।

14-10-2014

बाबा के पास तो सब समाचार आते हैं। कोई का सुनाते हैं, कोई का नहीं सुनाते हैं क्योंकि ट्रेटर भी बहुत होते हैं। बहुत फर्स्टक्लास भी ट्रेटर्स बन पड़ते हैं। थर्डक्लास भी ट्रेटर हैं। थोड़ा ज्ञान मिला तो समझते हैं हम शिवबाबा के भी बाबा बन गये। पहचान तो है नहीं कि कौन नॉलेज देते हैं।

गुह्यता - बाबा की समझाने की सबसे पावरफुल विधि- कहना बेटी को, सिखाना बहू को। बहू के नखरे बड़े होते हैं ना। बाप के बने, सगाई हुई, मन-बुद्धि से समर्पण हुऐ यानि बहू बने। अब बेटी की तरह वर्से की अधिकारी बनना है।

15-10-2014

कोई पूछेंगे कि ब्रह्मा में भी अपनी आत्मा होगी और यह जो नारायण बनते हैं उनमें भी अपनी आत्मा होगी। दो आत्मायें हैं ना। एक ब्रह्मा, एक नारायण की। परन्तु विचार करेंगे तो यह कोई दो आत्मायें नहीं हैं। आत्मा एक ही है।... ब्रह्मा और विष्णु की कोई दो आत्मायें नहीं हैं। वैसे ही सरस्वती और लक्ष्मी-इन दोनों की दो आत्मायें हैं या एक? आत्मा एक है, शरीर दो हैं। यह सरस्वती ही फिर लक्ष्मी बनती है इसलिए एक आत्मा गिनी जायेगी। 84 जन्म एक ही आत्मा लेती है।

गुह्यता - एक ही आत्मा अलग शरीर धारण करती है तो नारायण सो विक्रमादित्य सो लेखराज सो ब्रह्मा बनती है। अलग-अलग आत्मा, अलग-अलग पालना।

16-10-2014

तुम्हारा नाम सारा विलायत से ही निकलेगा।... भारतवासियों ने ही लाखों वर्ष कहकर और सर्वव्यापी का ज्ञान देकर बुद्धि बिगाड़ दी है। तमोप्रधान बन गये हैं। वह इतने तमोप्रधान नहीं बने हैं, उन्हों की बुद्धि तो बड़ी तीखी है। भारतवासियों से वह बहुत सीखेंगे। उन्हों का जब आवाज निकलेगा तब भारतवासी जागेंगे।

गुह्यता - विलायत वाली आत्मायें बाप को पहचान बाप के अवतरण का झण्डा बुलन्द कर बाप की प्रत्यक्षता के नगाड़े बजायेंगीं। तब भारतवासी कुम्भकरण जागेंगे।

17-10-2014
यहाँ मरना अर्थात् अवस्था कम होना, माया से हारना। खत्म हो जाते हैं।... मरजीवा बनते हैं, बाप का बनते हैं फिर रामराज्य से रावणराज्य में चले जाते हैं। इस पर ही युद्ध दिखलाई है-कौरव और पाण्डवों की। फिर असुरों और देवताओं की भी युद्ध दिखाई है।
गुह्यता - मरना तेरी गली में, जीना तेरी गली में..... घड़ी-घड़ी मरना अर्थात् नजरें नीचे करना। इसलिऐ संजीवनी बूटी (मनमनाभव) को सदा सूंघते रहो। याद की लौ लगाके रखो।

18-10-2014
यहाँ है विष का सागर, वहाँ है क्षीर का सागर और मूलवतन है शान्ति का सागर। तीनों धाम हैं।
गुह्यता- दोनों धामों क्षीर सागर और मूलवतन के चक्कर लगाने में ऐसे बिजी हो जाओ जो विषधाम बिल्कुल भूल जाये। भूलने की मेहनत ना करनी पड़े।

18-10-2014
पुरानी नईया खौफनाक होती है। कहाँ रास्ते में टूट पड़े, एक्सीडेंट हो जाये। तो तुम कहते हो हमारी नईया पुरानी हो गई है, अब हमें नई दो। इनको वस्त्र भी कहते हैं, नईया भी कहते हैं। बच्चे कहते बाबा हमको तो ऐसे (लक्ष्मी-नारायण जैसे) वस्त्र चाहियें।
गुह्यता - इस नईया को खेवनहार/खिवैया शिवबाबा को सौंप दो तो टूटी नईया से ही पार लगा देंगे।

19-10-2014 - अव्यक्त मुरली
20-10-2014
बाबा जानते हैं बहुतों के कानों से बह जाता है, कोई धारण कर और सुना सकते हैं। उनको कहा जाता है महारथी। सुनकर फिर धारण करते हैं, औरों को भी रूचि से समझाते हैं। महारथी समझाने वाला होगा तो झट समझेंगे, घोड़ेसवार से कम, प्यादे से और भी कम।
गुह्यता - महारथी बनना है तो अर्जुन बन, सारथी को रथ की डोर थमा दो और जो वह सुनाये वह अर्जित करते रहो।

21-10-2014
कभी भी कोई कहे कि ईश्वर सर्वव्यापी है तो कहो सर्वव्यापी आत्मायें हैं और इन आत्माओं में पाँच विकार सर्वव्यापी हैं।

गुह्यता - लोग कहते सबमें भगवान है, हम जानते हैं सबमें शैतान विद्यमान है अर्थात् 5 विकार भरे हुऐ हैं। धारणा स्वरूप होकर समझानी दो तो समझ जायेंगे कि भगवान नहीं सबमें शैतान विराजमान है।

22-10-2014
रूद्र माला सिमरते हैं, ऊपर में है फूल और युगल मेरू। वह तो एक जैसे ही हैं। फूल को क्यों नमस्कार करते हैं?... माला किसकी फेरते हैं? देवताओं की माला फेरते हैं या तुम्हारी फेरते हैं? माला देवताओं की है या तुम्हारी है? देवताओं की नहीं कहेंगे। यह ब्राह्मण ही हैं जिनको बाप बैठ पढ़ाते हैं।... माला तुम ब्राह्मणों की है, जो तुम बाप द्वारा पढ़कर, मेहनत कर फिर देवता बन जाते हो। बलिहारी पढ़ाने वाले की।
गुह्यता - वास्तव में महिमा सारी हम ब्राह्मणों द्वारा किये गये कर्त्तव्यों की है किन्तु पुरूषार्थी होने कारण अलंकार हमारे सम्पूर्ण रूप को दिखाये हैं। बलिहारी एक शिवबाबा की है जो उसने हमें इस लायक बनाया।

23-10-2014
आज बहुत अच्छी रीति याद करते हैं, कल देह अहंकार में ऐसे आ जाते हैं जैसे सांडे (गिरगिट)। सांडे को अहंकार बहुत होता है। एक कहावत भी है- सुरमण्डल के साज से देह-अभिमानी सांडे क्या जाने.....।
गुह्यता - बाबा कहते ऐसों से तो बात भी नहीं करनी चाहिये।

23-10-2014
कितने अच्छे-अच्छे बच्चे बड़ा आराम से 6 बजे तक सोये हुए रहते हैं। माया एकदम नाक से पकड़ लेती है। हुक्म चलाते रहते हैं। शुरू में तुम जब भट्टी में थे तो मम्मा-बाबा भी सब सर्विस करते थे। जैसे कर्म हम करेंगे हमको देखकर और करेंगे। बाबा तो जानते हैं महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे नम्बरवार हैं। कई बच्चे बड़ा आराम से रहते हैं। अन्दर सोये रहते हैं। बाहर में कोई पूछे-फलाना कहाँ है? तो कहेंगे, है नहीं परन्तु अन्दर सोये पड़े हैं। क्या-क्या होता रहता है, बाबा समझाते हैं।... कितनी डिससर्विस कर लेते हैं।
गुह्यता - जिन सोया तिन खोया। अब ऐसों को और क्या कहें। मुफ्त अपनी बरबादी करते रहते हैं। समझते नहीं।

23-10-2014
हम कमाई कर यज्ञ को देवें, ऐसे ख्याल रख अपना टाइम वेस्ट नहीं करना है।... तुम फिर अपना नुकसान कर रहे हो। यज्ञ में तो जिन्होंने कल्प पहले

मदद की है वह करते रहते हैं, करते रहेंगे। तुम क्यों माथा मारते हो-यह करें, वह करें। ड्रामा में नूँध है-जिन्होंने बीज बोया है, वह अभी भी बोयेंगे। यज्ञ का तुम चिंतन नहीं करो। अपना कल्याण करो।
गुह्यता - अपनी अवस्था बनाकर फिर सेवा का पार्ट बजाना, इससे बड़ी मदद, इससे अहम योगदान आप आत्मा के सिवाय यज्ञ में कोई कर नहीं सकते।

24-10-2014
तुम्हारे सम्बन्धी यह नहीं जानते कि तुम क्या पढ़ाई पढ़ते हो। उस पढ़ाई में तो मित्र-सम्बन्धी सब जानते हैं, इसमें कोई जानते हैं, कोई नहीं जानते हैं। कोई का बाप जानता है तो भाई-बहन नहीं जानते। कोई की माँ जानती है तो बाप नहीं जानता क्योंकि यह विचित्र पढ़ाई और विचित्र पढ़ाने वाला है।
गुह्यता - कमाल है ऐसी पढ़ाई पढ़ाने वाले की और धन्य हैं ऐसी पढ़ाई पढ़ने वालों की। आप जानों, बाप जानें और क्या जाने कोई। आप पढ़कर लायक बन जाओ, बस!

25-10-2014
बच्चे कहते हैं बाबा हमारे शहर में चलो। क्या कांटों के जंगल में बन्दरों को देखने चलूँ! तुम बच्चों को ड्रामानसार सर्विस करनी ही है।
गुह्यता - इतना प्यार करने वाला बाबा कितना नष्टोमोहा है। देखो तो!!

26-10-2014 - अव्यक्त मुरली

27-10-2014
वह स्नान करने जाते हैं पानी का। यहाँ तुम्हारा स्नान होता है याद की यात्रा से। सिवाय बाप की याद के तुम्हारी आत्मा पावन बन ही नहीं सकती। इनका नाम ही है योग अर्थात् याद की यात्रा। ज्ञान को स्नान नहीं समझना। योग का स्नान है। ज्ञान तो पढ़ाई है, योग का स्नान है, जिससे पाप कटते हैं।
गुह्यता - गुप्त गंगा, गुप्त स्नान। बाबा की याद की फुहारों में भीगकर तर हो जाओ, तो तर जायेंगे। इन याद की फुहारों में भीगकर जन्मों-जन्मों के पाप भस्म हो जायेंगे और मुक्ति-जीवनमुक्ति को प्राप्त कर लेंगे।

28-10-2014
शिव के जन्म का भी पता नहीं है तो रावण के जन्म का भी पता नहीं है। बाप बतलाते हैं त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि में रावण आते हैं। उनको 10 शीश क्यों दिये हैं? हर वर्ष क्यों जलाते हैं?

गुह्यता - शिव का अवतरण माना ही ब्रह्मा द्वारा पवित्र जीवन का आरम्भ, सच्ची पवित्रता का शुभारम्भ, और देवताओं (ब्रह्मा से) का पतन अर्थात् 5+5, 10 शीश वाले विकारी रावण राज्य का आरम्भ।

29-10-2014
जो अभी माया की बहुत इज्जत वाले हैं, वह बेइज्जत बन जायेंगे। यह है ईश्वरीय इज्जत। वह है आसुरी इज्जत। ईश्वरीय अथवा दैवी इज्जत और आसुरी इज्जत में रात-दिन का फर्क है। हम आसुरी इज्जत वाले थे अब फिर दैवी इज्जत वाले बनते हैं। आसुरी इज्जत से बिल्कुल बेगर बन जाते हैं।
गुह्यता - इज्जत, बेइज्जती से भी ऊपर उठकर सच्चे वैरागी, बेहद के पुरूषार्थी बन जाओ। ईश्वरीय इज्जत के भावी बन जाओ।

30-10-2014
सारे विश्व का बाप, सभी आत्माओं का बाप तुम बच्चों को पढ़ा रहे हैं। इतना दिमाग में बैठता है? क्योंकि दिमाग है तमोप्रधान, लोहे का बर्तन, आयरन एज्ड। दिमाग आत्मा में होता है। तो इतना दिमाग में बैठता है? इतनी ताकत मिलती है समझने की कि बरोबर बेहद का बाप हमको पढ़ा रहे हैं, हम बेहद विश्व को पलटते हैं।..... इतना दिमाग में है? वह चलन है? वह बातचीत करने का ढंग है, वह दिमाग है? कोई बात में झट गुस्सा कर दिया, किसको नुकसान पहुँचाया, किसकी ग्लानि कर दी, ऐसी चलन तो नहीं चलते? सतयुग में... ग्लानि के छी-छी ख्यालात वाले होंगे ही नहीं।
गुह्यता - है दिमाग?????

31-10-2014
नॉलेज को मोड़-तोड़कर भक्ति में क्या बना दिया है। ज्ञान का सारा सूत मूँझा हुआ है।
गुह्यता - नॉलेज तो सिवाय हम ब्राह्मणों के और किसके पास है नहीं। तो सारा ज्ञान मोड़-तोड़कर विश्व के आगे रखने वाले हमारे सिवाय और कौन हो सकता है। हमने सूत मुँझाया तो अब हमें ही सुलझाना भी है बाबा के मददगार बनके।

01-11-2014
हमने किनारा किया हुआ है फिर भी अगर हम शिवबाबा की याद में रहते हैं तो शिवालय दूर नहीं। शिवबाबा को याद नहीं करते तो शिवालय बहुत दूर है। सजायें खानी पड़ती हैं तो बहुत दूर हो जाता है।
गुह्यता - शिवालय दूर अर्थात् स्वर्ग में देरी से जन्म, और पद भी साधारण।

02-11-2014 - अव्यक्त मुरली

03-11-2014
इक्चल कैसे है इसको जानना पड़े। सतयुग-त्रेता पास्ट हुआ, नोट करो। उनको कहा जाता है स्वर्ग और सेमी स्वर्ग। वहाँ देवी-देवताओं का राज्य चलता है। सतयुग में है 16 कला, त्रेता में हैं 14 कला। सतयुग का प्रभाव बहुत भारी है। नाम ही है स्वर्ग, हेविन।... नई दुनिया में है ही एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म।... इस कल्प की आयु ही 5000 वर्ष है। अब सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी तो बुद्धि में बैठा। विष्णुपुरी ही बदल राम-सीता पुरी बनती है।... दो युग पास्ट हुए फिर आता है द्वापरयुग। रावण का राज्य। देवतायें वाम मार्ग में चले जाते हैं तो विकार का सिस्टम बन जाता है। सतयुग-त्रेता में सभी निर्विकारी रहते हैं। एक आदि सनातन देवी देवता धर्म रहता है। चित्र भी दिखाना है, ओरली भी समझाना है। बाप हमको टीचर होकर ऐसे पढ़ाते हैं। बाप अपना परिचय खुद ही आकर देते हैं।
गुह्यता - स्वयं बाबा ने नये जिज्ञासुओं को सारा ज्ञान शार्ट में समझाने की विधि हम बच्चों को सिखाई।

04-11-2014
आत्मा तो ऊपर में 5 तत्वों से भी ऊपर रहती है। 5 तत्वों से ही सारी दुनिया की सामग्री बनती है। आत्मा तो नहीं बनती, आत्मा तो सदैव है ही। सिर्फ पुण्य आत्मा, पाप आत्मा बनती है।
गुह्यता - 5 तत्वों से सारी साकारी दुनिया का निर्माण होता है, बस समय समय पर मेटीरियल/सामग्री बदली होता रहता है। गोल्ड, सिल्वर, कॉपर, आयरन, काँच, लकड़ी, कागज सब कुछ इसी धरनी पर सदैव मौजूद है ही। सिर्फ आत्मा दूरदेश से आकर 5 तत्वों से बनी देह के साथ मिलकर पार्ट बजाना आरम्भ करती है।

05-11-2014
निश्चयबुद्धि माना विजयी माला में पिरोवन्ती माना शहजादा बनन्ती। एक दिन जरूर आयेगा जो फॉरेनर्स सबसे जास्ती आबू में आयेंगे और सब तीर्थ यात्रा आदि छोड़ देंगे। वह चाहते हैं भारत का राजयोग सीखें।
गुह्यता - सत्य बाप ने आज दिन तक जो भी गुह्यराज हम बच्चों को सुनाये वे दिन-प्रतिदिन सिद्ध हो रहे हैं। आज पूरे वर्ष ही आबू में फॉरेनर्स का मेला लगा रहता है। ऐसा भी दिन आयेगा जो सारा आबू फॉरेनर्स से भर जायेगा।

06-11-2014
यहाँ तो पाप होते ही हैं। मनुष्य जिसको पुण्य का काम समझते हैं वह भी पाप ही है।
गुह्यता - बिना परमात्म श्रीमत के किये गये कर्म, पाप या विकर्म ही बनते हैं। जैसे दुनिया में कन्या विवाह परम पुण्य का काम समझा जाता है, लेकिन परमात्मा ने बताया बच्चे इससे बड़ा पाप का कार्य तो कोई होता ही नहीं। एक पवित्र कन्या को विकारी सम्बन्ध का हथियाला बंधवाकर विकार में धकेल देना, ऐसा घोर पाप का कर्म आप बच्चों को कभी नहीं करना चाहिए। वास्तव में सच्चा-सच्चा कन्यादान तो है ***एक कुमारी को परमपिता परमात्मा शिवबाबा द्वारा स्थापित राजस्व अश्वमेध अविनाशी रूद्र सत्य गीता ज्ञान यज्ञ में समर्पित कर देना।*** इससे बड़ा पुण्य का कर्म कोई होता नहीं।

07-11-2014
कोई-कोई हैं जो बेधड़क हो किसको भी समझाते हैं-आओ तो हम आपको ऐसी बात बतायें जो और कोई बता ही नहीं सकते। सिवाय शिवबाबा के और कोई जानते ही नहीं।... बहुत रसीला बैठ समझाना चाहिऐ।
गुह्यता - बुद्धि बाबा को समर्पित हो। देह का भान जरा भी न हो। बस बाबा सुनायें और मास्टर ब्रह्मा बन, मैं अर्जुन ज्ञान अर्जित करता रहूँ। तब वह नशा चढ़े और बाबा की ऐसी सेवा हो सके।

08-11-2014
जो अनन्य बच्चे हैं वह आगे चलकर बहुत फील करेंगे-यह साहूकारों की दासी बनेंगी, यह राजाई घराने की दासी बनेंगी। यह बड़े साहूकार बनेंगे, जिनको कब-कब इनवाइट करते रहेंगे। सबको थोड़ेही इनवाइट करेंगे, सब मुँह थोड़ेही देखेंगे।
गुह्यता - जितना-जितना देही बनते जायेंगे तो अपना व औरों का पुरूषार्थ स्पष्ट देखने में आयेगा।

09-11-2014 - अव्यक्त मुरली

10-11-2014
तुम पढ़ाने वाले टीचर जरूर बनते हो बाकी तुम कोई का गुरू नहीं बन सकते हो, सिर्फ टीचर बन सकते हो। गुरू तो एक सतगुरू ही है।.... बाप ने तुम्हारे पर यह ड्यूटी रखी है कि मुझे याद करो और फिर टीचर भी बनो।
गुह्यता - निमित्त। बनाया है तो यह निमित्तापना भूलो नहीं।

11-11-2014
यहाँ बैठे बाप की नजर सर्विसएबुल बच्चों की तरफ चली जाती है। कभी देहरादून, कभी मेरठ, कभी देहली..... जो बच्चे मुझे याद करते हैं मैं भी उन्हों को याद करता हूँ। जो मुझे नहीं भी याद करते हैं तो भी मैं सबको याद करता हूँ।

गुह्यता - बाबा को क्या दरकार जो किसको याद करता रहे। बच्चों से प्यार है इसलिये नजर के सामने रखते, कहाँ बच्चा अपना कुछ नुकसान न कर लेवे।

12-11-2014
तुम्हारे पेपर्स कहाँ से निकलेंगे? ऊपर से। तुम्हारा पेपर ऊपर से आयेगा। सब साक्षात्कार करेंगे।

गुह्यता - खुले दरबार में पेपर होना है इसलिये छिपाकर कर्म करने के संस्कार बदल डालो। प्रत्यक्षता के समय किसका कुछ भी छिपा नहीं रहेगा।

13-11-2014
देही-अभिमानी बन विचार करना होता है कि आज हमको फलाने प्राइम मिनिस्टर को जाकर समझाना है। उनको दृष्टि दें तो साक्षात्कार हो सकता है। तुम दृष्टि दे सकते हो। अगर देही-अभिमानी होकर रहो तो।

गुह्यता - देही बन देह में विराजमान आत्मा पर दृष्टि डालो तो उसे भी देह भूल जायेगी।

14-11-2014
सेन्टर्स पर जब कोई कोर्स लेने चाहते हैं तो उनसे फॉर्म भराना है, कोर्स नहीं लेना है तो फॉर्म भराने की दरकार नहीं। फॉर्म भराया ही इसलिये जाता है कि मालूम पड़े इनमें क्या-क्या है? क्या समझाना है?... तो उनका सारा मालूम पड़ता है फॉर्म से। बाप से कोई मिलते हैं तो भी फॉर्म भराना होता है। तो मालूम पड़े क्यों मिलते हैं?

गुह्यता- आवश्यकता प्रमाण यज्ञ की चीजों का इस्तेमाल करना भी सीखना है।

15-11-2014
क्यों बन्धन में फँसू? क्यों न बाप से अमृत लेकर अमृत का ही दान करूँ। मैं कोई रिढ़-बकरी थोड़ेही हूँ जो कोई हमको बांधे। शुरू में तुम बच्चों ने कैसे अपने को छुड़ाया, रड़ियां मारी, हाय-हाय कर बैठ गये। तुम कहेंगे हमको क्या परवाह है, हमको तो स्वर्ग की स्थापना करनी है।.... वह मस्ती चढ़ जाती है, जिसको मौलाई मस्ती कहा जाता है। हम मौला के मस्ताने हैं।... मौला हमको

पढ़ा रहे हैं ना।
गुह्यता - रमता योगी। मौला की मस्तानी मैं आत्मा। अपना अच्छा-बुरा मुझे स्वयं देखकर फिर फैसला करना है, क्या करना है, क्या नहीं।

15-11-2014
बाबा जानते हैं अच्छे-अच्छे फर्स्टक्लास बच्चे हैं परन्तु अन्दरूनी हालत देखो तो गल रहे हैं। देह-अभिमान की आग जैसे गला रही है। समझते नहीं हैं।... देही-अभिमानी को कभी बीमारी लगेगी नहीं। बहुत अन्दर में जलते रहते हैं।
गुह्यता - विकारों के बाल-बच्चे अक्सर ऐसी हालत के जिम्मेवार होते हैं। ऊपर में क्रोध नहीं दिखायेंगे लेकिन अन्द ही अन्दर ईर्ष्या, घृणा, गुस्से की अग्नि में जलते रहते हैं। बदलने के बजाये बदले की भावना अन्दर में रख लेते हैं, तो फिर गलेंगे ही। अपना ही धर्मराज बनकर कड़ी ते कड़ी, महीन चैकिंग करो अगर सम्भलना चाहते हो तो।

16-11-2014 - अव्यक्त मुरली

17-11-2014
बहुत सेन्टर्स पर ऐसे हैं जो पढ़ाने वाली टीचर से ऊँच चले जाते हैं। एक-एक को देखा जाता है। सबकी चलन से मालूम तो पड़ता है ना।... वण्डर खायेंगे, यह तो हमको ज्ञान देती थी, फिर यह कैसे चली गयी। हमको कहती थी पवित्र बनो और खुद फिर छी-छी बन गई। समझेंगे तो जरूर ना।
गुह्यता - किसी का पुरूषार्थ छिपा नहीं रह सकता। कैसा भी कर्म समय पर आपेही प्रत्यक्ष हो जायेगा। फिर कुछ कर नहीं सकेंगे।

18-11-2014
तुम साफ कह सकते हो परमपिता परमात्मा ही जगतगुरू हैं जो सारे जगत को सद्गति देते हैं।
गुह्यता - इतना नशा और निश्चय चाहिये।

19-11-2014
बाप देखते हैं यह इतना मीठे-मीठे मुलायम नहीं बनते हैं। बाप कितना मुलायम बच्चे मिसल हो चलते हैं, क्योंकि ड्रामा पर चलते रहते हैं। कहेंगे जो हुआ ड्रामा की भावी।
गुह्यता - किसी का अच्छा-बुरा कर्म आपकी अवस्था को प्रभावित ना करे, ऐसी अपनी स्थिति बनानी है। ड्रामा पर अटूट निश्चय हो।

20-11-2014
अभी दोनों ही बाप तुम्हारा श्रृंगार कर रहे हैं। पहले तो बाप अकेले था। शरीर बिगर था। ऊपर बैठ तुम्हारा श्रृंगार कर न सकें। कहते हैं ना- बत्ता बारह (1 और 2 मिलकर 12 होते हैं)... निराकार जब साकार शरीर का आधार लेते हैं तब तुम्हारा श्रृंगार करते हैं।
गुह्यता - निराकार और साकार मिलकर स्वर्ग स्थापन कर देते हैं। दुनिया ही बदल देते हैं। हमें तो केवल स्वयं को बदलने का ही पुरूषार्थ करना है। क्या हम बाबा की श्रीमत प्रमाण अपना ही श्रृंगार नहीं कर सकते।

21-11-2014
मित्र-सम्बन्धी आदि सब पवित्र बनेंगे। जितना जो कल्प पहले सतोप्रधान बना है, उतना ही फिर बनेंगे। उनका पुरूषार्थ ही ऐसा होगा।
गुह्यता - उनकी परवाह छोड़ अपना पुरूषार्थ ऐसा करो जो वे भी प्रेरणा लेवें।

22-11-2014
तुम योग में पूरा रहकर किसको कुछ भी कहेंगे, कोई विचार नहीं आयेगा। योग वाले का तीर पूरा लगेगा।.... माया के भूत वाले थोड़ेही सक्सेस हो सकते हैं।
गुह्यता - बुद्धि की तार सदा बाप से जुड़ी रहे फिर न्यारे होकर जो बोल बोलेंगे, वे वरदानी बन जायेंगे। माया के वश होंगे तो बोल अहंकारी हो जायेंगे। वे प्राप्ति कराने के बजाये बाप से विमुख करने वाले होंगे।

23-11-2014 - अव्यक्त मुरली

24-11-2014
इनके ऊपर तो मामला बहुत हैं। भल ड्रामा कहकर छोड़ देते हैं फिर भी कुछ लैस जरूर आती है। यह बिचारे बहुत अच्छी सर्विस करते थे। यह संगदोष में खराब हो गये। कितनी डिससर्विस होती है। ऐसा-ऐसा काम करते हैं, लैस आ जाती है। उस समय यह नहीं समझते। यह भी ड्रामा बन हुआ है। यह फिर बाद में ख्याल आता है। यह तो ड्रामा में नूँध है ना। माया अवस्था को बिगाड़ देती है तो बहुत डिससर्विस हो जाती है।
गुह्यता - बाबा के सामने बच्चे अपनी समस्यायें लेकर जाते थे तो बाबा को ख्याल चलता, फिर बाद में ख्याल आता यह तो ड्रामा है। मगर कुछ न कुछ लैस आ ही जाती है। वास्तव में जो हो रहा है उसे प्रत्यक्ष स्वीकार कर साक्षी स्थिति में स्थित रहना मासी का घर नहीं है।

25-11-2014
यह जो मुख है यह है पोलार। मुख से वाणी (आवाज) निकलती है मुख से आवाज निकलना जिसको आकाशवाणी कहा जाता है। बाप को भी आकाश द्वारा वाणी चलानी पड़े।
गुह्यता - यह है भक्ति मार्ग में होने वाली आकाशवाणी की सत्यता।

25-11-2014
तुम राजऋषि हो ना। जटायें खुली हों और मुरली चलाओ। साधू-सन्त आदि जो सुनाते हैं वह सब है मनुष्यों की मुरली। यह है बेहद के बाप की मुरली।
गुह्यता - मुरली सुनाते समय बेहद की वैरागी स्थिति होनी चाहिऐ।

26-11-2014
हम उत्थान में थे फिर पतन में आये, अब बीच में हैं। शूद्र भी नहीं हैं, पूरे ब्राह्मण भी नहीं बने हैं। अगर अभी पक्के ब्राह्मण हो तो फिर शूद्रपने की एक्ट न हो। ब्राह्मणों में भी फिर शूद्रपना आ जाता है।
गुह्यता - शूद्रपने के एक्ट करना माना सूतपुत्र बनना। ज्येष्ठ पाण्डव कर्ण ना ही पाण्डव रहा और ना ही शूद्रों की टोली में शामिल हो पाया।

27-11-2014
रावण के थे, राम के बने। फिर रावण, राम के बच्चों पर जीत पहन अपनी तरफ ले जाता है। कोई बीमार हो पड़ते हैं। फिर न वहाँ के रहते, न यहाँ के रहते। न खुशी है, न रंज। बीच में पड़े रहते हैं। बहुत हैं जो बीच में हैं। बाप का भी पूरा नहीं बनते हैं, रावण का भी पूरा नहीं बनते।
गुह्यता - त्रिशंकु बन पड़ते हैं। ना स्वर्ग का, ना नर्क में।

28-11-2014
भक्ति बिल्कुल अलग चीज है, उनमें जरा भी ज्ञान नहीं होता। समय ही सारा बदल जाता है। भगवान का भी नाम बदल जाता है फिर मनुष्यों का भी नाम बदल जाता है। पहले कहा जाता है देवता फिर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।
गुह्यता - भगवान का भी नाम बदल शिव के बदले श्रीकृष्ण हो जाता है।

29-11-2014
जो अच्छी रीति पढ़े-लिखे हैं, बाप का परिचय दे सकते हैं, उनको ही बुलाना है। तुम लिख सकते हो जो आकर रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अन्त का परिचय देवे उनके लिये हम आने-जाने, रहने आदि का सब प्रबन्ध

करेंगे-अगर रचता और रचना का परिचय दिया तो।... भल कोई विलायत से आवे, रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अन्त का परिचय दिया तो हम खर्चा दे देंगे। ऐसी एडवरटाइज और कोई कर न सके।
गुह्यता - ऐसी हिम्मत बाबा के सिवाय कोई कर न सके। इतनी परख भी हो जो किसको जान सकें कि यह परिचय दे सकेंगे वा नहीं।

30-11-2014 - अव्यक्त मुरली

01-12-2014
वहाँ सारी दुनिया में एक धर्म होगा। दुनिया तो सारी होगी ना। ऐसे नहीं, चीन, यूरोप नहीं होंगे, होंगे परन्तु वहाँ मनुष्य नहीं होंगे। सिर्फ देवता धर्म वाले होंगे, और धर्म वाले होते नहीं।
गुह्यता - धरती के खण्ड सब मौजूद रहते हैं। बस उनकी पहचान समाप्त हो जाती है। Well known एक भारत खण्ड ही रहता है। कुछ picnic spot भी काम में आते हैं। बाकी किसी भी स्थान पर कब्जे आदि की कोई बात नहीं।

02-12-2014
तुमको शीतल देवियाँ बनाने के लिये ज्ञान चिता पर बिठाया जाता है। शीतल अक्षर के अगेन्स्ट है तपत। तुम्हारा नाम ही है शीतल देवी। एक तो नहीं होगी ना। जरूर बहुत होंगी जिन्होंने भारत को शीतल बनाया है। इस समय सब काम चिता पर जल रहे हैं। तुम शीतल करने वाली, ठण्डा छींटा डालने वाली देवियाँ हो।... आत्मा पवित्र बनने से शीतल बन जाती है।
गुह्यता - आज कर्मेन्द्रियाँ विकारों की अग्नि में जलकर तप रही हैं। विकारों की आग बुझाये नहीं बुझती। बाबा जब ज्ञान के छींटें डालते अर्थात् हमारे अनादि सो आदि स्वरूप/संस्कारों की स्मृति हमें दिलाते तो हम ज्ञान गंगायें शीतल बन जाती हैं। और विश्व को भी शीतलता के छींटे डाल शान्त व पवित्र बना देती हैं।

03-12-2014
आत्मायें नंगी अर्थात् शरीर बिगर रहती हैं। नंगे का अर्थ यह नहीं कि कपड़े पहनने बिगर रहना। नहीं, शरीर बिगर आत्मायें नंगी (अशरीरी) रहती हैं। बाप कहते हैं- बच्चे, तुम आत्मायें वहाँ मूलवतन में बिगर शरीर रहती हो, उसे निराकारी दुनिया कहा जाता है।
गुह्यता - तन रूपी चोला अथवा कपड़ा त्यागने की बात है। बाकी देवतायें तो सम्पूर्ण वस्त्रों से सदा ही सजे-सजाये रहते हैं।

04-12-2014
बाबा तो छोटे-छोटे बच्चों को भी सन्देशी बना देते हैं। लड़ाई में मैसेज ले जाने वाले भी चाहियें ना।
गुह्यता - बाबा सेवा अर्थ आत्मा की ऊँची अवस्था को देखते हैं। दे हके आधार पर चयन मनुष्य करते हैं। हमें भी बाबा ने सिखाया है, आत्मा की विशेषता को जान उसे सेवा में लगाओ। क्या हम ऐसा करते हैं????

05-12-2014
आदम-बीबी, एडम-ईव भी कहते हैं। क्रिश्चियन लोगों को थोड़े ही पता है कि यह एडम-ईव अब तपस्या कर रहे हैं। मनुष्य सृष्टि के सिजरे के यह हेड हैं। यह राज भी बाप बैठ समझाते हैं।
गुह्यता - बिगर समझ, बिगर पहचान के ही सारी दुनिया परमात्मा को याद करती रहती हैं। हम कुछ आत्माओं का ही ड्रामा में विशेष पार्ट नूँध है। जो No.-1 आत्मा श्रीकृष्ण से लेकर सब बातें हम जान जाते हैं।

06-12-2014
देह-अभिमान से आत्मा की ताकत खत्म होती है। आत्म-अभिमानी बनने से आत्मा में ताकत जमा होती है।
गुह्यता - Very simple बाबा ने पुरुषार्थ कर दिया। देही बनो, ताकतवर बनो।

07-12-2014 - अव्यक्त मुरली

08-12-2014
सूक्ष्मवतन में न सफेद पोशधारी, न सजे सजाये, न नाग-बलाए पहनने वाले शंकर आदि ही होते हैं।... विष्णु के दो रूप भी यहाँ हैं। वह सिर्फ साक्षात्कार का पार्ट ड्रामा में है, जो दिव्य दृष्टि से देखा जाता है। क्रिमिनल आँखों से पवित्र चीज दिखाई न पड़े।
गुह्यता - सूक्ष्मवतन को समझने के लिऐ प्रोजेक्टर स्क्रीन (Projector Screen) को सामने रख विचार करो। बाबा बुद्धि की डोर खींच लेते और दिव्य दृष्टि/नेत्र द्वारा सीन दिखाते। जैसे Laptop में Pre-loaded Program प्रोजेक्टर स्क्रीन (Projector Screen) पर दिखाई पड़ता है।

09-12-2014
मुसलमान लोग कहते हैं- अल्लाह वा खुदा को याद करो। तुम कहेंगे बाप को याद करो। अल्लाह कहने से वर्सा याद नहीं आयेगा। बाबा कहने से वर्सा

याद आ जाता है। मुसलमान लोग बाप नहीं कहते हैं। वह फिर अल्लाह मियां कहते हैं। मियां-बीवी।... यूरोपवासी लोग गॉड फादर कहते हैं। भारत में तो पत्थर-भित्तर... समझते हैं इस पत्थर में भगवान बैठा है।... पत्थर कहाँ से आता है? पहाड़ों के झरनों से गिरते-गिरते गोल चिकना बन जाता है। फिर कैसे नैचुरल निशान भी बन जाते हैं। देवी-देवताओं की मूर्ति ऐसी नहीं होती हैं। पत्थर काट-काट कर कान, मुँह, नाक, आँख आदि-आदि कितना सुन्दर बनाते हैं। खर्चा बहुत करते हैं। शिवबाबा की मूर्ति पर कोई खर्चे आदि की बात नहीं।

गुह्यता - हरेक धर्म की मुख्य आत्माओं ने परमात्मा की महिमा का बखान अपनी-अपनी समझ के अनुसार किया है। हम देवकुल की आत्माओं ने सबसे जास्ती ग्लानि कर परमात्मा को पत्थर-ठिक्कर तक में ठोक दिया। सबकी मूर्तियाँ बनाते रहे और सबको भगवान कहते रहे। अब पत्थर में भगवान भला कहाँ से आया।

10-12-2014

कड़ी-कड़ी भूलें होना भी सम्भव है। महारथियों से भी होती हैं। बातचीत, चाल-चलन आदि सभी प्रसिद्ध हो जाती है।

गुह्यता - भूलों से बचना है तो परमात्मा पिता से सच्चे होकर रहो। कदम-कदम श्रीमत पर अपने कर्मों को चैक करते चलो। आपके बोलने, बात करने, मिलने का व्यवहार सभी नोटिस करते हैं। इसकी बड़ी सम्भाल करनी पड़े।

11-12-2014

पहली क्रियेशन यह लक्ष्मी-नारायण हैं, तो शिव के बाद इनकी पूजा जास्ती होगी। मातायें जो ज्ञान देती हैं उनकी पूजा नहीं।... हमको जो ऐसा बनाते हैं उनकी पूजा होगी फिर हमारी भी पूजा नम्बरवार होगी। फिर गिरते-गिरते 5 तत्वों की भी पूजा करने लग पड़ते हैं। 5 तत्वों की पूजा माना पतित शरीर की पूजा।

गुह्यता - पाण्डवों का पाण्डवपति के साथ का गायन है और देवियों की कर्त्तव्यों के आधार पर उनकी महिमा है। नम्बरवार सभी पूज्य बनते हैं। सब कुछ ड्रामा में नूँध है।

12-12-2014

लोभ किया, रिश्वत खाई।... बाबा जानते हैं लोभ के सिवाय पेट पूजा नहीं होगी, हर्जा नहीं। भल खाओ परन्तु कहाँ फँस नहीं मरना, फिर तुमको ही दुःख होगा। पैसा मिलेगा खुश हो जायेंगे, कहाँ पुलिस ने पकड़ लिया तो

जेल में जाना पड़ेगा। ऐसा काम नहीं करो, उसका फिर रेसपॉन्सिबुल मैं नहीं हूँ। पाप करते हैं तो जेल में जाते हैं।
गुह्यता - जो, और जैसा कर्म करेंगे उसी प्रमाण कर्मफल साथ-साथ चलेगा। फंस पड़े तो स्वयं ही भोगकर चुक्तु करना पड़ेगा। इसलिऐ बड़ी सम्भाल रहे।

13-12-2014
रावण का कोई घर नहीं होता, घर राम का होता है। शिवबाबा कहाँ रहते हैं?.. रावण कहाँ रहते हैं? पता नहीं।... उनका जैसेकि ठिकाना ही नहीं। भटकता रहता है, तुमको भी भटकाता है।
गुह्यता - जिसका खुद का कोई ठिकाना नहीं वो भला दूसरे को क्या आसरा देगा। उल्टा जो है वो भी छीन लेगा या छुड़ा देगा। बाबा तो अपने घर की ठौर देते हैं।

14-12-2014 - अव्यक्त मुरली

15-12-2014
यहाँ तुम्हारे पेपर्स की कौन जाँच करेगा? तुम खुद ही करेंगे। खुद जो चाहिए सो बनो। पढ़कर जो पद बाप से चाहो वह ले लो।
गुह्यता - खुद ही एक्ट करेंगे फिर स्वयं ही स्वयं की जाँच कर, स्वयं को मार्क्स देंगे। जैसा पुरूषार्थ किया होगा, स्व की कमियों को स्वीकार कर स्वयं ही अपना पद निश्चित करेंगे कि हम किस लायक हैं। आपकी एक्ट के आधार पर अन्य आत्मायें आपको ज़ज करेंगी और आप मान-सम्मान के अधिकारी बनेंगे। निन्दा-स्तुति, यश-अपयश के पात्र आप अपनी एक्ट अनुसार बनेंगे। अब जो चाहे सो बनो।

16-12-2014
परहेज भी सारी यहाँ ही करनी है। सतोप्रधान बनते हैं तो सभी सात्विक होने चाहिए-चलन सात्विक, बोलना सात्विक। यह है अपने साथ बातें करना। साथी से प्यार से बोलना है।
गुह्यता - आत्मा को पूर्ण वैष्णव अर्थात् सात्विक यहाँ ही बनना है।

17-12-2014
नाम-रूप से न्यारा कहना- अज्ञान... बाप को जानना, इसे ज्ञान कहा जाता है।
गुह्यता - ज्ञान है ही बाप का परिचय। रावण के पास ब्रह्म महतत्व तक की नॉलेज थी लेकिन ब्रह्म महतत्व में परमात्मा अपने ओरिजनल बिन्दु स्वरूप में रहते हैं यह ज्ञान उसके पास नहीं था। बिन्दु का ज्ञान ही सत्य ज्ञान है।

18-12-2014
जब देवतायें थे तो क्षत्रिय नहीं, जब क्षत्रिय थे तो वैश्य नहीं, जब वैश्य थे तो शूद्र नहीं। यह सब समझने की बातें हैं।
गुह्यता - आत्मा अपने उच्चतम लेवल से नीचे डीग्रेड होती जाती है। देवतायें सबसे उच्च थे फिर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। उच्च दर्जे की आत्मायें जब अपना पार्ट शुरू करती हैं तो निचले दर्जे वाली आत्मायें वहाँ नहीं होती। जब 16 कला वाले देवतायें 14 कला में आ जाते हैं तो फिर 14 कलाधारी चन्द्रवंशी क्षत्रिय नीचे उतरते हैं और अपना पार्ट शुरू करते हैं। और 16 कला वाली सूर्यवंशी आत्मायें उनके साथ मिलकर पार्ट बजाती है। इसी तरह आत्मायें डीग्रेड होते-होते जीरो कला तक आ जाती हैं और सूर्यवंशी देवता कुल से गिरकर शूद्रवंश में आ जाती हैं। उच्च कला वाली आत्माओं के साथ नीचे वाले हो न सकें। लॉ ही नही है। समान दर्जे वाले ही एक साथ पार्ट प्ले करते हैं।

19-12-2014
छोटे अथवा बड़े शरीर के ऊपर नहीं हैं। ज्ञान और योग में जो मस्त हैं, वह बड़े हैं। कई छोटे-छोटे बच्चे भी ज्ञान-योग में तीखे हैं तो बड़ों को पढ़ाते हैं।
गुह्यता - आत्मा की अवस्था पर सारा मदार है। ऊँच अवस्था वाले माना उच्च दर्जे की आत्मा। इसमें ठगी चल ना सके। जो करेगा सो छिपा रह न सके।

20-12-2014
बाप कहते हैं मैं कितना समय बैठा रहूँगा, मुझे कोई यहाँ मजा आता है क्या? मैं तो न सुखी, न दुःखी होता हूँ। मेरे ऊपर ड्यूटी है पावन बनाने की। तुम यह थे, अब यह बन गये हो, फिर तुमको ऐसा ऊँच बनाता हूँ।
गुह्यता - कुछ भी for granted नहीं होता। बाबा को भी ऐसे नहीं समझना चाहिऐ। अचानक ही पार्ट पूरा हो जायेगा और बाबा चले जायेंगे। कोई कुछ कर न सके। बाबा कोई किसके बन्धन में थोड़े ही है।

21-12-2014 - अव्यक्त मुरली

22-12-2014
मनुष्यों की घड़ी में फर्क पड़ सकता है। शिवबाबा के अवतरण में तो बिल्कुल फर्क नहीं पड़ सकता। पता ही नहीं पड़ता कि कब आया? ऐसे भी नहीं, साक्षात्कार हुआ तब आया। नहीं, अन्दाज लगा सकते हैं।
गुह्यता - बेहद की घड़ी एकदम एक्यूरेट है। सेकण्ड का भी फर्क हो न सके।

23-12-2014
ज्ञान की धारणा वालों की चलन देवताई होती है। कम धारणा वालों की चलन मिक्स होती है। आसुरी चलन तो नहीं कहेंगे।
गुह्यता - मिक्स चलन वाली आत्मा यज्ञ का भी नाम बदनाम करती तो बाप की ग्लानि कराने के भी निमित्त बन जाती। वास्तव में हमारी चलन दुनिया से एकदम न्यारी हो जानी चाहिये।

24-12-2014
प्रदर्शनी आदि में फीमेल्स के लिऐ खास दिन रखो तो बहुत आयेंगी। पर्देनशीन भी आयेंगी। बहुऐं पर्देनशीन रहती हैं। मोटर में भी पर्दा रहता है। यहाँ तो आत्मा की बात है। ज्ञान मिल गया तो पर्दा भी खुल जायेगा।
गुह्यता - खास माताओं की सेवा प्रति बापदादा के डायरेक्शन- बाबा कितना सूक्ष्म रीति से सब बच्चों पर ध्यान देते हैं। कहाँ-कहाँ बच्चे सन्देश से वंचित रह जाते होंगे। उनको भी सन्देश देने की युक्ति तो रचनी पड़े।

25-12-2014
अन्दर में दुविधा जो रहती है, वह नहीं रहनी चाहिये।... यह ऐसा है, फलाना ऐसा है..... जो इन बातों में लग जाते हैं वह ऊँच पद पा नहीं सकेंगे। ऐसे ही रह जाते हैं।.... सारा दिन और बातों के बदले यही सुनाते रहो। फलाना ऐसा है, यह है... किसकी निंदा करना-इसको दुविधा कहा जाता है। तुमको अपनी दैवी बुद्धि बनाना है। किसको दुःख देना, ग्लानि करना, चंचलता करना - यह स्वभाव नहीं होना चाहिये। इसमें तो आधाकल्प रहे हो।
गुह्यता - कोई कैसा भी हो! मुझे क्या करना है! मुझे कैसा बनना है! मेरी क्या जिम्मेवारियाँ हैं? मेरा पुरूषार्थ, मेरा कर्म कैसा होना चाहिये! इन बातों में रमण करते रहें तो फलाने-फलाने से बुद्धि हट जायेगी।

26-12-2014
जो पुरूषार्थ नहीं करते हैं उनको भी वर्सा मिलेगा, ब्रह्माण्ड के मालिक तो सब बनेंगे। सब आत्मायें निर्वाणधाम में आयेंगी ड्रामानुसार। भल कुछ भी न करें।
गुह्यता - बाप को पहचाना अथवा नहीं पहचाना। इससे आत्मा की वैल्यू का पता पड़ता है। ऐसे तो हरेक धर्म की आत्मा अपने धर्म अनुसार valuable है ही किन्तु परमात्मा पिता के साथ डायरेक्ट पार्ट बजाने वाली आत्माओं से ज्यादा सौभाग्यशाली कोई हो न सके। नये सिरे से पार्ट शुरू करने पर आत्मा का भाग्य तो उच्च कोटि का होता ही है परन्तु परमात्म सुख से आत्मा वंचित रह जाती है। परमात्मा के साथ से अच्छा व रमणीक अनुभव के आगे सारे कल्प की दौलत भी तुच्छ है।

27-12-2014
बाबा की तो सारी गीता पढ़ी हुई है। जब यह ज्ञान मिला तो विचार चला कि गीता में यह लड़ाई आदि की बातें क्या लिखी हैं? कृष्ण तो गीता का भगवान नहीं है। इनके अन्दर बाप बैठा था तो इन द्वारा उस गीता को भी छुड़वा दिया।
गुह्यता - सच्ची गीता सुनाने वाले ने जब प्रवेश किया तो मनुष्यों द्वारा रचित गीता स्वतः ही झूठी लगने लगी। और झूठी चीज से ममत्व स्वतः ही समाप्त हो जाना चाहिए। अल्फ को अल्लाह मिला... बाकी क्या रहा! सब छोड़ दिया।

28-12-2014 - अव्यक्त मुरली

29-12-2014
मेरे मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चे जो सपूत हैं, ज्ञान धारण कर पवित्र रहते हैं, सच्चे योगी और ज्ञानी रहते हैं, वह मुझे प्यारे लगते हैं।
गुह्यता - मनुष्यों के प्यारे तो बहुत बन लिये। बाप के प्यारे बनो तब कहेंगे कमाल। जिसे भगवान ने पसन्द कर लिया उसे और कोई क्या प्यारा लगेगा! ये भगवान से प्यार निभाने की सुहानी वेला है।

30-12-2014
राम की सीता को चुरा ले जावे तो बड़ा डाकू हुआ ना। कभी चोरी की? त्रेता में कहें वा त्रेता के अन्त में। इन बातों पर भी विचार किया जाता है। कभी चोरी होनी चाहिऐ! कौन से राम की सीता चोरी हुई? राम-सीता की भी राजधानी चली है क्या? एक ही राम-सीता चले आये हैं क्या?... 12 नम्बर होते हैं ना राम-सीता। तो कौन-सी सीता को चुराया? जरूर पिछाड़ी का होगा।... अब राम के राज्य में सारा समय एक का ही राज्य तो नहीं होगा। जरूर डिनायस्टी होगी। तो कौन से नम्बर की सीता चुराई? यह सब बहुत समझने की बातें हैं। तुम बच्चे बड़ी शीतलता से किसी को भी यह सब राज समझा सकते हो।
गुह्यता - गहराई से चिन्तन किया जाये तो राम की डिनायस्टी 12 पीढ़ी की है। तो कौन-सी पीढ़ी की सीता चोरी हुई भला? अगर त्रेता आरम्भ की सीता की बात करें तो त्रेता के शुरू में तो चोरी हो न सके। और त्रेता अन्त में तो राम-सीता की वंशावली हो गई। वही फीचर्स वाली सीता तो हो न सके। तो फिर कौन-सी सीता चोरी हुई? वास्तव में हम सब आत्मायें भक्तियाँ अथवा सीतायें हैं जो विकारों में गिरकर रावण की जेल में बन्दिनी बन गई थीं। जिसे संगम पर आकर राम ने बन्धनमुक्त करके अपना बनाया। और योग अग्नि द्वारा परीक्षाओं रूपी विष सागर से पार कराकर संग ले गये।

31-12-2014
तुम्हारा हद के संसार की किचड़पट्टी की बातों में टाइम बहुत वेस्ट होता है। तुम स्टूडेण्ट के अन्दर किचड़पट्टी के ख्यालात नहीं होने चाहियें।
गुह्यता - 63 जन्मों की बातें अब बिल्कुल नहीं करनी चाहियें लेकिन कमल कीचड़ से बाहर निकलना ही नहीं चाहता। किचड़े से ऊपर उठे तो खिलकर रूहानियत फैलाये और सर्व को आकर्षित करे।

31-12-2014
सिर्फ बातों का पकौड़ा नहीं खाना है। जो कहते हो वह करना है। गपोड़े नहीं कि यह करेंगे, यह करेंगे।
गुह्यता - ''करना ही है'' यही स्लोगन बाबा की आशाओं को पूरा कर सकता है। दृढ़ता को डबल अण्डरलाइन करो तब कुछ बात बने।